शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

राज्यभर की खबरों के लिए स्कैन करें

रांची एवं पटना से प्रकाशित | रांची ● मंगलवार, 28 नवंबर 2023 ● मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रतिपदा, संवत 2080 ● पृष्ठ : 16, मूल्य : ₹ ~~5~~ ● वर्ष : 1, अंक : 220 | आमंत्रण मूल्य : ₹ 5 मात्र

www.lagatar.in

मौसम

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
धनबाद	27.0	19.7
जमशेदपुर	28.8	15.2
डालटनगंज	26.8	12.8

तापमान डिग्री सेल्सियस में.

* * * *

इंटरनेशनल

सुर्खियां

- पाक में आत्मघाती हमले में दो की मौत, 10 घायल
- अमेरिका में भारत के राजदूत के साथ की धक्का-मुक्की
- भारतीय लहजे का मजाक बनाने पर पुलिसकर्मी नपा
- 'ऑथेंटिक' बना चुनाव का सबसे लोकप्रिय शब्द

नेशनल

- भाजपा तेलंगाना को बीआरएस के चंगुल से छुड़ाएगी : मोदी
- एचडीएफसी ने हर्ष भानवाला को निदेशक बनाया
- एएफएमसी पुणे को 'राष्ट्रपति का निशान' सम्मान मिलेगा
- एमपी में वज्रपात से दंपती सहित चार की मौत

स्टेट

- वेदांता इलेक्ट्रो स्टील में रैयत-पुलिस में झड़प
- दिखावे पर चल रही है हेमंत सरकार : सुदेश
- आदिवासी को ही ठग रहे हेमंत : बाबूलाल मरांडी
- कार्तिक पूर्णिमा पर नदियों में स्नान करने उमड़े भक्त

स्पोर्ट्स

- श्रीलंका के खेल मंत्री को राष्ट्रपति ने किया बर्खास्त
- छह टीमों की टेनिस बॉल टी10 क्रिकेट लीग मार्च में
- राष्ट्रीय हॉकी : पंजाब फाइनल में, मुकाबला हरियाणा से
- विजय हजारे ट्रॉफी : त्रिपुरा ने सौराष्ट्र को हराया

किसने क्या कहा

- सत्ता में आए तो हैदराबाद का नाम बदलकर भाग्यनगर करेंगे : **जी किशन रेड्डी**
- हिमाचल को मार्च 2026 तक हरित ऊर्जा राज्य बनाने का लक्ष्य : **सुखविंदर सिंह सुक्खू**
- तेलंगाना में बहुमत हासिल करेंगे, खंडित जनादेश का सवाल नहीं : **डीके शिवकुमार**

सर्राफा

सोना (बिक्री)	58,400
चांदी (किलो)	78,000

ब्रीफ खबरें

फंसे श्रमिकों को बचाने के लिए अब हाथ से खुदाई

नई दिल्ली। उत्तरकाशी में सिलक्यारा सुरंग में फंसे 41 श्रमिकों को बचाने के लिए ऊपर से नीचे की ओर जारी 'ड्रिलिंग' के अलावा अब हाथ से क्षैतिज खुदाई जल्द शुरू की जाएगी. इसकी कमान सेना के जवानों ने संभाल ली है. राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने सोमवार को यह जानकारी दी.

धार्मिक स्थलों से 3238 लाउडस्पीकर उतारे गए

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार के निर्देश पर अवैध लाउडस्पीकर/ध्वनि विस्तारक यंत्रों के विरुद्ध चलाये गये राज्यव्यापी अभियान के तहत सोमवार को तेज आवाज वाले 3238 लाउडस्पीकर/ध्वनि विस्तारक यंत्रों को सार्वजनिक/धार्मिक स्थलों से उतारा गया. पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी.

कमजोरों को भी न्याय मिले : चीफ जस्टिस

नई दिल्ली। प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा कि न्याय तक पहुंच केवल जन-समर्थक न्यायशास्त्र तैयार करके हासिल नहीं की जा सकती, बल्कि बुनियादी ढांचे में सुधार और कानूनी सहायता सेवाओं को बढ़ाने जैसे अदालत के प्रशासनिक पक्ष में भी सक्रिय प्रगति की आवश्यकता है. न्याय कमजोर लोगों को भी मिलना चाहिए.

संसद नए कानून बना रही है : धनखड़

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने सोमवार को कहा कि कानूनी सहायता से इनकार करने से कमजोर लोगों के लिए अस्तित्व संबंधी चुनौती पैदा होती है, लेकिन सकारात्मक पहल और नीतियां कमजोर वर्गों के सामने आने वाली ऐसी समस्याओं को दूर करने में मदद कर सकती हैं. संसद नये कानून बना रही है.

मलेशिया देगा भारतीयों को वीजा-मुक्त प्रवेश

कुआलालंपुर। मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम ने एक दिसंबर से भारतीय एवं चीनी नागरिकों को 30 दिन का वीजा मुक्त प्रवेश दिए जाने की घोषणा की है.

शुभमन गिल गुजरात टाइटंस के कप्तान

नई दिल्ली। गुजरात टाइटंस ने मुंबई इंडियंस के पास वापस लौटने के हार्दिक पंड्या के फैसले के बाद आईपीएल के 2024 सत्र के लिए सोमवार को शुभमन गिल को कप्तान नियुक्त किया है.

अब महंगा सोना बिगाड़ेगा आप का मूड

नई दिल्ली। एक तो देश में शादियों का सीजन उसपर से सोने के दामों में तेज उछाल. सोमवार को बाजार बंद रहा. लेकिन मंगलवार को इंटरनेशनल मार्केट में सोने के भाव में आई तेजी का असर बाजारों पर देखने को मिलेगी. 24 को सोने का भाव 61,440 प्रति 10 ग्राम रहा था.

पिता शिबू संग पैतृक गांव नेमरा पहुंचे हेमंत सोरेन, कहा

अब तीर-धनुष नहीं बुद्धि से लड़ाई

25.64 करोड़ रु. की दी सौगात

कौशल आनंद। रांची

अपने पिता और पूर्व सीएम शिबू सोरेन संग मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन अपने पैतृक गांव रामगढ़ के नेमरा पहुंचे. दोनों ने शहीद सोबरन मांझी के शहादत दिवस पर उन्हें नमन किया. मौके पर सीएम सोरेन ने 25.64 लाख रुपये की 34 योजनाओं की सौगात दी. लाभुकों के बीच परिसंपत्ति का वितरण किया. मौके पर उन्होंने कहा कि हमारी सरकार संवेदनशील और आम जन की सरकार है.

हेमंत ने कहा- सरकार में योजनाएं एयर कंडीशन कमरे में नहीं बनती हैं. हम राज्य के हालात और जनता की जरूरतों को ध्यान में रख कर नीतियां बनाते हैं. योजनाएं हकीकत में धरातल पर उतरें, यह हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है. मुख्यमंत्री ने कहा कि एक लंबे संघर्ष के बाद हमें झारखंड राज्य मिला. इसके लिए न जाने कितने लोगों ने अपनी शहादत दी. हमारी सरकार इनकी शहादत को बेकार नहीं जाने देगी. आज सरकार की नज़रें और योजनाएं जंगलों, पहाड़ों, तलहटी और दुरूह-दुर्गम इलाकों में रहने वाले लोगों तक पहुंच रही हैं. हम अपने शहीदों के सपनों का झारखंड बना रहे हैं.

उन्होंने कहा कि आज झारखंड में बदलाव देखने को मिल रहा है. दूरस्थ इलाकों में भी वृहत पैमाने पर सड़कें, पुल-पुलिया बन रही हैं. गांव- गांव में बिजली- पानी जैसी आधारभूत सुविधाएं पहुंच रही है. हम विकास की राह पर तेजी से आगे बढ़ रहे हैं. उन्होंने अफसरों को चेतावनी देते हुए कहा कि वह ख्याल रखें कि कोई भी योजनाओं से वंचित न रहे. जनता का भी फर्ज बनता है कि वह सरकार आपके द्वार शिविर में पहुंच कर योजनाओं का फायदा उठाए.

- **हमारी सरकार योजनाएं एयर कंडीशन में बैठकर नहीं बनाती, सब काम धरातल पर**
- **जब तक मैं सीएम रहूंगा तब तक लुगुबुरू पहाड़ पर डीवीसी का प्लांट नहीं लगेगा**

लुगुबुरू को संरक्षित करने का काम होगा

कार्तिक पूर्णिमा के मौके पर सीएम हेमंत सोरेन बोकारो गोमिया में लुगुबुरू घंटाबाड़ी धोरोमगाढ़ में आयोजित 23वें अंतरराष्ट्रीय सरना धर्म महासम्मेलन में शामिल हुए. अपनी पत्नी कल्पना सोरेन संग लुगुबुरू पहाड़ स्थित पुनाय थान में बोंगा बुरू की पूजा -अर्चना कर राज्य की खुशहाली की कामना की. उन्होंने इस मौके पर गुबुरू में चाई चंपा पार्क में लुगु बाबा और लुगु आयो की प्रतिमा का अनावरण किया. सीएम ने कहा कि हर समाज के लिए शिक्षा जरूरी है. पहले तीर -धनुष से लड़ाई लड़ी जाती थी. अब बुद्धि से लड़ाई होती है. इसलिए शिक्षा का महत्व है. सीएम सोरेन ने फिर ऐलान किया कि उनके सीएम रहते हुए आदिवासी संथालियों की धार्मिक धरोहर लुगु पहाड़ पर डीवीसी का हाइडल पंप स्टोरेज प्लांट नहीं लगेगा. हर हाल में आदिवासी समुदाय की आस्था और विश्वास का धार्मिक धरोहर लुगू पहाड़ को संरक्षित करने का काम होगा. लुगुबुरु आदिकाल से ही पूर्वजों द्वारा संचालित होता आ रहा है. समय के हिसाब से जिस प्रकार समाज जागरूक हो रहा है, उसी तरह आदिवासी सरना धर्म को भी आगे बढ़ना चाहिए. इस मौके पर मंत्री चंपाई सोरेन, बेबी देवी, पूर्व विधायक योगेंद्र महतो, लुगुबुरु घंटाबाड़ी के अध्यक्ष श्री बबुली सोरेन सहित कई उपस्थित थे.

मुख्यमंत्री आज लोहरदगा में करेंगे परिसंपतियों का वितरण

रांची। आपकी योजना, आपकी सरकार योजना कार्यक्रम के तहत मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन मंगलवार को लोहरदगा जाएंगे. सोरेन कुडू, चिरी मैदान में सभा को संबोधित करेंगे. वे करोड़ों की परिसंपतियों का वितरण और शिलान्यास करेंगे. लोहरदगा जिला प्रशासन से मिली जानकारी के अनुसार सीएम हेमंत के कार्यक्रम को लेकर अधिकारियों की ओर से तैयारी पूरी कर ली गयी है. डीसी डॉ बाघमारे प्रसाद कृष्ण, एसपी हारिस बिन जमां, एसडीओ अमित कुमार, डीएसपी परमेश्वर प्रसाद और डीटीओ सौरभ प्रसाद ने कार्यक्रम स्थल का दौरा किया. अधिकारियों के दल ने यहां सुरक्षा और कार्यक्रम में आने वाले लोगों के लिए बैठने की व्यवस्था आदि का जायजा लिया.सीएम हेमंत चिरी मैदान में 100 करोड़ की परिसंपतियों का वितरण और योजना के तहत लोगों को ऋण के चेक प्रदान करेंगे.

सजा गुरु का दीवान, सब मिल कर बोले-वाहे गुरु

श्रद्धा में झुके शीश: राजधानी रांची में सोमवार को गुरुनानक जयंती पर दीवान सजे, गुरवाणी का पाठ हुआ. आम से लेकर खास लोगों ने गुरुग्रंथ साहिब के सामने शीश झुकाया. **-फोटो: सैयद रमीज जावेद**

सड़क दुर्घटना में दो की मौत, एक गंभीर

बुढ़मू (रांची)। तेज रफ्तार ने दो नौजवानों की जान ले ली. वहीं एक जिंदगी से जंग लड़ रहा. मृतकों की पहचान बुढ़मू के नवदा निवासी करमा गंझू व छोटू गंझू के रूप में हुई है. वहीं घायल विक्रम गंझू भी नवदा का ही है. दुर्घटना के बाद गंभीर रूप से घायल विक्रम को बुढ़मू सीएचसी ले जाया गया, जहां से प्राथमिक उपचार कर उसे रिम्स रेफर कर दिया गया. तीनों एक बाइक से मेले से लौट रहे थे. इसी दौरान किसी बड़े वाहन ने तीनों को अपनी चपेट में ले लिया. जिससे मौक़े पर ही करमा गंझू और छोटू गंझू ने दम तोड़ दिया. मौके पर पहुंची पुलिस ने दोनों के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेज दिया. जैसे ही मौत की सूचना परिजनों को मिली, घर में कोहराम मच गया. परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है. परिजनों का कहना है कि इस रूट में वाहनों की तेज रफ्तार मौत का कारण बनते जा रहा है. जिसपर अंकुश जरूरी है. दुर्घटना की सूचना मिलते ही मौक़े पर मौजूद लोग फोटो-वीडियो बनाने में व्यस्त हो गये. मगर उसी दौरान मौक़े पर मौजूद आजसू नेता रामजीत गंझू ने पहले घायल को अस्पताल पहुंचाया.

- अपनों की मौत से घर वालों का रो-रो कर हुआ बुरा हाल

अब राहुल गांधी यूपी की कोर्ट में हाजिर हों

लखनऊ। यूपी के सुल्तानपुर की एमपी एमएलए कोर्ट ने लोकसभा चुनाव से पहले कांग्रेस सांसद राहुल गांधी की मुश्किलें बढ़ा दी हैं. दरअसल 5 साल पुराने मामले में कांग्रेस नेता राहुल गांधी को तलब किया गया है. तकरीबन 5 साल पहले कर्नाटक चुनाव के दौरान गृहमंत्री अमित शाह पर राहुल गांधी ने अभद्र टिप्पणी की थी. जिसे लेकर लंबे समय से कोर्ट में सुनवाई चल रही थी. फिलहाल अब राहुल गांधी को सुल्तानपुर की एमपी एमएलए कोर्ट ने तलब कर लिया है. दरअसल 5 साल पहले कर्नाटक चुनाव के दौरान अपनी चुनावी रैली के दौरान राहुल गांधी ने गृहमंत्री अमित शाह पर अभद्र टिप्पणी की थी. जिसे पर भाजपा नेता विजय मिश्रा ने नाराजगी जताते हुए कोर्ट में केस दर्ज करवाया था. इस मामले बीते 18 नवंबर को सुल्तानपुर की एमपी एमएलए कोर्ट में चली तलबी बहस के दौरान इसका फैसला कोर्ट ने सुरक्षित कर लिया था. फिलहाल सुल्तानपुर की एमपी एमएलए कोर्ट में जज योगेश यादव ने 16 दिसंबर को राहुल गांधी को तलब कर लिया है. फिलहाल साल 2018 में मानहानि के वाद में याचिका दायर की गई थी.

- कर्नाटक चुनाव के दौरान की थी शाह पर टिप्पणी

झारखंड के नियोजनालयों में 4.25 लाख युवाओं ने कराया निबंधन

नौकरी मिली सिर्फ 21,050 को

रवि भारती। रांची

झारखंड में बेरोजगार युवाओं की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है. साल दर साल इनकी संख्या में वृद्धि हो रही है. पिछले तीन साल के दौरान झारखंड के विभिन्न नियोजनालयों में 4.25 लाख युवाओं ने रजिस्ट्रेशन कराया है. खास बात यह है कि इसमें अधिकांश युवा जेनरल एजुकेशन की डिग्री हासिल की है. किसी भी तरह की तकनीकी शिक्षा प्राप्त नहीं की है.

4.25 लाख निबंधित युवाओं में से अब तक सिर्फ 21050 लोगों भर्ती कैंप और रोजगार मेला के माध्यम से निजी प्रतिष्ठानों में नौकरी मिल पाई है. वहीं सरकारी विभागों में भी 62 फीसदी पद खाली पड़े हैं हालांकि झारखंड राज्य कर्मचारी चयन आयोग, जेपीएससी के माध्यम से कई प्रतियोगिता परीक्षाओं का आयोजन किया जा रहा है.

किस साल कितने को मिला रोजगार

वित्तीय वर्ष	कितने को रोजगार
2019-20	13667
2020-21	2504
2021-22	2119
2022-23	2760

विभागों में दरकार है 2.87 लाख कर्मियों की

सरकारी विभागों में भी कर्मचारियों की भारी कमी है. वर्तमान में राज्य के सरकारी विभागों में 4.66 लाख नियमित पद स्वीकृत हैं. इसके विरुद्ध 1.79 लाख कर्मचारी ही कार्यरत हैं. 2.87 लाख पद खाली पड़े हुए हैं.

शहरों में सबसे अधिक महिलाएं बेरोजगार

सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी के अनुसार झारखंड के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की बेरोजगारी अधिक है. ग्रामीण महिलाओं की बेरोजगारी दर जहां सबसे कम 5.1 फीसदी है, वहीं शहरी महिलाओं की बेरोजगारी दर 11.5 फीसदी है. यह दोगुना से भी अधिक है. वहीं पूरे झारखंड में बेरोजगारी दर 7.87 फीसदी है.

एसीबी ने 5 पूर्व मंत्रियों के शिकायतकर्ता पंकज यादव को बुलाया

रांची। रघुवर कैबिनेट के पांच पूर्व मंत्रियों की आय से अधिक संपत्ति की जांच कर रही एसीबी ने सक्रियता बढ़ा दी है. एसीबी ने पत्र भेज कर शिकायतकर्ता पंकज कुमार यादव को गवाही के लिए बुलाया है.पंकज यादव को भेजे गए पत्र में पूर्व मंत्री नीलकंठ सिंह मुंडा की आय से अधिक संपत्ति मामले में बयान दर्ज करने को बुलाया है. पंकज यादव को एक सप्ताह के भीतर एसीबी कार्यालय में उपस्थित होकर गवाही दर्ज करानी है. उल्लेखनीय है कि रघुवर कैबिनेट के पांच मंत्रियों के खिलाफ पंकज यादव ने झारखंड हाईकोर्ट में जनहित याचिका दायर की थी और एसीबी में भी शिकायत दर्ज कराई थी. जिसके आलोक में एसीबी ने पीई दर्ज कर जांच शुरू कर दी है. गौरतलब है कि पांच सालों में 200 प्रतिशत से 1200 प्रतिशत तक पूर्व मंत्रियों की संपत्ति में वृद्धि हुई है.

संथाल में पोस्टेड पुलिस अफसर ने खूब की कमाई, खरीदे होटल

- साहिबगंज में अवैध खनन मामले की दो दिन तक जांच कर लौटी सीबीआई टीम

सौरभ सिंह। रांची

साहिबगंज जिले के नींबू पहाड़ इलाके में अवैध खनन मामले की जांच के लिए सीबीआई टीम पहुंची थी. दो दिन (शुक्रवार-शनिवार) तक केंद्रीय जांच एजेंसी ने जांच कर काफी जानकारियां हासिल कीं और दस्तावेज भी जुटाए हैं. इस दौरान जांच एजेंसी ने संथालपरगना में पोस्टेड दो पुलिस अधिकारियों के खिलाफ मिली शिकायतों की भी जांच की. जांच के क्रम में यह बात सामने आयी कि अवैध पत्थर खनन से होनेवाली कमाई का एक हिस्सा राजनीतिक पार्टियों और उसके नेताओं को भी दिया जाता है. **-शेष पेज 10 पर**

रिश्तेदार को विस्फोटक सप्लाई के धंधे में लगाया

सीबीआई को जानकारी मिली कि उक्त अधिकारी साहिबगंज से सटे भागलपुर के ही निवासी हैं, इसलिए भागलपुर और बंगाल में बड़ी रकम निवेश की है. दूसरे पुलिस अधिकारी मुख्यालय में शंटिंग में हैं, उन्होंने साहिबगंज में पोस्टिंग के दौरान नेताओं के लिए अवैध वसूली की. जांच में पता चला कि अवैध खनन में जेल में बंद भागलपुर के एक नेता के करीबी हैं. इन्होंने नेताओं के लिए तो वसूली की ही, खुद भी उगाही की व जमीन में इन्वेस्ट किया. अपने एक रिश्तेदार को पत्थर तोड़ने के काम आनेवाले विस्फोटक सप्लाई के धंधे में लगा कर मोटी कमाई की. विस्फोटक के कारोबार को कोई लेखा-जोखा उस कारोबारी के पास नहीं है. पुलिस अधिकारी के परिवार का सदस्य होने के कारण दूसरे विभाग के अधिकारी ने भी उसे खुली छूट दे रखी है.

15 पन्नों के दस्तावेज और 5 फाइल लेकर लौटी टीम

अवैध खनन घोटाला और मनी लॉन्ड्रिंग मामले की जांच कर रही ईडी के गवाह विजय हांसदा के केस (6/22) में जानकारी हासिल कर सीबीआई की टीम वापस रांची लौट आई. सूत्रों की मानें तो सीबीआई 15 पन्नों का दस्तावेज और पांच फाइलों की महत्वपूर्ण जानकारी विभाग को सौंपेगी. सूत्रों की मानें तो मामले की जांच करने सीबीआई की टीम दिसंबर माह के पहले सप्ताह में फिर से साहिबगंज जा सकती है. क्योंकि विजय हांसदा केस की चार्टशीट दाखिल हो गई है, गवाह न मिलने के कारण पुलिस ने केस को फॉल्स साबित कर दिया है. इस मामले के अनुसंधान के लिए ही सीबीआई टीम साहिबगंज पहुंची थी.

सूरते हाल मेगा जलापूर्ति योजना वर्ष 2016 में शुरू हुई थी, 2019 में पूरी होनी थी, पर हो न सकी

टेंडर के पेंच में उलझी 941 करोड़ की जलापूर्ति योजना

मिथिलेश कुमार। धनबाद

941 करोड़ की निरसा-गोविंदपुर मेगा जलापूर्ति योजना टेंडर के पेंच में उलझ गई है. एक साल बाद भी पेयजल एवं स्वच्छता विभाग नई कंपनी का चयन नहीं कर सका है. नवंबर भी अब बीत रहा है, अधिकारी अब दिसंबर का इंतजार कर रहे. 50 प्रतिशत से अधिक अधूरे पड़े काम धूल फांक रहे हैं. 475 गांव को पाइपलाइन से पानी पहुंचाने का यह कार्य 5 साल पीछे जा चुका है.

अधिकारियों का कहना है कि फरवरी में टेंडर निकाला था, कायदे से मई में सबकुछ फाइनल हो जाना था, लेकिन अभी तक टेंडर फाइनल क्यों नहीं हुआ, इस पर तो रांची मुख्यालय ही कुछ बता सकता है. टेंडर का काम धनबाद से नहीं होता. मुख्यालय चयन कर जिस कंपनी को भेजता है, हम उसी से काम लेते हैं. हमारा काम मॉनिटरिंग करना है. ऐसे 15 दिसंबर तक फाइनल होने की उम्मीद है. बता दें कि योजना 2016 में शुरू हुई थी, इसे 2019 में पूरी करना था. पीएचईडी ने इजराइल की टहल कंपनी को काम को दिया गया था. एनओसी के पेंच, लोगों के विरोध, छुटभैया नेताओं का दखल और कंपनी की लापरवाही से काम रुकता रहा. वर्ष 2022 तक 50% से कम काम हुआ. अंततः तत्कालीन डीसी संदीप सिंह के आदेश पर कंपनी को हटा दिया गया. पहले जलापूर्ति योजना 667 करोड़ की थी, लेट होने के साथ इसकी राशि में 274 करोड़ की वृद्धि करनी पड़ी. योजना का खर्च बढ़ कर 941 करोड़ पहुंच गया है. इसमें से पीएचईडी ने पूर्व की कंपनी को 150 करोड़ का भुगतान किया है. इसके बाद 791 करोड़ का टेंडर भी निकाला है. डीएमएफटी की राशि से योजना संचालित है. वहीं काम से हटाने के बाद टहल ने कोर्ट का रुख किया था, मामला विचाराधीन है.

475 गांवों को पाइपलाइन से पानी पहुंचाया जाना है

10 माह के बाद भी नहीं हुआ नई कंपनी का चयन

यह काम रह गया अधूरा

पेयजल विभाग से मिली जानकारी के अनुसार निरसा उत्तरी और दक्षिण जोन मिला कर कुल 39 पानी टंकी का निर्माण होना था. लेकिन मुश्किल से 40 प्रतिशत ही काम पूरा हुआ है. मैथन और पंचेत डैम के पास दो वाटर ट्रीटमेंट प्लांट बनना है, जिसका 70 फीसदी काम पूरा हुआ है, शेष काम नई कंपनी करेगी. मैथन व पंचेत डैम में इनटेकवेल का काम भी बाकी है. पाइपलाइन भी 15-20 प्रतिशत ही बिछी है. इसे पूरा होने में 2 साल से अधिक समय लगेगा.

टेंडर का काम लेट नहीं हुआ है : जेशोन होरो

कार्यपालक अभियंता, पीएचईडी 1 के जेशोन होरो ने कहा कि पूर्व की जानकारी तो नहीं है, लेकिन जहां तक मैं जानता हूं निरसा मेगा जलापूर्ति के टेंडर का काम लेट नहीं हुआ है. प्रक्रिया चल रही है. 15 दिसंबर तक वर्क ऑर्डर मिल जाएगा. उसके बाद बाकी बचे काम शुरू कराए जाएंगे.

खुद ही घर पर चलाई गोली पुलिस में शिकायत भी कर दी

संवाददाता। जमशेदपुर

बागबेड़ा थाना अंतर्गत लाल बिल्डिंग के पास रविवार रात फायरिंग के मामले में पुलिस ने अंजनी पांडेय को हिरासत में लिया है. अंजनी ने ही अपने घर पर फायरिंग की और पुलिस को गुमराह करने के लिए बिट्टू तिवारी पर आरोप लगा दिया. इसका खुलासा तब हुआ, जब पुलिस ने सीसीटीवी को खंगाला.

सीसीटीवी में दिखाई दे रहा है कि अंजनी पांडेय खुद फायरिंग कर रहा है. इधर, पुलिस ने जब अंजनी से पूछताछ की, तो कई सारे खुलासे हुए. अंजनी ने फायरिंग के बाद हथियार अपने भाई को दे दिया था. पुलिस ने पड़ोसी के पास से हथियार जब्त किया. सिटी एसपी ने बताया कि बिट्टू के बयान पर मामला दर्ज कर पूछताछ हो रही है. सीसीटीवी में अंजनी हथियार लहरा रहा है. अंजनी ने बिट्टू के दादा से 50 हजार उधारी ली. बिट्टू ने कई बार रुपए वापस मांगे पर अंजनी ने वापस नहीं किए. रविवार को बिट्टू रुपए मांगने अंजनी के घर गया,पर अंजनी की पत्नी ने उसे भगा दिया. यह पता चलने पर अंजनी आग बबूला हो गया और बिट्टू के घर जाकर हथियार चमकाने लगा. लोगों ने उसे हथियार चमकाते देखा और उसकी पिटाई कर दी. बिट्टू को फंसाने के लिए अंजनी ने अपने घर पर हवाई फायरिंग की.

शातिर कारगुजारी

- पुलिस को गुमराह करके दूसरे पर लगाया आरोप
- सीसीटीवी से खुला सारा राज, हो रही पूछताछ

▼ ब्रीफ खबरें

संत मरियम स्कूल में मनी गुरुनानक जयंती

मेदिनीनगर । संत मरियम स्कूल में गुरु नानक देव जी की जयंती मनायी गयी. मौके पर स्कूल के चेयरमैन अविनाश देव ने गुरुनानक देव जी की तस्वीर पर माल्यार्पण किया और दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की. अविनाश देव ने कहा कि दूर दृष्टि रखने वाले गुरुनानक देव जी ने आध्यात्मिकता की गहरी भावना और परमात्मा को समझने की खोज पर जोर दिया. उनकी शिक्षा एकेश्वरवाद की अवधारणा में निहित हैं, जो संपूर्ण मानवता की एकता पर जोर देती हैं.

इंटरनेशनल स्कूल में कार्यक्रम आयोजित

कोडरमा। राज इंटरनेशनल स्कूल में गुरुनानक जयंती हर्षोल्लास के साथ मनायी गयी. कार्यक्रम की शुरुआत गुरुनानक जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए की गई. मौके पर विद्यालय के अध्यक्ष रामलखन सिंह उपस्थित रहे. प्री प्राइमरी कोऑर्डिनेटर दलजीत कौर ने शबद गुरबानी कीर्तन पेश किया. वहीं विद्यालय की शिक्षिका प्रीति सिंह ने गुरुनानक जयंती से संबंधित बहुमूल्य जानकारी बच्चों को दी. मौके पर विभिन्न वर्गों के छात्र-छात्राओं ने गुरु नानक देव जी से संबंधित कविता, भाषण, प्रेरक प्रसंग को व्यक्त किया.

सेक्रेड हार्ट ने ग्रिजली को 40 रन से हराया

कोडरमा। जिला क्रिकेट एसोसिएशन के तत्वावधान में खेले जा रहे इंटर स्कूल क्रिकेट टूर्नामेंट में स्थानीय सी एच हाई स्कूल मैदान में सेक्रेड हार्ट स्कूल और ग्रिजली विद्यालय के बीच मैच हुआ. पहले बल्लेबाजी करते हुए सेक्रेड हार्ट स्कूल ने निर्धारित 35 ओवर में 8 विकेट के नुकसान पर 232 रन बनाए, जिसमें सक्षम ने 60 रन अंकित ने 30 रन शिवम ने 26 और आशीष ने 23 रन का योगदान दिया. गेंदबाजी करते हुए ग्रिजली विद्यालय की ओर से अभय ने तीन विकेट प्रिंस ने दो विकेट राज और कुमार आदित्य ने एक-एक विकेट लिए.

नेताजी सुभाष विवि : नयी दिल्ली में आयोजित कॉलेज संस्थानों के समारोह में मिला पुरस्कार

एक्सीलेंस इन सोशल रिस्पोन्सिबिलिटी का मिला अवार्ड

आनंद मिश्रा। जमशेदपुर

नयी दिल्ली स्थित होटल ताज पैलेस में पिछले 26 नवंबर को कॉलेज दुनिया संस्थान की ओर से आयोजित एक समारोह में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न श्रेणियों में पुरस्कार प्रदान किये गए. इस कार्यक्रम में एक्सीलेंस इन सोशल रिस्पोन्सिबिलिटी यानी सामाजिक दायित्व में उत्कृष्टता, श्रेणी में पोखारी स्थित नेताजी सुभाष विश्वविद्यालय को सर्वश्रेष्ठ शिक्षण संस्थान के पुरस्कार से सम्मानित किया गया. कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलाधिपति की ओर से विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो डॉक्टर गंगाधर पंडा ने उक्त पुरस्कार को ग्रहण किया. पूर्वी क्षेत्र में इस श्रेणी का यह प्रथम पुरस्कार है, जो नेताजी सुभाष विश्वविद्यालय को प्राप्त हुआ है. इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति ने विश्वविद्यालय के कुलसचिव नागेंद्र सिंह को इस बेहतरीन प्रदर्शन का श्रेय दिया है.

नयी दिल्ली में आयोजित समारोह में पुरस्कार ग्रहण करते नेताजी सुभाष यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रोफेसर डॉ गंगाधर पंडा.

इस विशेष सफलता के लिए कुलाधिपति मदन मोहन सिंह ने पूरे विश्वविद्यालय को बधाई दी. उन्होंने कहा ये विश्वविद्यालय केवल शिक्षा नहीं, बल्कि छात्र के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है. समाज के प्रति अपने हर कर्तव्य को पूरा कर के ही हम देश के सफल नागरिक कहलायेंगे. कुल सचिव नागेंद्र सिंह के मुताबिक ये सफलता पूरे नेताजी सुभास परिवार के लिए गौरव की बात है. अगर हर विद्यार्थी सामजिक दृष्टिकोण से खुद को अग्रसर करेंगे तो निश्चित ही हमारा देश सफलता की ऊंचाइयों को पार कर सबसे सफल देशों में गिना जाएगा. बता दें की शिक्षा के क्षेत्र में कॉलेज दुनिया एक वन- स्टॉप प्लेटफॉर्म है. जहां विद्यार्थियों, अभिभावकों और विभिन्न शिक्षण संस्थानों को एक ही स्थान पर उच्च शिक्षा से संबंधित सभी जानकारियां सरलता से प्राप्त हो जाती हैं. कॉलेज दुनिया भारत और विश्व स्तरीय शैक्षणिक क्षेत्र की जानकारियां उपलब्ध करवाने के लिए एक विश्वसनीय माध्यम है. वर्तमान में कॉलेज दुनिया भारत के 100 सर्वश्रेष्ठ वेबसाइटों की सूची में भी शामिल है.

खास बातें

- विवि के कुलपति डॉ गंगाधर पंडा पुरस्कार ग्रहण किया
- पूर्वी क्षेत्र में इस श्रेणी का यह प्रथम पुरस्कार है

आपकी बात

> अंधविश्वास और भ्रष्टाचार के विरूद्ध लोग जागरूक होंगे,तभी समाज में लोग सिर उठाकर जीवन व्यतीत कर सकते है.

नाम – कुन्दन गोप
पद – सामाजिक कार्यकर्ता
जन्म स्थल – बुजुर्ग जमीरा, पोचरा
कार्य क्षेत्र – सम्पूर्ण झारखंड .

कुंदन गोप आज किसी परिचय के मोहताज नही है.इनका जन्म बुजुर्ग जमीरा,पोचरा, रामगढ़ में हुआ था.आप हमेशा से सामाजिक क्षेत्र में अपना योगदान देते आ रहे है.आप सभी धर्म, जाति, समाज के लोगों को जागरुक करने का काम करते रहे है .कई बार कुन्दन गोप पर सामाजिक कार्य करने को कई मुकदमें भी हुए. सन 2005 में एक आदिवासी महिला के साथ हुए शारीरिक शोषण का कुंदन कुमार के द्वारा विरोध करने पर मुकदमा दर्ज किया गया था . 2007 में एक आदिवासी महिला को डायन बता कर लोगों ने महिला को बिजली का झटका दिया था.उक्त महिला को घर से बाहर इलाज कराने के लिए नहीं जाने दिया गया था, घटना की जानकारी कुंदन को मिली. उन्होंने बरकाकाना ओपी पुलिस की मदद से महिला का इलाज करवाया. जिससे महिला की जान बची. इस कार्य को लेकर गांव के कई दबंगों की धमकी भी उनको सहनी पड़ी.वहीं 2007 में कुंदन ने मनरेगा के सोशल आडिट कार्यक्रम में न्यूनतम मजदूरी समेत कई मामले को उजाागर किया. उसी दौरान सरायकेला खरसावा में भी जाकर मनरेगा से संबंधित कई मामले को उजाागार किया था. 2007 में जब इन्होंने मास कम्यूनिकेशन की पढ़ाई करते हुए सूचना अधिकार कानून को लेकर लोगों को जागरूक किया. जिसके चलते 2008 में उसको बेस्ट आरटीआई सीटिजन आवार्ड से नवाजा गया.सिउर और सिधवार में मनरेगा के तहत काम कर रहे 40 मजदूरों का भुगतान नहीं किया गया था.जिसके बाद उन मजदूरों की मजदूरी की भुगतान के लिए जिला से लेकर स्टेट तक आवाज उठाते हुए उनका भुगतान करवाया.कोरोना काल में इनकी संस्था केयर ग्रामीण विकास केंद्र के द्वारा लगभग दो माह तक गरीबों को खाना खिलाया एवं लोगों के बीच भोजन समाग्री का वितरण किया.ऑक्सीजन सिलेंडर आदि की व्यवस्था कर लोगो को राहत पहुंचाया. जिसको लेकर रामगढ की सिविल सर्जन ने इन्हें के कोरोना फ्रंट लाईन बेरियर से नवाजा.शिक्षा के क्षेत्र में इनकी संस्था का योगदान कॉफी सराहनीय रहा. 2022 में गुमला, सिमडेगा, लातेहार और रामगढ में रोजगार मेला लगा कर बेरोजगार युवक युवतियों को सरकारी तकनीकी शिक्षा से जोडकर छह माह बाद इनको रोजगार मुहैया करवाया.वहीं सरकार के साथ मिलकर गुम हुए बच्चों को मिलने के बाद उनका घर का पता लगा कर माता पिता से बात कर बच्चों को उनका घर तक पहुंचा रहे है .

गीत-संगीत व नृत्य की मनभावन प्रस्तुतियों से बच्चों ने बिखेरी छटा

डीपीएस बोकारो के 'संगम' में विद्यार्थियों ने दिखाए अपने हुनर

संवाददाता। बोकारो

डीपीएस बोकारो में गंगा, जमुना और रावी हाउस द्वारा आयोजित द्विवार्षिक सदनोत्सव 'संगम' का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बोकारो के पुलिस अधीक्षक प्रियदर्शी आलोक ने बच्चों की प्रस्तुतियों की सराहना करते हुए कहा कि शुरू से ही शिक्षा के साथ-साथ सह-शैक्षणिक मामलों में भी डीपीएस बोकारो की राष्ट्रीय ख्याति रही है. यह गरिमा ही इसकी अद्वितीय विरासत है. उन्होंने बच्चों के सर्वांगीण विकास में विद्यालय, शिक्षकों और अभिभावकों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया.

इसके पूर्व, समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि एसपी प्रियदर्शी आलोक एवं प्राचार्य डॉ एएस गंगवार ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया. इस क्रम में अतिथियों ने विद्यालय की त्रैमासिक पत्रिका जेनिथ के नए संस्करण का विमोचन भी किया. प्राचार्य ने एसपी को स्मृति-

बोकारो में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते डीपीएस के बच्चे.

चिह्न भेंटकर सम्मानित किया. सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरुआत सीनियर विंग के विद्यार्थियों ने आर्केस्ट्रा-प्रस्तुति से की. उन्होंने विभिन्न वाद्य-यंत्रों पर 70-80 के दशक की बॉलीवुड की सुपरहिट धुनों का सुंदर सम्मिश्रण सुनाकर भरपूर तालियां बटोरीं. इसके पश्चात गंगा हाउस के छोटे-छोटे विद्यार्थियों ने वर्षा आधारित नृत्य-प्रस्तुति से प्राकृतिक सौंदर्य को दर्शाया. मोर और चिड़िया का रूप धरे बच्चों की मासूमियत भरी अदाकारी, उनकी भाव-भंगिमाएं सहसा लोगों का मन मोह ले रही थीं. जमुना हाउस से सीनियर विंग के छात्र-छात्राओं ने समय के साथ संचार माध्यम में क्रमबद्ध बदलाव और सोशल मीडिया के दुष्परिणाम स्वरूप स ाम ाजिक - प ारिव ारिक बिखराव को सुंदर ढंग से

रेखांकित किया. इसी क्रम में जमुना हाउस की वार्डन पी कलावती एवं नीतू सिंह ने गंगा, जमुना व रावी सदन के विद्यार्थियों की सालभर की उपलब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डाला. धन्यवाद ज्ञापन रावी हाउस की वार्डन ई शर्मिला एवं श्वेता शुभम ने किया.

कार्यक्रम का संचालन छात्रा अदित्रि, देवोलीना, हिमांगी, ऋद्धिमा व छात्र आरुष राज ने किया. समापन राष्ट्रगान से हुआ. इस अवसर पर विभिन्न विद्यालयों के प्राचार्य, बड़ी संख्या में गंगा, जमुना व रावी सदनों के विद्यार्थियों के अभिभावकगण तथा शिक्षक उपस्थित रहे.

खास बातें

- त्रैमासिक पत्रिका जेनिथ के नए संस्करण का विमोचन
- पुलिस अधीक्षक प्रियदर्शी आलोक मुख्य अतिथि बने

इग्नू अध्ययन केंद्र में ऑनलाइन गूगल मीटिंग

साहिबगंज । सोमवार को इग्नू अध्ययन केंद्र साहिबगंज महाविद्यालय में ऑनलाइन गूगल मीटिंग हुई. सोमवार केंद्र के समन्वयक ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि क्षेत्रीय केंद्र देवघर के निर्देशानुसार साहिबगंज कॉलेज साहिबगंज में ऑनलाइन इंडक्शन मीटिंग हुई. इसमें इग्नू क्षेत्र केंद्र देवघर के निदेशक डॉ सरोज कुमार मिश्रा एवं सहायक निदेशक अरविंद, मनोज कुमार सिंह , इग्नू अध्ययन केंद्र के समन्वयक डॉ ध्रुव ज्योति कुमार सिंह, सहायक समन्वयक डॉ प्रमोद कुमार दास , डॉ सिदाम सिंह मुंडा साहिबगंज महाविद्यालय साहिबगंज के प्राचार्य डॉ राहुल कुमार संतोष इग्नू अध्ययन केंद्र के परामर्शदाता डॉ रंजीत सिंह, मनीष सिन्हा , बी एन ठाकुर, राजीव रंजन, विनोद कुमार जायसवाल, अजय कुमार के साथ जुलाई 2023 सत्र में नव नामांकित छात्र-छात्राओं ने भाग लिया.

अर्का जैन यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ लॉ : संविधान सप्ताह मनाया

पोस्टर मेकिंग-डिबेट का आयोजन

संवाददाता। जमशेदपुर

अरका जैन यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ लॉ की ओर से संविधान सप्ताह का आयोजन किया गया. इसकी शुरुआत पोस्टर मेकिंग और भाषण प्रतियोगिता के साथ हुई. इससे पूर्व यूनिवर्सिटी के आरंभ युवा मंच के सहयोग से विधि पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया. वहीं इस सप्ताह के तहत विद्यार्थियों ने भारतीय संविधान का पालन करने की शपथ ली. अर्का जैन यूनिवर्सिटी में संविधान सप्ताह के समापन पर अतिरिक्त जिला न्यायाधीश मंजू कुमारी और न्यायिक मजिस्ट्रेट ज्योत्सना पांडे सम्मानित अतिथि के

रूप में शिरकत की.

यूनिवर्सिटी में एक सप्ताह तक संचालित यह उत्सव उन सिद्धांतों का सम्मान और उनकी खोज करने के लिए समर्पित था, जो हमारी कानूनी प्रणाली की नींव बनाते हैं. पूरे सप्ताह छात्र, शिक्षक और कर्मचारी संविधान की समझ और सराहना को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किए गए विचारोत्तेजक कार्यक्रमों की एक श्रृंखला में जुटे रहे. अर्का जैन यूनिवर्सिटी प्रबंधन की ओर से बताया गया है कि यूनिवर्सिटी का लॉ स्कूल छात्रों को संवैधानिक कानून पर चर्चा में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता है.

शांति देवी सशिवमं में मातृ सम्मेलन आयोजित

संवाददाता। चाकुलिया

चाकुलिया के शांति देवी सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में सोमवार को रास पूर्णिमा व गुरु नानक जयंती के अवसर पर माता को समर्पित कार्यक्रम मातृ सम्मेलन का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में ध्यान फाउंडेशन गौशाला की संचालिका डॉ. शालिनी मिश्रा व विशिष्ट अतिथि के रूप में मारवाड़ी महिला समिति चाकुलिया की अध्यक्ष बबीता रुंगटा उपस्थित हुईं. कार्यक्रम में भैया बहनों ने एक से बढ़कर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया. कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विद्यालय के संरक्षक रवि झुनझुनवाला ने कहा कि माता ही मनुष्य का प्रथम गुरु होती हैं. एक मां जिस प्रकार अपने परिवार को ममता एवं स्नेह की छत्रछाया में लालन-

पालन करती हैं. वह कोई नहीं कर सकता, मां सदैव हमारे लिए पूजनीय होती हैं. नारी शक्ति के बिना संसार की कल्पना अधूरी है. मनुष्य के जीवन में मां का योगदान अतुलनीय है. कार्यक्रम में माताओं के लिए भी कई प्रकार के खेलों का आयोजन किया गया. इसमें भाषण प्रतियोगिता जिसका विषय भारतीय समाज में माता की भूमिका थी ,जिसपर कई माताओं ने अपने विचार प्रस्तुत किया, जिसमें प्रथम स्थान पुतुल बक्शी रही, द्वितीय स्थान संचिता मल्लिक, तृतीय स्थान शिवानी मांडी रहीं. इसी प्रकार गेंद फेंक प्रतियोगिता, शंख वादन प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें प्रथम द्वितीय द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाली माताओं को मुख्य अतिथि एवं प्रबंधन समिति के अधिकारियों द्वारा पुरस्कृत किया गया. मौके पर विद्यालय के संरक्षक कमल खंडेलवाल, विद्यालय के अध्यक्ष प्रभात झुनझुनवाला, सचिव अमित भारतीय, उपाध्यक्ष लक्ष्मी नारायण दास, कोषाध्यक्ष दिनेश कुमार सिंह ,उपाध्यक्ष आलोक लोधा,समिति सदस्य हार्दिक यादव , पुष्पा रुंगटा,अभिभावक प्रतिनिधि संचिता मल्लिक , विद्यालय के प्रधानाचार्य कमलाकांत प्रमाणिक के साथ विद्यालय के आचार्य मनोज महतो, विकास महतो, हरिपद महतो, दिलीप महतो, शांतनु घोष, तापस बेरा, विप्लव टुडू, लक्ष्मी सिंह ,मनीषा महतो, वंदना दास, सीमा पांडे ,नमिता राउत, बिपाशा महतो , आनंदिता करुणामय,सोनाली दास उपस्थित थे.

खास बातें

- स्कूल के भैया-बहनों ने कार्यक्रम प्रस्तुत किया
- कार्यक्रम में माता की महत्ता व उनके आदर का संदेश दिया

आईआईटी के वैज्ञानिक कृषकों को सिखा रहे आधुनिक कृषि

संवाददाता। धनबाद

आईआईटी-आईएसएम किसानों की आय बढ़ाकर उनके जीवन को बदलने के प्रयास में जुटा है. इसेको लेकर वह लगातार किसानों को आधुनिक खेती के टिप्स और सरकारी योजनाओं की जानकारी उपलब्ध करा रहा है. इसी कड़ी में 27 नवंबर को थियोरेटिकल और ऑपरेशंस रिसर्च तकनीक का उपयोग कर अनुसूचित जनजाति समुदायों की भलाई व सुधार विषय को लेकर संस्थान के प्रबंधन अध्ययन और औद्योगिक इंजीनियरिंग विभाग की टीम जामताड़ा के कुंडहित ब्लॉक के कानाकेंद गांव पहुंची. टीम का नेतृत्व कर रही परियोजना प्रमुख प्रो रश्मि सिंह ने बताया कि पिछले दो वर्षों से कम बारिश की वजह से सूखे की स्थिति बनी है. ऐसे में किसानों को ड्रिप सिंचाई, मल्चिंग, खाद का उपयोग, कवर फसलों और ड्रॉप सहनशील प्रजातियां और किस्मों की खेती के तरीकों के विषय में बताया गया.

गड़बड़ी! जिला परिषद उपाध्यक्ष ने उपायुक्त से किया उच्च स्तरीय जांच कराने की मांग

आवासीय विद्यालय भवन निर्माण में अनियमितता बरतने का आरोप

संवाददाता । चांडिल

सरायकेला-खरसावां जिला के जिला परिषद उपाध्यक्ष मधुश्री महतो ने उपायुक्त से चांडिल अनुमंडल के कुकड़ प्रखंड अंतर्गत गांव सींसी में पीएमजेवीके योजना के तहत बन रहे अल्पसंख्यक आवासीय विद्यालय के निर्माण कार्य की उच्च स्तरीय जांच की मांग की है. उपायुक्त को लिखे पत्र में उन्होंने कहा कि करीब 13 करोड़ राशि से स्वीकृति अल्पसंख्यक आवासीय विद्यालय भवन निर्माण कार्य में घोर अनियमियता बरती जा रही है. ग्रामीण व स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने कई बार कनीय अभियंता व मुंशी को कार्य में सुधार करने के लिए कहा गया, लेकिन निर्माण कार्य में कोई सुधार नहीं किया जा रहा है. उन्होंने कहा कि भवन निर्माण कार्य की गुणवत्ता घटिया होने के कारण भविष्य में दुर्घटना होने की संभावना है.

झिमड़ी में बना एकलव्य विद्यालय.

जिप उपाध्यक्ष मधुश्री महतो

प्राक्कलन के अनुसार नहीं हो रहा काम

योजना के अभिकर्ता द्वारा दो वर्ष पूर्व नीमडीह प्रखंड के झिमरी गांव में एकलव्य विद्यालय भवन का निर्माण कराया गया था. विद्यालय शुरू भी नहीं हुआ है और भवन की दीवारों पर दरार पड़ गई है. घटिया निर्माण कार्य होने के कारण बगैर उपयोग के भवन अब खंडहर में तब्दील होने वाला है. दीवार का प्लास्टर उखड़ने लगा है. इसी प्रकार अल्पसंख्याक आवासीय विद्यालय का कुछ ही माह में जर्जर ना हो जाए इसलिए निर्माण कार्य के गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है. भवन निर्माण कार्य में प्राक्कलन के आधार पर कार्य नहीं कराया जा रहा है. पीलर फाउंडेशन में गड्ढा काफी कम की गई है. निर्माण कार्य में छड़ की मात्रा काफी कम है और घटिया ईंट का उपयोग किया जा रहा है. सीमेंट की मात्रा कम व बालू की मात्रा अधिक मिलाकर ईंट जोड़ाई का कार्य किया जा रहा है. जिप उपाध्यक्ष ने उपायुक्त से विभागीय स्तर से उच्च स्तरीय टीम गठित कर यथाशीघ्र दोनों योजनाओं का जांच कराते हुए आवश्य

क्लासिफाइड

ब्रीफ खबरें

भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ रही योजनाएं : झामुमो

नोवामुंडी। नोवामुंडी प्रंखड अंतर्गत पोखरपी पंचायत ग्राम गितिकेदु स्कूल साई में फुटबॉल खेल मैदान के लिए चैजिंग शौचालय निर्माण, पेयजल सुविधा एवं गैलरी निर्माण योजना में भारी अनियमितता बरती गई है. योजना पूरी तरह से भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गई है. झामुमो के नोवामुंडी प्रखंड अध्यक्ष मनोज लागुरी ने लगाया है.इस योजना की प्राक्कलित राशि 12 लाख 46 हजार 700 रुपए है. मनोज लागुरी ने कहा कि योजना का निर्माण घटिया स्तर का हुआ है.कई सामान घटिया स्तर का इस्तेमाल किया गया है.

जादूगोड़ा में डॉ दिनेश षाड़ंगी का स्वागत

मुसाबनी। जादूगोड़ा राखा अटल चौक पर सोमवार को झारखंड के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री डॉ. दिनेश षड़ंगी का स्वागत भाजपा युवा मोर्चा द्वारा अध्यक्ष विक्रम सिंह के नेतृत्व में किया गया. इस अवसर पर पूर्व मंत्री डॉ. षड़ंगी ने अटल चौक पर पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के मूर्ति पर माल्यार्पण किया. जादूगोड़ा में रास पूर्णिमा पूजा में शामिल हुए. मौके पर अजय शाह, मंडल अध्यक्ष दिलीप पुराण, युवा मोर्चा मंडल अध्यक्ष विक्रम सिंह, हीरा सिंह, अशोक गोप, दिलीप कर्मकार, विश्वजीत सिंह आदि लोग थे.

प्रतिदिन स्वच्छता अपनाएं : पिंटू कुमार

नोवामुंडी। आईबीएम के बैनर के तत्वावधान में टाटा स्टील द्वारा पद्मावती जैन सरस्वती शिशु मंदिर नोवामुंडी में चलने वाले 16 से 30 नवंबर तक स्वच्छता पखवाड़ा में नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया. साथ ही भैया बहनों ने निबंध प्रतियोगिता एवं पोस्टर प्रतियोगिता में भाग लिया.कार्यक्रम में प्लानिंग प्रोसेसिंग हेड पिंटू कुमार उपस्थित थे.उन्होंने कहा कि सिर्फ एक दिन स्वच्छता नहीं मनाई जाती है, बल्कि इसे अपने दैनिक कामकाज में अपनाना चाहिए. प्रतिभागियों को पुरस्कार दिए गये.

जोजोगुटू में खलियान जलकर हुआ खाक

नोहरपुर। मनोहरपुर प्रखंड के राईडीह पंचायत के गांव जोजोगुटू में सोमवार सुबह बच्चों द्वारा छोड़े पटाखे से तुरका सिरका का खलिहान जल कर खाक हो गया.जिससे खलिहान में रखे पुआल और धान की उपज जलकर स्वाहा हो गया.पीड़ित किसान तुरका सिरका ने बताया कि इससे उन्हें लगभग दस हजार का नुकसान उठाना पड़ा है.उन्होंने कहा कि इससे भी ज़्यादा क्षति हो सकती थी.आस पड़ोस के लोगों ने जलते खलिहान पर क़ाबू पा लिया .नहीं तो काफ़ी जान माल की क्षति पहुंच सकती थी.

दो बाइक की टक्कर में चार घायल, एक रेफर

मनोहरपुर। रविवार देर रात आनंदपुर बाजार मार्ग पुलिया के समीप दो बाइक में सीधी टक्कर हो गयी.इससे चार लोग घायल हो गए.इस दुर्घटना में आनंदपुर थाना चारबंदिया के रहने वाले 50 वर्षीय किशोर तिर्की गंभीर रूप से घायल हैं.वहीं इस दुर्घटना में तीन नाबालिग किशोर भी घायल हैं. घायल 13 वर्षीय कुलदीप बरजो गोइलकेरा थाना ग्राम सारूगड़ा का रहने वाला है.15 वर्षीय बलथजर मिंज ग्राम झारबेड़ा एवं मानुएल खाखा ग्राम कोंजाली (दोनों आनंदपुर थाना क्षेत्र) के रहने वाले हैं.

बाजार समिति ने कराया नारायण भोज

मुसाबनी। कार्तिक पूर्णिमा के अवसर सोमवार को मुसाबनी बाजार समिति द्वारा बाजार परिसर में नारायण भोज का आयोजन किया गया. जिसका शुभारंभ डीएसपी चंद्रशेखर आजाद के हाथों किया गया. इस अवसर पर बाजार परिसर में लगभग 500 लोगों को भोजन कराया गया. मुसाबनी बाजार के दुकानदार नारायण भोज में शामिल हुए. मौके पर समिति के अध्यक्ष सरदार राजु सिंह,पप्पू अली, जलधर प्रधान,मानस नामाता, मोहम्मद इम्तियाज, विवेक गुप्ता, सरफराज अंसारी, फोटीक भकत, रंजीत वर्धन,मधु अग्रवाल समेत बाजार समिति के सदस्य उपस्थित थे.

पुरानी बस्ती सीढ़ी नदी छठ घाट को फूल माला और झालरों से आकर्षक ढंग से सजाया गया

कार्तिक पूर्णिमा पर लोगों ने लगाई आस्था की डुबकी

संवाददाता। चक्रधरपुर

कार्तिक पूर्णिमा के पर सोमवार को चक्रधरपुर के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के नदी, तालाबों में लोगों ने श्रद्धा की डुबकी लगाकर दान-पुण्य किया .इस अवसर पर चक्रधरपुर के पुरानी बस्ती सीढ़ी नदी छठ घाट को आकर्षक तरीके से सजाया गया था. जहां बड़ी संख्या में महिला-पुरूषों ने नदी स्नान किया.स्नान के बाद श्रद्धालुओं ने परंपरा के अनुसार पूजा अर्चना व दान-पुण्य किया.यहां शहर के कई सामाजिक संगठनों की ओर से श्रद्धालुओं के लिए नाश्ते, चाय, पानी, भोजन की भी व्यवस्था करायी गई थी.

सोमवार अहले सुबह चक्रधरपुर के विधायक सुखराम उरांव भी पुरानी बस्ती सीढ़ी नदी घाट पहुंचे.वहीं पंचमोड़ स्थित राधा गोविंद मंदिर की ओर से सीढ़ी नदी घाट परिसर में भजन कीर्तन भी किया गया. इसके अलावा बलिया घाट,मुक्तिनाथ धाम घाट,बोड़दा पुल,पंप रोड,दंदासाई वार्ड संख्या पांच स्थित नदी समेत शहर के अन्य नदी घाटों पर महिला-पुरुषों ने नदी स्नान किया.

पुरानी बस्ती छठ नदी घाट के समीप भजन-कीर्तन पेश करते श्रद्धालु.

खास बातें

- सामाजिक संगठनों ने की सुबह चाय-नाश्ता की व्यवस्था
- घाट पर चले भजन कीर्तन में विधायक भी हुए शामिल

उड़िया लोगों ने नदी में सामग्री की प्रवाहित

वहीं उड़िया समाज के लोगों ने कार्तिक पूर्णिमा पर परंपरा के अनुसार नदी में केले के पेड़ से बने नाव में पान, सुपारी, पैसे,अगरबत्ती और दीया रखकर जल में प्रवाहित किया . पुरानीबस्ती की युवतियों ने घरों के आगे आकर्षक रंगोली बनाई .इस मौके पर मुख्य रुप से माता पाउड़ी मंदिर समिति, झुमका मोहल्ला छठ पूजा समिति समेत अन्य संगठनों ने छठ नदी घाट व रास्ते में कई जगहों पर स्टॉल लगाकर श्रद्धालुओं को नाश्ता प्रदान किया .

आओ जानें

मेदिनीनगर (डालटनगंज) से कब कौन जीतकर पहुंचे झारखंड विधानसभा

वर्ष	विधायक	दल
2000	इंदर सिंह नामधारी	जदयू
2005	इंदर सिंह नामधारी	तंत्र
2009	कृष्णा नंद त्रिपाठी	कांग्रेस
2014	आलोक कुमार चौरसिया	झाविमो
2015	आलोक कुमार चौरसिया	भाजपा
2019	आलोक कुमार चौरसिया	भाजपा

विधायक ने जनता दरबार लगा कर सुनी लोगों की समस्या, कहा-

कार्यकर्ता योजनाओं से लाभुकों को लाभ पहुंचाएं

संवाददाता। चाईबासा

सदर विधानसभा क्षेत्र के विधायक दीपक बिरुवा सोमवार को हाटगम्हारिया प्रखंड के हाटगम्हारिया में स्थित अपने कार्यालय पहुंचे थे. विधायक ने झामुमो प्रखंड कमेटी के पदाधिकारी एवं सदस्यों के साथ बैठक की. इस दौरान उन्होंने प्रखंड के विभिन्न पंचायत में सरकार की ओर से आयोजित आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में अधिक से अधिक लोगों को लाभ दिलाने हेतु कई आवश्यक दिशा निर्देश दिए विधायक ने कहा कि आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में सभी कार्यकर्ता अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हुए हर जरूरतमंदों को उनके अहर्ता के अनुसार सरकारी कल्याणकारी योजनाओं का लाभ जरूर दिलाए. इसके लिए सभी कार्यकर्ता विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं से वंचित लाभुकों को चिन्हित करें और उन्हें लाभांवित कराने में सहयोग करें.

जनता दरबार में लोगों ने रखी अपनी बात : इस दौरान विधायक ने जनता दरबार लगा कर जनता की समस्याओं को सुना और कई समस्याओं का ऑन द स्पॉट निष्पादन कराया. चूंकि यहां निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रत्येक सोमवार को विधायक दीपक बिरुवा मौजूद रहेंगे और जनता की समस्या को सुनेंगे. निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सोमवार को विधायक दीपक बिरुवा हाटगम्हारिया प्रखंड स्थित अपने कार्यालय पहुंचे हुए थे.

चक्रधरपुर में जनता दरबार में लोगों की समस्या सुनते विधायक दीपक बिरूआ.

खास बातें

- कई समस्याओं का ऑन द स्पॉट निष्पादन कराया
- ग्रामीणों ने पेयजल व बिजली समस्याएं दूर करने की मांग की

इनकी थी उपस्थिति

मौके पर झामुमो प्रखंड अध्यक्ष बलवंत गोप, जिप सदस्य प्रमिला पिंगुवा, जीवनी सिंकु, विकास गुप्ता, भजमती सिंकु, कालीचरण पूर्ति, बुधराम पान, सोना लागुरी, हरिचरण बिरुवा, मंगल हेंब्रम, सुनील बिरुवा, बुलेट,डुबराज गागराई,हरीश गागराई,बागुन सिंकु, दामू चातोंबा, राकेश सिंकु,लादुरा, श्रीधर लागुरी, प्रदीप बिरुवा,दीपक बिरुवा, चरण गागराई ,राजू खंडाइत, केदार,मरंग बाबू, जोटिया पिंगुवा, विपत गुप्ता समेत अन्य मौजूद थे .

इस दौरान ग्रामीणों ने विधायक के समक्ष स्वास्थ्य, पेयजल व बिजली से संबंधित समस्याएं रखते हुए उनका समाधान करने की मांग की. विधायक ने कई मामलों को लेकर फोन कर संबंधित विभाग के अधिकारियों को समस्याओं का समाधान करने के आवश्यक दिशा-निर्देश दिए. विधायक ने अधिकारियों से कहा कि वे लोगों की सामूहिक समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर समाधान करें.

इलाके के मंदिरों में उमड़ी लोगों की भीड़

नोवामुंडी। सोमवार को गुवा में कार्तिक पूर्णिमा स्नान पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया.अहले सुबह से कारो नदी कुसुम घाट में डुबकी लगाने को लेकर श्रद्धालुओ का सैलाब देखने को मिला.इस दौरान ओड़िया समुदाय के लोगों ने आ का मा बोई,गुआ पानो थोई, मासोको धोरमो मोर गुवा पानो तोर बोईतो बंदना गीत गाकर केला के गाछ के छिलके से बनी नाव को कारो नदी में प्रवाहित किया.सुबह 4 बजे से ही पूजा करने के लिए देवालयों में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा.मान्यता है की इस दिन देवता स्नान करने के लिए पृथ्वी लोक में आते है. जिसे देव दीपावली के रुप में भी लोग मनाते हैं. गुवा के विवेक नगर 2 एवं कारोकुंज में कार्तिक भगवान के प्रतिमा स्थापित कर लोग पूजा करते नज़र आए.

आज से 9 दिवसीय मंगसीर महोत्सव की होगी शुरुआत

संवाददाता। चाईबासा

अमला टोला स्थित दादी मंदिर में 9 दिवसीय मंगसीर महोत्सव की शुरुआत मंगलवार से आरंभ होगी.नौ दिवसीय यह महोत्सव पूरी तरह से दादी मैया को समर्पित होता है. इस महोत्सव के दौरान प्रतिदिन 3:00 बजे से लेकर संध्या 7:00 बजे तक मंगल पाठ किया जाएगा.भजन संध्या का कार्यक्रम 3 दिसंबर से आरंभ हो जाएगा.3 दिसंबर से 5 दिसंबर तक पुरुलिया से आने वाले भजन गायक अपने भजनों की प्रस्तुति देंगे.5 दिसंबर को दादी मैया को मेहंदी लगाई जाएगी और रात्रि में उनके ज्योत जलायी जायेगी. देर रात्रि तक

भजन संध्या होगी. इस मौके पर पुरुलिया से आई भजन गायिका रोशनी शर्मा तीन दिनों तक अपने भजनों की प्रस्तुति देंगी और कोलकाता से आने वाले भजन गायक पोद्दार 6 दिसंबर से लेकर कार्यक्रम के अंत तक प्रतिदिन दादी मैया के लिए भजनों की प्रस्तुति देंगे. दादी मैया के कार्यक्रमों को लेकर तैयारियां जोरों पर हैं. इस दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालु भक्त उपस्थित होते हैं.

गुरु के उपदेश अपनाएं : सांसद

संवाददाता। चाईबासा

सांसद गीता कोड़ा ने गुरु सिंह सभा गुरुद्वारा चाईबासा के द्वारा सोमवार को आयोजित प्रकाश उत्सव गुरु नानक देव जी जयंती के अवसर पर गुरुद्वारा में माथा टेका.इस श्रेष्ठ पौराणिक दिन के मौके पर उन्होंने गुरु नानक देव जी की महत्ता को बखान करते हुए उनके अद्भुत जीवन-दर्शन, उपदेश और सामाजिक दीक्षा की महत्ता को साझा किया.

सांसद गीता कोड़ा ने कहा कि गुरु नानक देव ने अपने जीवन में विचार,विचार और उदारता के माध्यम से सभी मानवता के लिए मार्गदर्शन किया. उनका संदेश धर्म, सेवा और समर्पण का है.जो आज भी हमारे समाज को प्रेरित कर रहा

है.गुरु नानक देव जयंती के इस अद्भुत अवसर पर सांसद गीता कोड़ा ने सभी नागरिकों से अपने जीवन में उनके मूल्यों को अपनाने और उनके उपदेशों का पालन करने का संकल्प लिया.

गुरु सिंह सभा की ओर से सांसद गीता कोड़ा का शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया.गुरुद्वारे में होने वाले कार्यक्रम संगत और पंगत में सांसद गीता कोड़ा ने भाग लिया. श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सामने माथा टेक कर देश व प्रदेशवासियों की सुख शांति के लिए अरदास की.इस अवसर पर सांसद गीता कोड़ा के साथ त्रिशानु राय,जितेन्द्र नाथ ओझा,दिकु सावैयां, राकेश सिंह,शंकर बिरुली,मथुरा चंपिया उपस्थित थे.

बिटकिलसोई में ग्रामसभा में दी गयी योजनाओं की जानकारी

संवाददाता। मनोहरपुर

सोमवार को सुदूरवर्ती सारंडा के दीघा पंचायत के बिटकिलसोई में मुखिया एग्नेश बारला की अध्यक्षता में सरकारी योजना से संबधित ग्राम सभा आयोजित किया गया. बैठक में श्री सोमेश्वर नाथ महादेव ट्रस्ट के जनप्रतिनिधि एवं ग्रामीण लाभुक उपस्थित थे. मुखिया एग्नेश बारला ने ग्राम सभा के बैठक में उपस्थित लोगों को सरकार संचालित योजनाओं के बारे जानकारी दिया. साथ ही आबुआ आवास योजना का लाभ अधिक से अधिक लोगों को उठाने की अपील किया. अबुआ आवास के लिए फ़ॉर्मेट का वितरण किया गया. 21 दिसंबर को दिघा पंचायत में आपकी योजना, आपकी सरकार, आपके द्वार शिविर का आयोजन किया गया है. प्रखंड के 34 गांवों समेत सारंडा के गरीब परिवारों को सरकारी विभिन्न योजनाओं समेत आबुआ आवास योजनाओं का लाभ दिलाने को लेकर श्री सोमेश्वर नाथ महादेव ट्रस्ट के द्वारा पंचायती राज व्यवस्था के अनुसार पंचायत के जनप्रतिनिधियों के साथ मिलकर ग्राम सभा किया जा रहा है.

खास बातें

- आबुआ आवास योजना के बारे में ग्रामीणों बताया गया
- 21 दिसंबर को दिघा पंचायत में लगेगा विशेष शिविर

जूनियर नेशनल आर्चरी चैंपियनशिप में अप्रैल पुरती ने जीता कांस्य पदक

चाईबासा लौटने पर हुआ स्वागत

संवाददाता। चाईबासा

राजस्थान में हाल ही में संपन्न 43वीं एनटीपीसी जूनियर नेशनल आर्चरी चैंपियनशिप में तांतनगर की महिला तीरंदाज अप्रैल पुरती ने ब्रोंज मेडल जीता है. वह सिकुरसाई में संचालित तुरतुंग तीरंदाजी प्रशिक्षण केंद्र की नियमित प्रशिक्षु है और तांतनगर प्रखंड के पासुबेड़ा गांव की रहनेवाली है. पदक जीतकर चाईबासा लौटने पर केंद्र में रविवार को प्रशिक्षुओं द्वारा उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया. उनको बधाई भी दी गयी.

केंद्र के मुख्य प्रशिक्षक महर्षि महेंद्र सिंकु के मुताबिक अप्रैल पुरती ने यह पदक झारखंड तीरंदाजी टीम का प्रतिनिधित्व करते हुए टीम स्पर्धा

में जीता है.प्रतियोगिता राजस्थान के भरतपुर में 15 से 22 नवंबर तक आयोजित की गयी थी देशभर के तीरंदाजों ने इसमें भाग लेकर अपने राज्य का प्रतिनिधित्व किया.अप्रैल पुरती को बधाई देनेवालों में कई लोग शामिल हैं. जिसमें केंद्र के अध्यक्ष नरेंद्र कुमार पाड़ेया, उपाध्यक्ष सुशील कुमार सिंकु,सलाहकार सिद्धार्थ पाड़ेया,तेजनारायण देवगम, संयुक्त सचिव हीरावती देवगम,कोषाध्यक्ष शैलेंद्र सावैयां, शिक्षक सुप्रभात कुसुम देवगम, सुधीर पाट पिंगुवा, क्रिकेट कोच सुभाष जोंको, सीनियर तीरंदाज जानो पुरती,जीवन देवगम, शीतल जारिका, वीरसिंह सुंडी आदि मौजूद थे.

दो जर्जर आंगनबाड़ी केंद्र दुर्घटना को दे रहे आमंत्रण

संवाददाता। किरीबुरु

छोटानागरा एवं राजाबेड़ा गांव में स्थित जर्जर आंगनबाड़ी केंद्र भवन में गरीब व मासूम बच्चे पढ़ने को मजबूर हैं. दोनों जर्जर भवनों का हिस्सा टूटकर गिरने से कभी भी बड़ी घटना घट सकती है. गांव के कई ग्रामीण आंगनबाड़ी केंद्र के इन जर्जर भवनों को देख डर से अपने-अपने बच्चों को यहां भेजने से अब मना करने लगे हैं.इस संबंध में छोटानागरा पंचायत की मुखिया मुन्नी देवगम ने कहा कि यह सही है कि दोनों आंगनबाड़ी केंद्र जर्जर हैं.प्लास्टर व भवन का हिस्सा समय-समय पर टूटकर गिरता रहता है. केंद्र में दरवाजा व खिड़कियां भी नहीं हैं.

ग्रामीण इसकी शिकायत हमसें

कई बार कर चुके हैं. इन दोनों केंद्र को जाकर देखा है. कई बार मनोहरपुर के तत्कालीन बीडीओ, विधायक व सांसद से लिखित व मौखिक शिकायत की गई है. लेकिन अब तक इस दिशा में सकारात्मक कार्य नहीं हुआ. पिछले दिनों योजना चयन अभियान के क्रम में भी ग्रामीणों ने ग्रामसभा से इन केंद्र के निर्माण की स्वीकृति दी है. पहले भी अनेकों बार नये आंगनबाड़ी केंद्र के भवन निर्माण के लिए लिखा गया है.

समाधान ग्रामीणों के लिए संजीवनी बनेगी मोबाइल चिकित्सा सुविधा: प्रभारी निदेशक

सारंडा संजीवनी मोबाइल चिकित्सा वाहन सुविधा प्रारंभ

संवाददाता। किरीबुरु

सेल की किरीबुरु-मेघाहातुबुरु जनरल अस्पताल प्रबंधन द्वारा 27 नवम्बर से सारंडा संजीवनी नामक मोबाइल चिकित्सा वाहन सुविधा प्रारम्भ किया. इस सुविधा का विधिवत उद्घाटन बतौर मुख्य अतिथि सेल, राउरकेला स्टील प्लांट के प्रभारी निदेशक (अतिरिक्त प्रभार, बोकारो स्टील प्लांट) अतनु भौमिक, विशिष्ट अतिथि कार्यपालक निदेशक (खनन, जेजीओएम, बीएसएल) जयदीप दास गुप्ता, कार्यपालक निदेशक (पीएंडए, बीएसएल) राजन प्रसाद, कार्यपालक निदेशक (खनन, आरएसपी) आलोक वर्मा, कार्यपालक निदेशक (पीएंडए, आरएसपी) तरुण मिश्रा, पिरामल

स्वास्थ्य के उपलक्ष्य एस रौय चौधरी, किरीबुरु - मेघाहातुबुरु जनरल अस्पताल के सीएमओ डॉ एम कुमार ने दीप प्रज्वलित कर तथा मोबाइल चिकित्सा वाहन को झंडा दिखाकर रवाना किये.

ग्रामीणों को भारी चिकित्सीय लाभ मिलेगा : प्रभारी निदेशक अतनु भौमिक ने कहा कि हेल्थ सभी के लिये जरूरी है. सेल अपने तमाम क्षेत्रों में स्वास्थ्य के क्षेत्र में बेहतर कार्य करते आ रही है. कोई भी बीमारी का डायग्नोसिस गांव स्तर पर इस योजना से हो पायेगा. ऐसा कार्य झारखंड व ओडिशा के परिधि क्षेत्र में किया जा रहा है. इससे हमारे ग्रामीणों को भारी चिकित्सीय लाभ मिलेगा.

कम लोगों को अस्पताल आना पडेगा : ईडी राजन प्रसाद ने कहा कि इस योजना के प्रारम्भ होने से प्रायः लोगों का इलाज उनके गांवों में हो जायेगा. कम लोगों को हीं अस्पताल आना पडेग़ा. सारंडा के ग्रामीणों को इसका व्यापक लाभ मिलेगा. सेल अस्पताल में चिकित्सकों व सुविधाओं की कमी अवश्य है. इससे अस्पतालों पर लोड घटेगा.

डेढ़ वर्षों के प्रयास से हुआ संभव : ईडी जयदीप दास गुप्ता ने कहा कि यहाँ स्टील बनाने के लिये काफी वर्षों से प्रयासरत हैं. सारंडा के गांवों में सेल अस्पताल को छोड़कर चिकित्सा की कोई सुविधा नहीं है. यह मोबाइल चिकित्सा सुविधा चलता फिरता अस्पताल होगा जो सारंडा के गांवों में जाकर मरीजों का इलाज करेगा. डेढ़ वर्षों के प्रयास से यह संभव हो पाया है. आज हीं गुआ में भी ऐसा एम्बुलेंस सुविधा प्रारम्भ करने जा रहे हैं. यह तीन वर्ष का एमओयू हुआ है. आगे भी जारी रहेगा. ईडी तरुण मिश्रा ने कहा कि सोसायटी बचपन से बहुत कुछ दिया है. यह मोबाइल चिकित्सा सुविधा सोसायटी को बहुत लाभ देगा. ईडी आलोक वर्मा ने कहा कि राष्ट्र के निर्माण के लिये स्टील का उत्पादन जिस तरह से जरुरी है उसी प्रकार खदान व आसपास के ग्रामीणों को स्वस्थ रखना.

खास बातें

- योजना से ग्रामीणों को भारी चिकित्सीय लाभ मिलेगा
- योजना के प्रारम्भ होने से लोगों का इलाज उनके गांवों में संभव

विशेष कमेटी के सदस्यों ने सुरक्षा उपायों को देखा

संवाददाता किरीबुरु

61 वां वार्षिक मेटलिफरस खान सुरक्षा सप्ताह के तहत सेल की किरीबुरु खदान में सौवेल, डंफर, डोजर,ड्रील मशीनों का आपरेटर ट्रेड टेस्ट के अलावे इलेक्ट्रिकल ट्रेड टेस्ट का आयोजन किया गया. आपरेटर ट्रेड टेस्ट के कन्वेनर एस यू मेद्दा के नेतृत्व में टीम के अन्य सदस्यों में सेल की किरीबुरु खदान से अरविंद शर्मा, मेघाहातुबुरु से प्रकाश गुप्ता, गुवा से डी के रजक एवं टाटा स्टील,नोवामुंडी से सद्दाब अनवर शामिल थे.इसी तरह इलेक्ट्रिकल ट्रेड टेस्ट के कन्वेनर कन्वेनर प्रमोद कुमार के नेतृत्व वाली टीम के सदस्यों में किरीबुरु से सी के विश्वाल, गुआ से डी गांगुली, नोवामुंडी से सोमनाथ कुंडू,

मेघाहातुबुरु से आर स्वांय शामिल थे. खान सुरक्षा निदेशालय द्वारा गठित उक्त दोनों टीम के पदाधिकारियों ने किरीबुरु खदान में खनन आपरेशन स्थल व इससे जुडे. भारी मशीनों के आपरेटरों व इलेक्ट्रिकल विभाग से संबंधित की जाने वाली सुरक्षा उपायों का बारीकी से अध्ययन व निरीक्षण किया.आपरेटरों से जरूरी सवाल किये. किरीबुरु के सीजीएम कमलेश राय ने निरीक्षण दल के पदाधिकारियों से कहा कि वह पारदर्शी तरीके से दोनों ट्रेड टेस्ट का निरीक्षण करें.

ब्रीफ खबरें

गोलमुरी में ठंड से वृद्धा की हुई मौत

जमशेदपुर। जमशेदपुर के गोलमुरी थाना अंतर्गत केबुल मैदान के पास रविवार देर रात एक वृद्धा का शव पाया गया. शव मिलने की सूचना स्थानीय लोगों ने पुलिस को दी. इधर,सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हाउस के शव गृह में रखवा दिया. थाना प्रभारी राजीव रंजन ने बताया कि वृद्धा आसपास के लोगों से भीख मांगकर अपनी गुजारा करती थी. बीती रात लोगों ने उन्हें कंबल दिया था. संभवतः ठंड से ही उसकी मौत हुई है.

निरसा में सड़क हादसे में दो युवक घायल

बलियापुर। निरसा बलियापुर मुख्य सड़क मार्ग सिंगियाटांड़ के पास सोमवार को दो बाइक के बीच टक्कर हो जाने से सिंगियाटांड़ निवासी हैदर शाह व बाघमारा निवासी रंजीत दास दोनों बाइक सवार गंभीर रूप से घायल हो गए. दुर्घटना के बाद लोगों ने घायल दोनों बाइक सवारों को इलाज के लिए बलियापुर सीएचसी में लाया. जहां चिकित्सक ने प्राथमिक उपचार के बाद शहीद निर्मल महतो मेमोरियल हॉस्पिटल धनबाद रेफर कर दिया.

कर्मचारी संघ ने की स्वास्थ्य विभाग की आलोचना

रांची। झारखंड में बढ़ते मच्छर जनित रोगों को लेकर एमपीडब्लू स्वास्थ्य कर्मियों ने विभाग की आलोचना की है. मंगल हेंब्रम ने कहा है कि 2008 से झारखंड राज्य को एमपीडब्लू स्वास्थ्य कर्मियों ने अपने कार्य के बदौलत जानलेवा रोगों से मुक्ति दिलाई थी. लेकिन स्वास्थ्य विभाग में कर्मचारियों की कमी के कारण कर्मियों को अन्य कामों में लगा दिया गया. इससे आज राज्य में मलेरिया, फाइलेरिया, कालाजार, चिकनगुनिया जैसी जानलेवा बीमारी पांव पसार रही है.

बीसीसीएल अधिकारियों ने मारपीट का विरोध किया

झरिया। भौंरा कांटा घर के पास सड़क जाम को लेकर बीसीसीएल मैनेजर के साथ मारपीट करने के विरुद्ध कई बीसीसीएल अफसर और क्लर्कों ने भौंरा थाना पहुंच कर विरोध किया. थाना प्रभारी कंचन कुमारी ने बताया कि आज दामोदर नदी में स्नान करने वालों की भीड थी और थाना मोड़ पर कांटा घर के कारण जाम हो गई. पुलिस जाम छुड़वा रही थी. इसी बीच डंपर चालक जोन महतो एवं एक बीसीसीएल मैनेजर रामेश्वर को चोट लग गई.

सीआईएसएफ ने 36 टन कोयला जब्त किया

झरिया। सोमवार को कुजामा बस्ती के चिमनी के पास सीआईएसएफ ने कोयला चोरों के खिलाफ अभियान चलाया. इस दौरान छापामारी की गई. छापामारी होते ही कोयला चोरों में हड़कंप मच गया. कोयला चोर भाग खड़े हुए. जहां से सीआईएसएफ ने लगभग 36 टन कोयला जब्त किया है. जप्त कोयले को कुजामा कोलियरी के प्रबंधन को सौंप दिया गया है. और कोयले को प्रबंधन के आदेश पर रेलवे साइडिंग में गिराया गया है.

वर्कशॉप से लाखों की लौह सामग्री की चोरी

झरिया। इन दिनों बीसीसीएल के भूलन बरारी में बंद रोपवे वर्कशॉप एवं स्टोर से प्रत्येक दिन लाखों रुपए की लौह सामग्री की चोरी चोरो द्वारा कीया जा रहा हैं. गुप्त सूचना के आधार पर जोरापोखर पुलिस ने छापामारी कर लगभग एक टन लोहा जप्त किया है. वहीं, लोहा चोरो की तलाशी में कई जगहों पर छापामारी की जा रही हैं. वही बताया जा रहा कि छापा मारी की सूचना लीक हो जाने के कारण लोहा से लदा टेम्पो को चोरो ने पुलिस के पहुंचने से कुछ देर पूर्व ही लोहा गिरा कर फरार हो गया.

बाबूलाल मरांडी के सौजन्य से बंटा कंबल

तिसरी। तिसरी प्रखंड में कड़कड़ाती ठंड को देखते हुए गरीब, असहाय लोगों को विधायक बाबूलाल मरांडी के सौजन्य से सोमवार को कंबल वितरण का कार्यक्रम तिसरी प्रखंड के खांटपोक, मनसाडीह में किया गया. इस दौरान सैकड़ों कंबल का वितरण किया गया. भाजपा नेता सोनू हेमब्रॉम और सुनील साव ने बताया कि यह कंबल विधायक बाबूलाल मरांडी के सौजन्य और सहयोग से दिया जा रहा है.

ढोरी, बीएंडके और कथारा से कोयला उत्पादन व डिस्पैच प्रभावित

संवाददाता । बेरमो

गिरिडीह सांसद चंद्रप्रकाश चौधरी के नेतृत्व में सोमवार को 21 सूत्री मांगों को लेकर बेरमो कोयलांचल के ढ़ोरी, बीएंडके और कथारा क्षेत्र से कोयला उत्पादन व डिस्पैच ठप कर दिया गया था. जिससे कोयला उत्पादन और डिस्पैच प्रभावित हुआ. लगभग 8 घंटे के बाद सीसीएल निदेशक तकनीकी बी साईराम ने एक पत्र जारी कर 2 दिसंबर को कोलकाता में सीआईएल के चेयरमैन और 3 दिसंबर को डीवीसी चेयरमैन के साथ वार्ता की जानकारी दी.

पत्र मिलने के बाद सासंद चन्द्रप्रकाश चौधरी ने चक्का जाम आंदोलन को स्थगित कर दिया. बताते चलें कि सीसीएल डिपार्टमेंटल और

आउटसोर्सिंग कंपनी को करोड़ों का नुकसान होने का अनुमान है. पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत परियोजना क्षेत्र में पहुंचकर कोयला उत्खनन में लगे मशीनों को बंद करा दिया. तत्पश्चात कोयले के भंडार से हो रहे डिस्पैच कार्य को भी ठप करा दिया गया. इससे बेरमो कोयलांचल के सीसीएल परियोजना में कोयला उत्पादन व डिस्पैच ठप रहा. विस्थापितों का नेतृत्व कर रहे एनडीए सांसद चंद्रप्रकाश चौधरी ने अमलो चेक पोस्ट के समीप खुद विस्थापित के साथ बैठकर छठ नृत्य घंटों देखते रहे. सांसद ने कहा विस्थापितों के साथ अत्याचार किया जा रहा है. कहा कि जब तक विस्थापितों के अधिकार की बात नहीं होगी, तब तक आंदोलन चलता रहेगा.

डीवीसी प्लांट में रैक को आंदोलनकारियों ने लौटाया

बोकारो थर्मल। गिरिडीह सांसद चंद्रप्रकाश चौधरी के नेतृत्व में बोकारो थर्मल और चंद्रपुरा पावर प्लांट तथा सीसीएल के बीएंडके, ढोरी व कथारा एरिया में 13 सूत्री मांगों को लेकर सोमवार से अनिश्चितकालीन चक्का जाम आंदोलन शुरू हो गया था. प्लांट के मुख्य गेट पर दो बड़े पंडाल बनाये गये थे और आंदोलनकारियों के लिए तीनों टाइम का भोजन और रहने की व्यवस्था की गई थी. मगर वार्ता का पत्र मिलने के बाद सांसद ने आंदोलन को वापस ले लिया. सांसद ने कहा कि मामले को लोकसभा में उठाएंगे. 1952 से यहां के विस्थापित डीवीसी प्रबंधन का शोषण सहते आ रही है. अब तक फुट डालो और राज करो की राजनीति करते रही है. पूरी तरह से विस्थापित और रैयत कमर कस लिए हैं. गोमिया विधायक डॉ. लंबोदर महतो ने कहा कि यहां के रैयत को डीवीसी प्रबंधन ने उज्जवल भविष्य का सपना दिखाकर जमीन लिया और उन्हें विस्थापित कर दिया. लेकिन उनका सपना एक सपना ही बनकर रह गया. उन्हें मूलभूत सुविधाओं से आज तक वंचित रखा गया. रोजगार की बात तो बहुत दूर है. कहा कि बोकारो थर्मल में बिजली उत्पादन होती है और बांग्लादेश की गलियां रोशन हो रही है.

आओ जानें सामान्य ज्ञान

- भारत में खोजा गया सबसे पुराना शहर कौन है – हड़प्पा
- किसे विद्रोही कवि कहा जाता है – काजी नजरुल इस्लाम
- मयूर सिंहासन को बनाने वाले कलाकार का क्या नाम था – बादल खां
- पंकज आडवाणी किस खेल से संबंधित हैं – बिलियर्ड
- किस राज्य में मिशन दक्ष लॉन्च किया गया – बिहार
- तवावोहर झील किस राज्य में है – मध्यप्रदेश
- भारत में बांस का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य – असम
- भारत वर्ष 2024 में किसकी अध्यक्षता करेगा – अंतरराष्ट्रीय चीनी संगठन
- लोकसभा में किस आधार पर सीटें बांटी जाती हैं – जनसंख्या
- किसे फलोद्यानों का स्वर्ग कहा जाता है – सिक्किम

घांटाबाड़ी धोरोमगाढ़ में 23वां अंतरराष्ट्रीय सरना धर्म महासम्मेलन का मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने किया शुभारंभ, बोले

जब तक हम सीएम हैं, तब तक प्लांट नहीं लगेगा

संवाददाता । बेरमो

बोकारो जिला के ललपनिया स्थित लुगूबुरु घांटाबाड़ी धोरोमगाढ़ में 23वां अंतर्राष्ट्रीय सरना धर्म महासम्मेलन को सीएम हेमंत सोरेन ने शुभारंभ किया. मौके पर लोगों को संबोधित करते हुए सीएम हेमंत सोरेन ने कहा कि जब तक वह मुख्यमंत्री हैं किसी भी कीमत पर लुगू पहाड़ पर डीवीसी का हाइडल पावर पंप स्टोरेज प्लांट नहीं लगेगा. उन्होंने कहा कि लुगूबुरु में कुछ लोग खुसुर फुसुर कर रहे थे, लेकिन उनके पास किसी तरह का लिखित प्रस्ताव नहीं आया था. लुगूबुरु आदिवासी समाज की सबसे बड़ी धरोहर है. यहां सदियों से आदिवासी समाज के लोग आते रहे हैं. इसकी रक्षा मिलजुलकर करनी है. आदिवासी समाज को हर क्षेत्र में आगे बढ़ना होगा, तभी समाज का भला होगा.

कहा कि विश्व में जहां भी आदिवासी समुदाय के लोग हैं, वे समाज की नीति निर्माण करने का कार्य किया है. लेकिन आज ताकत से नहीं ज्ञान से आगे बढ़ना होगा. शिक्षा को ग्रहण करना होगा. देश में इकलौता आदिवासी मुख्यमंत्री वे हैं, इसलिए षड्यंत्र के तहत हटाने में कुछ लोग लगे रहते हैं. मौजूदा समय में आदिवासी समाज के बहुत कम आईएएस, आईपीएस, डॉक्टर, इंजीनियर हैं. जब तक सभी क्षेत्रों में समाज के लोग आगे नहीं बढ़ेंगे, तब तक समाज का भला नहीं हो सकेगा.

मद्य निषेध मंत्री बेबी देवी ने टेका मत्था : 23वें अंतरराष्ट्रीय सरना धर्म महासम्मेलन में सूबे की मद्य निषेध मंत्री बेबी देवी लुगूबुरु घांटाबाड़ी धोरोमगाढ़ पहुंची. उन्होंने पुनाय थान में पूजा-अर्चना कर राज्य की सुख-समृद्धि की कामना की. इसके बाद मंत्री बेबी देवी ने सीएम के साथ मंच साझा की. मौके पर दर्जा प्राप्त मंत्री योगेंद्र प्रसाद, पूर्व विधायक बबिता देवी, झामुमो के जिला अध्यक्ष हीरालाल मांझी, नेपाल के पूर्व सांसद मोहन टुडू सहित अन्य लोग मौजूद थे.

बोले हेमंत

- लुगूबुरु आदिवासी समाज की सबसे बड़ी धरोहर है
- ललपनिया में स्थित है लुगूबुरु घांटाबाड़ी धोरोमगाढ़

समिति ने सीएम को 11 सूत्री मांग पत्र सौंपा

लुगूबुरु घांटाबाडी धोरोमगाढ़ समिति के अध्यक्ष बबुली सोरेन व सचिव लोबिन मुर्मू ने 11 सुत्री मांग पत्र सौपा .मांग पत्र में प्रतिवेदन के माध्यम समिति के अध्यक्ष बबुली सोरेन लुगू पहाड़ मे डीवीसी द्वारा प्रस्तावित 1500 मेगावाट हाइडल पावर टीएसी की बैठक रद्द करने के प्रस्ताव पर तमाम संथाल समाज की ओर हेमंत सरकार को बधाई दी. समिति के पदाधिकारी व सदस्य थे मुस्तैद दोरबार चट्टानी स्थित पुनाय थान से लेकर मंच तक लुगूबुरु घांटाबाड़ी धोरोमगाढ़ समिति के अध्यक्ष बबुली सोरेन, सचिव लोबिन मुर्मू, उपाध्यक्ष बाहाराम हांसदा, उपसचिव मिथिलेश किस्कू, संयोजक मितन सोरेन, सतीशचंद्र मुर्मू, जयराम हांसदा, लुदू मांझी, दिलीप मरांडी, दिनेश मुर्मू, बुधन सोरेन, सुखराम बेसरा, मुखिया बबलू हेम्ब्रम, दशरथ मार्डी, अंजन हेम्ब्रम, धनीराम मांझी, भुनेश्वर टुडू, फुलचंद हेम्ब्रम, रजीलाल सोरेन, गुरुलाल मांझी, कमल बेसरा, वहीं लुगू पहाड़ में लुगूबुरु पुनाय थान ट्रस्ट समिति अध्यक्ष सुरेंद्र टुडू, आलोक हेम्ब्रम, राजेश मुर्मू, सावन हेम्ब्रम सहित समिति ने अन्य सदस्यों काफी सक्रिय थे.

संथाली बालाओं ने किया पारंपरिक तरीके से स्वागत

सीएम हेमंत सोरेन के पुनाय थान पहुंचने पर मुख्य द्वार पर संथाली बालाओं ने पारंपरिक तरीके से स्वागत किया. बालाओं ने सीएम के माथे पर तिलक तथा जल छिड़का. इसके बाद पुनाय थान पूजा करने के बाद पारंपरिक परिधान पहनी बालाएं माथे पर लोटा लिये पारंपरिक नृत्य व गीत गाते हुए सीएम को मंच तक ले गयीं. सीएम और मंचासीन अतिथियों का लोटा पानी से स्वागत किया गया. इसके बाद संथाल आदिवासी बालिकाओं ने मनमोहक पारंपरिक नृत्य प्रस्तुत किया. जिसे मंचासीन अतिथियों व श्रद्धालुओं ने भरपूर आनंद उठाया और ताली बजाकर उनका हौसला अफजाई की.

सभी आठ बस स्टैंड फुल

ललपनिया में आयोजित सरना धर्म महासम्मेलन में शनिवार से ही श्रद्धालुओं का पहुंचना शुरू हुआ, जो सोमवार तक जारी रहा. श्रद्धालुओं के वाहनों के ठहराव के लिए आठ अलग-अलग जगहों पर वाहन पार्किंग बनाई गई थी, जो वाहनों पूरी तरह फुल हो गया था. पार्किंग स्थल भर जाने के कारण दर्जनों वाहन टीटीपीएस आवासीय कॉलोनी में सड़क किनारे भी खड़े थे.

सीएम ने पत्नी कल्पना सोरेन के साथ की पूजा

सीएम हेमंत सोरेन हेलीपैड से सीधे दोरबार चट्टानी स्थित पुनाय थान अपने पारंपरिक पोषक में पत्नी कल्पना सोरेन के साथ पहुंचे, जहां पाहन फेनीराम सोरेन, मझला मुर्मू, रामलाल सोरेन सहित सहयोगियों ने सीएम तथा उनकी पत्नी कल्पना सोरेन, मद्यनिषेध मंत्री बेबी देवी, परिवहन मंत्री चंपई सोरेन को आराध्य देव की विधिवत पूजा-अर्चना करायी. सीएम ने नारियल फोड़कर तथा पुनाय थान में माथ टेककर राज्य व राज्यवासियों की सुख-समृद्धि की कामना की.

अपनी सभ्यता-संस्कृति को नहीं मिटने देंगे : चंपई

सम्मेलन को परिवहन मंत्री चंपई सोरेन ने भी संबोधित किया. उन्होंने कहा कि जिस प्रकार अन्य धर्म के लोगों के लिए ग्रंथ लिखा हुआ है, उसी प्रकार आदिवासी समाज के लिए नगम में दर्ज है. आदिवासी समाज का पहाड़ और पर्वत पर उद्गम स्थल रहा है. कई पीढ़ियों का इतिहास यहां से जुड़ा हुआ है. हम अपनी सभ्यता-संस्कृति को नहीं मिटने देंगे. इसके साथ ही पाहन, मांझी, नायक को गांव-गांव में ओलिचिकि भाषा में लोगों को जागृत करना होगा.

धर्म महासम्मेलन में जुटे लाखों श्रद्धालु

एक अनुमान के अनुसार 23वें अंतरराष्ट्रीय सरना धर्म महासम्मेलन में झारखंड सहित अन्य प्रदेशों व विदेशों से लगभग सात से आठ लाख श्रद्धालुओं का महाजुटान हुआ. 25 नवंबर से श्रद्धालुओं के आने का सिलसिला जारी हुआ, जो रविवार रात तक अनवरत जारी रहा. सभी श्रद्धालु सीतानाला झरना में स्नान कर लुगू पहाड़ चढ़ने के मुख्य द्वार पर माथा टेक लुगू पहाड़ की खड़ी सात किलोमीटर चढाई चढकर लुगू गुफा पहुंचे.

सीता झरना में श्रद्धालुओं ने की पूजा

लुगू पहाड़ की तलहटी स्थित सीतानाला झरना के पास पौराणिक लुगू बाबा, लुगू आयो छटका द्वार पर पूजा-अर्चना के लिए लंबी कतार लगी थी, वहीं झरना के पास पेड़ों की टहनियों से गिरते पानी को बोतलों में भरने के लिए भी काफी भीड़ जमी थी. यहां संथाल आदिवासी महिला-पुरुषों में पूजा-अर्चना को लेकर अद्भूत आस्था देखी गई. यहां स्थित गुफा को छटका अर्थात आंगन कहा जाता है.

सरना धर्म महासम्मेलन में जिला प्रशासन भी रहा सक्रिय

लुगूबुरु घांटाबाड़ी धोरोमगाढ़ में आयोजित 23वें अंतरराष्ट्रीय सरना धर्म महासम्मेलन में जिला प्रशासन ने भी काफी सक्रिय भूमिका निभाई. कार्यक्रम में डीसी कुलदीप चौधरी, एसपी प्रियदर्शी आलोक, डीडीसी कीर्ति श्री जी, अपर नगर आयुक्त सौरभ भुवानिया, चास एसडीओ दिलीप प्रताप सिंह शेखावत व बेरमो एसडीओ शैलश कुमार मौजूद थे.

रिट याचिका को हाईकोर्ट ने किया स्वीकार

संवाददाता । रांची

जेएसएससी द्वारा फिजिकल एजुकेशन टीचर पद के लिए बीसीए और बीबीए की शैक्षणिक योग्यता रखने वाले अभ्यर्थी पूर्णिमा कुमारी, अभिजीत कुमार सिन्हा व आशुतोष कुमार की कटऑफ से ज्यादा अंक आने के बाद भी उम्मीदवारी स्वीकार नहीं करने के मामले को लेकर दायर रिट याचिका को हाईकोर्ट ने स्वीकार कर लिया.

कोर्ट ने प्रार्थी को फिजिकल एजुकेशन के शिक्षक पद की नियुक्ति प्रक्रिया में कंसीडर करने का निर्देश जेएसएससी को दिया है. प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता अमृतांश वत्स ने पक्ष रखा. पूर्व में हुई सुनवाई के दौरान हाईकोर्ट ने मुकेश रंजन व राजदेव सिंह के मामले में अपने आदेश में कहा था कि बीसीए साइंस स्ट्रीम का अभिन्न अंग है. यहां बता दें कि जेएसएससी ने ट्रेंड ग्रेजुएट

करें कंसीडर

- अभ्यर्थी पूर्णिमा कुमारी ने रिट याचिका दायर की थी
- फिजिकल एजुकेशन के शिक्षक पद की नियुक्ति का है मामला

टीचर, फिजिकल एजुकेशन के विज्ञापन संख्या 21/ 2016 में अभ्यर्थियों के लिए साइंस, आर्ट्स या कॉमर्स स्ट्रीम में 45% अंक के साथ ग्रेजुएशन की अर्हता निर्धारित की थी. जबकि प्रार्थी के पास बीबीए, बीसीए की डिग्री थी. उक्त परीक्षा में कटऑफ से ज्यादा अंक लाने के बाद भी जेएसएससी ने डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन के समय प्रार्थी का कैंडिडेचर रद्द कर दिया था. जिसे उसने हाईकोर्ट में चुनौती दी थी.

डीएनए रिपोर्ट पेश करने के लिए एसपी ने कोर्ट से मांगा वक्त

रांची। मानव तस्करी मामले में बरामद लड़के के डीएनए रिपोर्ट को पेश करने के लिए साहेबगंज एसपी ने हाईकोर्ट से समय मांगा है. गौरतलब है कि साहेबगंज जिले में मानव तस्करी से जुड़े एक मामले में आरोपी कुलदेव साह की दो क्रिमिनल अपील केस में साहेबगंज एसपी नौशाद आलम ने हाईकोर्ट में शपथ पत्र दाखिल किया है. एसपी ने हाईकोर्ट से समय देने का आग्रह किया है कि डीएनए टेस्ट लंबी प्रक्रिया है, जिसमें लगभग 30 दिन का समय लगता है. ऐसे में इस मामले में डीएनए रिपोर्ट दाखिल करने के लिए अतिरिक्त समय दिया जाए. बता दें कि इस मामले की सुनवाई 28 नवंबर को जस्टिस सुजीत नारायण प्रसाद की खंडपीठ में होने वाली है.

जानें क्या है मामला

जानकारी के मुताबिक, कुलदेव साह व वीरेंन साह के खिलाफ परिवादी एम हेंब्रम ने साहेबगंज कोर्ट में अपने बेटे की चाइल्ड ट्रैफिकिंग करने को लेकर कंप्लेन केस दर्ज कराई थी. उनका बच्चा वर्ष 2018 से लापता है. वहीं बोरियो थाना में कुलदेव साह और पप्पू साह के खिलाफ दर्ज कांड संख्या 2020/ 2022 में बी हांसदा ने अपने छोटे भाई की वर्ष 2014 में लापता होने को लेकर प्राथमिकी दर्ज कराई थी.

साहिबगंज एसपी से आज पूछताछ

संवाददाता । रांची

साहिबगंज के एसपी नौशाद आलम को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) मंगलवार को पूछताछ करेगी. बता दें कि इससे पहले बीते 22 नवंबर को ईडी ने एसपी नौशाद आलम को पूछताछ के लिए उपस्थित होने को कहा था. लेकिन एसपी नौशाद आलम के द्वारा ईडी को पत्र भेज कर उपस्थित होने के लिए दूसरी तारीख मांगी गई थी. जिसके बाद ईडी ने 22 नवंबर को ही नौशाद आलम को दूसरा समन भेज कर कर 28 नवंबर को पूछताछ के लिए उपस्थित होने को कहा था.

मुख्यालय से मंतव्य मांगा था : नौशाद आलम के द्वारा ईडी को लिखे कहा गया था कि उन्होंने पुलिस मुख्यालय से मामले को लेकर सुझाव मांगा है. ऐसे में उन्हें कुछ दिनों की मोहलत दी जाए और पूछताछ के लिए दूसरी तिथि निर्धारित की जाए. नौशाद आलम ईडी के जोनल कार्यालय जाने के लिए रांची पहुंच चुके थे. ईडी दफ्तर जाने से पूर्व नौशाद आलम झारखंड पुलिस मुख्यालय गए और अधिकारियों को पूरे मामले की जानकारी दी और अपने साथ ले गए डॉक्यूमेंट भी उन्होंने अधिकारियों को दिखाया.

क्या है आरोप : एसपी नौशाद आलम पर अवैध खनन मामले में ईडी के गवाह रहे विजय हांसदा को दिल्ली जाने के लिए टिकट की व्यवस्था करने का आरोप है. ईडी ने 10 नवंबर को समन भेज कर एसपी नौशाद आलम को पूछताछ के लिए 22 नवंबर को रांची के हिनू स्थित क्षेत्रीय कार्यालय में हाजिर होने का निर्देश दिया था. उनपर साहिबगंज में अवैध खनन के गवाह विजय हांसदा को भड़काने का आरोप है. उन पर पंकज मिश्रा बनाम विजय हांसदा मामले में उसे दिल्ली भेजने के लिए टिकट की व्यवस्था कराने का भी आरोप है. ईडी ने जांच में पाया था कि विजय को सुप्रीम कोर्ट में चल रहे मामले में अपना पक्ष रखने दिल्ली जाना था.

विजय हांसदा मामले में भूमिका से किया इनकार

जानकारी के अनुसार, नौशाद आलम ने ईडी के गवाह रहे विजय हांसदा मामले में अपनी कोई भी गलत भूमिका होने से इनकार किया है. पुलिस मुख्यालय को नौशाद आलम द्वारा यह बताया गया है कि साहिबगंज पुलिस ने विजय हांसदा को कोर्ट के निर्देश पर बॉडीगार्ड उपलब्ध कराया गया था. जब नौशाद आलम ने साहिबगंज एसपी का पदभार ग्रहण किया, उसके बाद विजय हांसदा ने सुप्रीम कोर्ट में एक केस के सिलसिले बॉडीगार्ड के साथ दिल्ली जाने को लेकर आवेदन दिया था.

विरोध सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में नाखुश थे लाभुक, कहा सिर्फ खानापूर्ति कर रहे अधिकारी

सरकार को बदनाम करने में लगे हैं अधिकारी: अरुण

संवाददाता । मैथन

उपायुक्त धनबाद वरूण रंजन के निर्देश पर सोमवार को चिरकुंडा नगर परिषद के वार्ड संख्या 2 में दोबारा सरकार आपके द्वार शिविर का आयोजन किया गया. लाभुक खुश थे कि शायद अब उनकी समस्या का समाधान ऑन द स्पॉट हो जाएगा. खुशी से दुबारा लगे शिविर में अपनी समस्या को लेकर पहुंचे. परंतु उन्हें निराशा ही हाथ लगी.

जब खुद मौके पर मौजूद जिला आपूर्ति पदाधिकारी प्रदीप कुमार शुक्ला द्वारा समस्या लेकर पहुंचे लाभुकों को साफ शब्दों में कह दिया गया कि जब तक आप ऑनलाइन आवेदन भरकर के नहीं आएंगे, तब तक आपका कोई मदद आपूर्ति विभाग नहीं कर पाएगा. इस पर लाभुकों ने काफी नाराजगी जताई. शिविर में केवल लाभुकों का जनवितरण में नाम सुधारना, जोड़ना, मृतक का नाम हटाना, नया कार्ड बनाना आदि ऑफ लाइन आवेदन ही जमा हो पाया, जो लंबित रहा. मौके पर उपस्थित युवा राजद के जिलाध्यक्ष बिट्टू मिश्रा व वार्ड संख्या दो के निवर्तमान पार्षद प्रतिनिधि प्रो. अरुण कुमार ने कहा कि हेमंत सोरेन सरकार को बदनाम करने पर खाद्य सुरक्षा विभाग के अधिकारी लगे हुए हैं. कहा कि जब सरकार जनता की समस्याओं का समाधान करने के लिए आपके द्वार पहुंच रही है, तो फिर जनवितरण के लाभुकों को ऑनलाइन आवेदन भरने के लिए इधर उधर क्यों जाना पड़ेगा. लाभुक बड़े उम्मीद के साथ शिविर में पहुंचते हैं, मगर अधिकारी जनवितरण से संबंधित समस्याओं का निष्पादन करने की बजाय तरह-तरह के बहाने बनाकर लाभुकों को लौटा दिया गया. लाभुकों ने आरोप लगाया कि शिविर खानापूर्ति के लिए ही लगाया गया है. वहीं वार्ड संख्या दो कि निवर्तमान पार्षद भारती कुमारी ने पत्र देकर नोडल पदाधिकारी के माध्यम से संबंधित खाद्य आपूर्ति विभाग के अधिकारी पर कार्रवाई करने की मांग उपायुक्त से की है.

शिविर में जनवितरण के लाभुकों ने उपायुक्त धनबाद से गुहार लगाई है कि उनकी समस्याओं का समाधान ऑन द स्पॉट करने की व्यवस्था किया जाय, ताकि राज्य सरकार का जो उद्देश्य है, वह पूरा हो सके. शिविर में नोडल पदाधिकारी अरूण कुमार बड़ाईक, कनीय अभियंता उत्तम कुमार सुबह से ही सक्रिय दिखे.

लाभुक नाराज

- लाभुकों को जनवितरण में नाम सुधारना व जोड़ना था
- लाभुक बड़े उम्मीद के साथ शिविर में पहुंच रहे हैं

मामला : अयोग्य संवदेक को आपूर्ति आदेश देने का

इंजीनियर नजरे इमाम की दो वेतन वृद्धि रोकने का आदेश

संवाददाता । रांची

राज्य सरकार ने पेयजल एवं स्वच्छता विभाग आदित्यपुर कार्य प्रमंडल के तत्कालीन कार्यपालक अभियंता नजरे इमाम की दो वार्षिक वेतन वृद्धि रोकने का आदेश दिया है. नजरे इमाम अभी सहायक अभियंता सीडीओ पेयजल एवं स्वच्छता विभाग में पदस्थापित हैं.

उनके विरुद्ध आदित्यपुर में पदस्थापन काल में निविदा फाइनल करने में नियमों की अवहेलना कर पदीय शक्तियों का दुरुपयोग करते हुए अयोग्य संवेदक को आपूर्ति आदेश देने का आरोप लगा था. उन्होंने तय आपूर्ति आदेश के विपरीत बिना आईएसआई मार्का के ब्लीचिंग पाउडर की सप्लाई लेने व बिना गुणवत्ता वाले जल की आपूर्ति करने पर आरोप लगा था. पूरे मामले की विभागीय जांच करायी गयी, जिसमें प्रथम दृष्टया आरोप प्रमाणित पाया गया. उनसे सितंबर 2023 में शो कॉज भी पूछा गया था. पूरे मामले की समीक्षा के बाद आरोप सही पाते हुए उनके खिलाफ कार्रवाई का फैसला लिया गया व दो वार्षिक वेतन वृद्धि प्रभाव से रोकने का दंड दिया गया है.

दिया आदेश

- इमाम सीडीओ पेयजल विभाग में पदस्थापित हैं
- मामले की विभागीय जांच में आरोप की पुष्टि हुई थी

ब्रीफ खबरें

अबुआ आवास के लिए आए 288 आवेदन

धनबाद । सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में लोगों की रुचि अबुआ आवास योजना में ज्यादा दिख रही है. श्री बीएचके के आवास के लिए ज्यादा से ज्यादा लोग आवेदन कर रहे है. सोमवार को बाघमारा प्रखंड के कुमारजोरी पंचायत और चिरकुंडा नगर परिषद के वार्ड संख्या 2 में आयोजित शिविर में इस योजना के लिए कुल कुल 228 आवेदन आए. डीसी ने बताया कि कुमारजोरी पंचायत के शिविर में अबुआ आवास योजना के लिए सबसे अधिक आवेदन आए है.

पेड़ों की कटाई मामले में तीन पर प्राथमिकी

चाकुलिया । चाकुलिया प्रखंड के माटियाबांधी आंचलिक प्लस टू हाई स्कूल परिसर से अज्ञात लोगों द्वारा विगत रविवार को दिन दहाड़े यूकेलिप्टस के 18 पेड़ अवैध रूप से काटे जाने और अधिकांश लकड़ियों को पिक अप वैन से टपा देने के मामले में तीन लोगों के खिलाफ थाना में प्राथमिक की दर्ज की गई है. प्राथमिक विद्यालय की प्रधानाध्यापिका के निर्देश पर सहायक शिक्षक भूपेन गोप के बयान पर दर्ज की गई है. प्राथमिक में मनींद्र महतो, समीर महतो और रेवाकांत पर नामजद प्राथमिकी दर्ज हुई है.

विधायक ने किया पीसीसी पथ का शिलान्यास

महुदा । जिला खनिज फाउंडेशन ट्रस्ट योजना अंतर्गत महुदा क्षेत्र के राधानगर हरिजन टोला से रेलवे लाईन तक पीसीसी पथ निर्माण कार्य का शिलान्यास सोमवार को विधायक प्रतिनिधि शत्रुघन महतो व जिला परिषद अध्यक्ष शारदा सिंह के प्रतिनिधि शेखर सिंह ने संयुक्त रूप से नारियल फोड़कर किया.
विधायक प्रतिनिधि ने कहा कि ग्रामिणों की मांग पर इस पीसीसी पथ का निर्माण किया जा रहा है.इस सड़क के बनने से क्षेत्र के लोगों को काफी सहुलियत होगी.

गंगा मेडिकल में हुई 15 हजार रु. की चोरी

सिंदरी । सिंदरी के सुप्रसिद्ध दवाईयों की दुकान गंगा मेडिकल में रविवार की देर रात चोरी की घटना प्रकाश में आई है. सोमवार की सुबह लगभग आठ बजे गंगा मेडिकल संचालक रणधीर सिंह दुकान खोलने पर देखा कि छत पर लगे सीट और फाल्स सिलिंग टूटा हुआ है. बताया कि दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे की फुटेज जाँच करने पर पता चला कि छत पर रॉड रखा हुआ है और शायद इसी से घटना को अंजाम दिया गया होगा. बताया कि लगभग बारह हजार रुपए की नकदी समेत चार डिटॉल की बोतल गायब है.

कीनामाड़ में हरियाली ढाबा का हुआ उद्घाटन

लातेहार । शहर के कीनामाड़ में हरियाली ढाबा का उद्घाटन सोमवार को आजसू जिला अध्यक्ष अमित पांडेय ने फीता काटकर किया. उन्होंने कहा कि शहर में ढाबा खुलना विकास का परिचायक है. उन्होंने कहा कि ढाबा को काफी स्वच्छ व सुंदर बनाया गया है. यहां लोग परिवार के साथ आकर भोजन का आनंद ले सकते हैं. ढाबा संचालक दीपक पांडेय ने उनके प्रतिष्ठान में बाहर के रसोइयों के द्वारा सभी प्रकार के व्यंजन बनाये जायेगें. मौके पर अभिजीत कुमार मौजूद थे.

दो माह में ही पीसीसी सड़क में आयी दरार

लातेहार । शहर के केश्वर अहरा बांध पीसीसी सड़क में दो माह में ही दरार आ गयी. तकरीबन आठ लाख रूपये की लागत से नगर पंचायत के द्वारा इस सड़क का निर्माण कराया गया है. संवेदक आफताब खुस्तर के द्वारा उक्त पीसीसी सड़क का निर्माण कराया गया है. लेकिन मात्र दो माह में ही पीसीसी सड़क में दरार आ जाने से लोग अचंभित हैं. लोगों का कहना है कि इस पीसीसी सड़क निर्माण योजना में प्रारंभ से ही अनियमितता बरती गयी है.

कुत्तों के आतंक से लोग हैं काफी परेशान

लातेहार। इन दिनों डॉग बाईट के मामलों मे बढ़ोतरी देखी जा रही है. शहर के पानी टंकी व कचहरी के पास कुत्तों का आंतक है. इन क्षेत्रों में पिछले दो दिनों में कुत्तों ने 14 लोगों को काटा है. रविवार को नौ लोगों को कुत्तों ने काटा एवं सोमवार को पांच लोगों को कुत्तों काट लिया. सभी को सदर अस्पताल में ऐंटी रेबिज का इंजेक्शन दिया गया. चिकित्सा पदाधिकारी डा अखिलेश्वर प्रसाद ने बताया कि पिछले दो तीन दिनों में डॉग बाईट के केसों में वृद्धि देखी जा रही है.

उपायुक्त ने सभी स्ट्रीट लाइटों को दुरुस्त करने और नई स्ट्रीट लाइट लगाने का आदेश दिया था

डीसी के आदेश के बाद भी नहीं लगी नई स्ट्रीट लाइट

संवाददाता । धनबाद

अंधेरी गलियों एवं सड़कों को रोशन करने का उपायुक्त के निर्देश का नगर निगम पर कोई असर नहीं हुआ है. उपायुक्त वरुण रंजन ने दुर्गापूजा से पहले ही सभी स्ट्रीट लाइटों को दुरुस्त करने एवं जिस क्षेत्र में अंधेरा है वहां नई स्ट्रीट लाइट लगाने का आदेश दिया था. बावजूद इसके एक महीने बाद भी नई स्ट्रीट लाइट लगाने का कार्य अब तक शुरू भी नहीं हुआ है. नगर निगम द्वारा पिछले एक महीने में एक भी नई स्ट्रीट लाइट नहीं लगाया गया है. उपायुक्त के निर्देश पर निगम द्वारा दुर्गापूजा से छठ के बीच खराब पड़े 1500 स्ट्रीट लाइटों में से 1000 को ठीक कराया गया है. उपायुक्त के आदेश के बाद नगर आयुक्त रवि राज शर्मा ने सभी सुपरवाइजर एवं स्वच्छता पर्यवेक्षक को अंधेरे क्षेत्रों की लिस्ट बना कर देने का निर्देश दिया था.

इस मामले पर नगर निगम के सहायक अभियंता (विद्युत) जय कुमार ने बताया कि संबंधित एजेंसी को लिस्ट दे दी गई हैं. संभवतः दिसंबर महीने से नई लाइट लगाने का कार्य शुरू हो जाएगा. बता दें कि शहर में 15000 नये एलईडी लाइट लगाये जायेंगे. मुख्यालय से 15000 एलइडी लाइट की स्वीकृति मिल गयी है. शहर में जहां-जहां एलइडी लाइट नहीं लगी है, वहां नयी एलईडी लाइट लगायी जाएंगी. नगर निगम क्षेत्रों के सभी वार्डों के एक-एक मुहल्ले में लाइट लगनी है. शहर में पहले से 24 हजार एलईडी लाइट है. 15 हजार और एलइडी लाइट लगने से शहरी क्षेत्र के गली-मुहल्ले भी जगमग करने लगेंगे. 15 हजार एलइडी लाइट पर लगभग 15 करोड़ खर्च होगा. कंपनी को सात साल तक इसका मेंटेनेंस करना है.

बतातें चलें कि इएसएसएल कंपनी ने वर्ष 2016-17 में 20 करोड़ की लागत से 14804 स्ट्रीट लाइट लगाया था. सूर्या कंपनी ने 9.60 करोड़ की लागत से 1320 स्ट्रीट लाइट लगाये थे.

असर नहीं

- निगम ने 1000 स्ट्रीट लाइटों को ठीक कराया था
- शहर में 15000 नई एलईडी लाइट लगायी जाएंगी

आओ जानें

सामान्य ज्ञान

- पाकिस्तान के किस क्रिकेटर ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा की – इमाद वसीम
- ऋषभदेव का उल्लेख किसमें मिलता है – ऋग्वेद
- भारत में गेहूं का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य – उत्तर प्रदेश
- भारत में निर्मित पहले कंप्यूटर का नाम – सिद्धार्थ
- महावीर के निर्वाण के बाद जैन संघ का अगला अध्यक्ष कौन था – सुधर्मन
- मसलो का बगीचा किस राज्य को कहा जाता है – केरल
- श्रीनगर की स्थापना किस शासक ने की थी – अशोक
- चेंबराबक्कम झील किस राज्य में है – तमिलनाडु
- चित्रित धूसर मृदभांड का संबंध किस काल से है – वैदिक सभ्यता
- मानव शरीर में विटामिन ए कहां जमा होता है – यकृत

मेदिनीनगर में कई जगह तो सिग्नल का खंभा गिरने के कगार पर

एक साल से बंद हैं शहर की सभी सिग्नल लाइट

संजीत यादव । पलामू

पलामू जिले में इन दोनों ट्रैफिक व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा गई है. शहर में हर जगह जाम ही जाम देखने को मिल रहा है. रेड़मा से छहमुहान चौक तक घंटों जाम के कारण लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है. जाम को देखते हुए पलामू पुलिस द्वारा चौक-चौराहे पर अतिरिक्त पुलिस जवानों को तैनात किया गया है, लेकिन जाम से लोगों को छुटकारा नहीं मिल पा रहा है. शहर में जाम से छुटकारा नहीं मिलने पर जिला प्रशासन पर कई सवाल खड़े हो रहे हैं.

आखिर शहर में कैसे ट्रैफिक व्यवस्था सुधरेगी. बता दें कि मेदिनीनगर शहर के सभी सिग्नल लाइट पिछले एक साल से बंद पड़े हैं. कई जगह तो सिग्नल का खंभा गिरने की कगार पर हैं. इससे राहगीरों को परेशानी हो रही है. लेकिन एक साल से खराब सिग्नलों को दुरुस्त करने के लिए अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया. छहमुहान चौक और कचहरी चौक के पास सिग्नल लाइट का खंभा टूटने की कगार पर है. इससे कभी हादसा हो सकता है.

चालक करते हैं ट्रैफिक नियमों की अनदेखी : शहर में वाहन चालक ट्रैफिक नियमों की अनदेखी करते हैं. टेंपो चालक बेतरतीब तरीके से वाहनों को सड़क किनारे ही लगा देते हैं. बस और बाइक सवार भी ट्रैफिक नियमों की अनदेखी कर निकल लेते हैं. इसे देखनेवाला कोई नहीं है. वहीं बड़े वाहनों के जाने के लिए बाईपास बनाई गई है जो रेड़मा चौक और बैरिया से होते हुए बस स्टैंड तक जाती है. मगर कई बार बड़े वाहन बीच शहर से ही होकर गुजरते हैं. बस स्टैंड जाने वाली बसें बाइपास की बजाय शहर से ही होकर स्टैंड जाती है. इस वजह से शहर में अक्सर जाम की स्थिति बनी रहती है.

स्कूल बस का भी रूट तय नहीं किया गया है. इसके अलावा अतिक्रमण भी जारी है. शहर में कई जगह चौक-चौराहों पर अतिक्रमण कर स्थायी और अस्थायी दुकानें बना दी गई हैं. जिस वजह से भी शहर में जाम की स्थिति बनी रहती है. लोगों का कहना है कि शहर की सड़कों पर अतिक्रमण की शिकायत जिला प्रशासन से कई बार की गई है, लेकिन आज तक कोई कार्रवाई नहीं की गई.

सिग्नल खराब

- रेड़मा से छहमुहान चौक तक सड़क जाम रहती है
- जाम को लेकर प्रशासन पर उठ रहे हैं कई सवाल
- टेंपो चालक वाहनों को सड़क किनारे ही लगा देते हैं

क्या कहते हैं डीसी शशि रंजन

पलामू डीसी शशि रंजन ने बताया कि शहर में बंद पड़े ट्रैफिक सिग्नल लाइट को दुरुस्त करने के लिए नगर निगम को आदेश दिया गया है. नगर निगम द्वारा इसका सर्वे भी किया जा रहा है. जल्द ही सभी सिग्नल लाइट दुरुस्त कर दिये जाएंगे. उन्होंने बताया कि ट्रैफिक व्यवस्था सुधारने के लिए नगर निगम के पदाधिकारी, पुलिस पदाधिकारी और जिला परिवहन पदाधिकारी के साथ जल्द बैठक करेंगे.

क्या कहती हैं पुलिस कप्तान रिष्मा रमेशन

पलामू एसपी रिष्मा रमेशन ने बताया कि ट्रैफिक व्यवस्था दुरुस्त करने में पुलिस प्रशासन जुटी हुई है. लोगों को जाम की समस्या ना हो इसके लिए 40 से अधिक पुलिस जवान तैनात किए गए हैं.

क्या कहते हैं नगर आयुक्त जावेद हुसैन

नगर आयुक्त जावेद हुसैन ने बताया कि जिस कंपनी ने सिग्नल लाइट लगाया है, उसे ठीक करने का आदेश दिया गया है. जल्द ही शहर के सभी चौक-चौराहों के सिग्नल लाइट्स दुरुस्त कर दिये जाएंगे.

एंबुलेंस चालकों का विरोध प्रदर्शन

संवाददाता। तेतुलामारी

बीसीसीएल एरिया चार अंतर्गत चल रहे ठेका वाहनों का बकाया वेतन की मांग को लेकर एम्बुलेंस चालको ने सोमवार को क्षेत्रीय कार्यालय के समीप एम्बुलेंस को खड़ा कर विरोध प्रदर्शन किया. साथ ही मांगे पूरी नहीं होने पर अनिश्चितकालीन धरना पर बैठने की चेतावनी दी.

चालकों ने कहा कि कतरास सीएमओ के देखरेख मे हमलोग वर्ष 2022 के अगस्त माह से एंबुलेंस चला रहे हैं. एक वर्ष तक हमलोग का वेतन निर्धारित समय पर दिया गया. लेकिन अगस्त माह 2023 से हमलोगो को वेतन नहीं दिया जा रहा है, वेतन मांगे जाने पर कार्य से हटाने की धमकी भी दिया जाता है. तीन माह से वेतन नहीं मिलने से हमलोगों के बीच रोजी-रोटी की समस्या उत्पन्न हो गई है. सर्दी हो या गर्मी या फिर बरसात 24 घंटे मरीज को अस्पताल ले जाने के लिए तैयार रहना पड़ता है. उसके बावजूद विभाग हम लोगों को वेतन सही समय पर नहीं मिलता है. मौके पर दामोदर रवानी, मो मुस्ताफा, कपिल दास, मनोज महतो, मंटू भुइयां, इम्तियाज़ खान, मो इमाम, मुस्तकीम अंसारी और सूरज चौहान शामिल थे.

बादलों की वजह से न्यूनतम तापमान बढ़ा

धनबाद । पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होने की वजह से धनबाद जिले में बादलों ने दस्तक दी है. जिससे न्यूनतम तापमान में तीन से चार डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी दर्ज की गई है. 24 नवंबर को न्यूनतम तापमान 13 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया था. जो 27 नवंबर को बढ़कर 16 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया है. आने वाले तीन-चार दिनों में तापमान बढ़कर 18 डिग्री सेल्सियस पर पहुंचने की संभावना जताई गई है. मौसम विभाग के अनुसार एक दिसंबर तक न्यूनतम तापमान बढ़ा रहेगा. हालांकि बादलों की वजह से दिन के अधिकतम तापमान में गिरावट आयी है. यह 28 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है. मौसम विभाग के अनुसार संताल सहित राज्य के उत्तर-पूर्वी जिलों में 28 नवंबर को हल्के से मध्यम दर्जे की बारिश होने की संभावना जताई गई है.

लातेहार में 'हमारा संकल्प विकसित भारत' कार्यक्रम कल

संवाददाता। लातेहार

नगर पंचायत के प्रशासक राजीव रंजन के निर्देश पर नगर पंचायत क्षेत्र में आगामी 29 नवंबर को 'हमारा संकल्प. विकसित भारत' कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा. पूर्वाह्न नौ से दस बजे तक वार्ड नंबर दो में बाजारटांड़ स्थित फायर बिग्रेड कार्यालय के पास कार्यक्रम होगा. जबकि अपराह्न दो बजे से वार्ड नंबर चार में डुरूआ बाजारटांड़ में इसका आयोजन किया जायेगा.

इसकी जानकारी सिटी मैनेजर राजकुमार वर्मा ने दी. उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में केंद्र सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के बारे में बताया जायेगा. साथ ही नये लाभुकों को योजनाओं से जोड़ा जायेगा. कार्यक्रम में आयुष्मान भारत, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना, एनआरएलएम, एनयूएलएम, प्रधानमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री पोषण योजना, हेल्थ कैंप, जीवन ज्योति योजना, सुरक्षा बीमा योजना, अटल पेंशन योजना, पीएम प्रणाम योजना व जनधन योजना के तहत लाभुकों से आवेदन प्राप्त किये जायेंगे.

घर को अतिक्रमण मुक्त करने में विफल रही पुलिस

संवाददाता । आदित्यपुर

अपने फ्लैट को किराए पर देना गोपाल कृष्ण वर्मा को महंगा पड़ रहा है. उनके फ्लैट आवास बोर्ड के (एचआईजी) को बबन सिंह नामक व्यक्ति पिछले 2 वर्ष से कब्जा किये बैठा है और किराया तक नहीं दे रहा है. कानूनी लड़ाई लड़कर जब जीके वर्मा को एसडीएम कोर्ट से डिग्री मिली तब भी एसडीएम के आदेश के अनुपालन नहीं हो रहा है. सोमवार को जीके वर्मा फिर आदित्यपुर थाना पहुंचे और अपने फ्लैट को एसडीएम कोर्ट के आदेशानुसार कब्जामुक्त करने की मांग की.

बता दें कि पिछले 2 बार से दंडाधिकारी और पुलिस बल कब्जामुक्त करने जा रही है और कब्जाधारी को मोहलत देकर वापस लौट आ रही है. जीके वर्मा ने पुलिस प्रशासन के इस रवैये पर सवाल उठाते हुए कब्जाधारी से सांठगांठ करने की आशंका जाहिर करते हुए अब उच्च न्यायालय की शरण में जाने का निर्णय लिया है. जीके वर्मा ने बताया कि दो बार घर को अतिक्रमण मुक्त करने में पुलिस प्रशासन विफल रही है. उन्होंने बताया कि कब्जाधारी बबन सिंह जालसाज व्यक्ति है. वह पहले तो फर्जी कागजात बनाकर भरमाने का काम किया.

जाएंगे कोर्ट

- सोमवार को जीके वर्मा फिर आदित्यपुर थाना पहुंचे
- पुलिस कब्जाधारी को मोहलत देकर वापस लौट रही है

फोरलेन विस्थापित संघर्ष समिति की बैठक संपन्न

लातेहार। फोरलेन विस्थापित संघर्ष समिति की एक बैठक ग्राम उदयपुर ग्राम में आयोजित की गयी. इसकी अध्यक्षता संघर्ष समिति के अध्यक्ष गुजर उरांव ने की. मौके पर समिति के संयोजक वीरेंद्र प्रसाद मुख्य रूप से शामिल थे. बैठक में अध्यक्ष श्री उरांव ने कहा कि एनएचएआई के द्वारा लातेहार में बाइपास सड़क व फोरलेन सड़क का निर्माण कराया जा रहा है. इसके लिए एनएसएआई जमीन का अधिग्रहण करेगा. इसके लिए मुआवजा भी तय कर दिया गया है. प्रावधान यह है कि जब तक ग्रामसभा नहीं होता है, तब तक जमीन का अधिग्रहण नहीं किया जा सकता है. एनएचएआई बिना ग्रामसभा किये ही रैयतों की जमीन का अधिग्रहण करना चाहता है, यह गलत है. संयोजक वीरेंद्र प्रसाद ने कहा कि भूमि के लिए एनएचएआई व सरकार के द्वारा जो मुआवजा तय किया गया है, वह कम है और इतने कम मुआवजा पर रैयत अपनी जमीन किसी भी सूरत में नहीं देंगे.

दूसरे दिन बहाल हुई शहर में जलापूर्ति

संवाददाता। लातेहार

जिला मुख्यालय में सोमवार को दूसरे दिन पेयजल आपूर्ति सेवा बहाल हुई. बता दें कि शहर के बानपुर इलाके में पाइप लाइन लीक हो जाने के कारण रविवार की सुबह से ही शहर पेयजल आपूर्ति सेवा बाधित थी. इस दौरान आम आदमी को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा. पेयजल के लिए लोग परेशान हो गये. खास कर उन लोगों को अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ा, जिनके घरों में पेयजल का एक मात्र साधन नगर पंचायत का सप्लाई वाटर है. ऐसे लोगों को बाजार से पानी खरीद कर काम चलाना पड़ा. सप्लाई का पानी नहीं आने से महिलाओं को घरों में खाना बनाने लिए भी परेशान होना पड़ा. नगर पंचायत के कनीय अभियंता संदीप बेदिया ने बताया कि वार्ड नंबर दो पाइप लाइन में लीक होने के कारण पेयजल आपूर्ति सेवा बाधित थी.

सोमवार की शाम इसे दुरूस्त कर लिया गया है. हालांकि कई लोगो का कहना है कि शहर एक वार्ड में पाइप लाइन लीक होने के कारण पूरे शहर में पेयजल की आपूर्ति बाधित करना कहीं से उचित नहीं है. जबकि हर एक मुहल्ले मे पेयजल आपूर्ति के लिए चाबियां लगायी गयी है. बता दें कि नगर विकास विभाग की कार्यकारी एजेंसी जूडको के द्वारा जिला मुख्यालय में 32 करोड़ रुपये की लागत से शहरी जलापूर्ति योजना का क्रियान्वयन किया गया है. प्रारंभ से ही यह योजना विवादों में रही है. यहां तक कि नगर पंचायत के तत्कालीन वार्ड पार्षदों ने इस योजना में व्यापक अनियमितता बरते जाने की शिकायत की थी. तब रांची से एक जांच टीम आ कर यहां इस योजना की जांच किया था. जांच टीम ने उस समय पाइप लाइन बिछाने में काफी अनियमितता पायी थी.

मिला पानी

- शहर के बानपुर इलाके में पाइप लाइन लीक हो गया था
- पेयजल का साधन नगर पंचायत का सप्लाई वाटर है

अस्पताल कर्मी के आवास में लगी आग

मैथन । डीवीसी बीपी नियोगी अस्पताल के समीप स्थित अस्पताल कर्मी दीपा विश्वास के बंद आवास में सोमवार दोपहर करीब 12 बजे आग लग गई. आवास से आग की लपटें एवं धुआं निकलते देख पड़ोसियों ने मैथन पुलिस और सीआईएसएफ फायर ब्रिगेड यूनिट को फोन कर आग लगने की सूचना दी. सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड के दल ने मौके पर पहुंचकर आवास में लगे आग पर समय रहते काबू पा लिया. जिससे भारी नुकसान व बड़ा हादसा होने से बच गया. हालांकि घर में रखे माइक्रो ओवन सहित कई फर्नीचर जल गए. हजारों रुपये की नुकसान हुआ. गनीमत रही कि आग लगने के समय आवास मालिक आवास बंद कर कुछ ही घंटे पहले किसी काम से बाहर चले गए थे. जिसके बाद यह घटना घटी. आग लगने के कारण शॉट सर्किट बताया गया. दीपा विश्वास डीवीसी के अस्पताल में कार्यरत है. आग बुझाने में सीआईएसएफ के सहायक कमांडेंट सहित अन्य का सहयोग रहा.

मीटिंग डीसी ने निर्वाचन संबंधी कार्यों के प्रगति को लेकर सभी बीएलओ के साथ की बैठक

पीवीटीजी मतदाताओं का शत-प्रतिशत रजिस्ट्रेशन करें: डीसी

संवाददाता । गढ़वा

जिला समाहरणालय में सोमवार को जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त गढ़वा शेखर जमुआर की अध्यक्षता में बैठक हुई. डीसी ने निर्वाचन संबंधी कार्यों के प्रगति की समीक्षा को लेकर सभी बीएलओ सुपरवाइजर एवं प्रखंडों के निर्वाचन प्रभारी के साथ बैठक की.

बैठक में जिला निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा मुख्य रूप से प्रपत्र 6, 7, 8 की प्राप्ति एवं निष्पादन की स्थिति, वोटर आईडी कार्ड में ब्लैक एंड वाइट एवं खराब क्वालिटी के वोटर आईडी कार्ड के बदलने की स्थिति, बीएलओ से प्राप्त मृत मतदाताओं की सूची, मृत मतदाताओं का मृत्यु प्रमाण पत्र निर्गत की स्थिति, रुट चार्ट से संबंधित सूचना प्रेषण की स्थिति समेत अन्य की बिन्दुवार समीक्षा की गई. समीक्षा के क्रम में जिला निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा समय सीमा के अंदर उक्त कार्यों का शतप्रतिशत निष्पादित करने का निर्देश दिया गया.

बैठक में जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा कि फॉर्म 8 के तहत जिले में कुल 1 लाख 10 हज़ार ऐसे मतदाता अभी भी शेष हैं, जिनका वोटर आईडी कार्ड ब्लैक एंड व्हाइट या उनकी फोटो वोटर आईडी कार्ड में फोटो सही नहीं है. सभी बीएलओ सुपरवाइजर एवं अन्य संबंधित आपस में समन्वय बनाकर ऐसे मतदाताओं के घर जाकर भी मतदाताओं को समझाते हुए उनसे रंगीन अच्छे फोटोग्राफ लेकर उसे अपडेट करना सुनिश्चित करें, जिससे मतदाताओं का वोटर आईडी अप टू डेट किया जा सके. जिले में एक पीवीटीजी मतदाता अपने मताधिकार से वंचित न रहे, जिसे लेकर कैंप आदि के माध्यम से पीवीटीजी मतदाताओं का शत प्रतिशत रजिस्ट्रेशन करने का निर्देश दिया गया. सभी बीएलओ सुपरवाइजर एवं अन्य संबंधित को अपने-अपने निर्धारित क्षेत्र में घर-घर जाकर मृत मतदाताओं की जानकारी इकट्ठा कर मतदाता सूची से ऐसे मतदाताओं का नाम हटाते हुए मतदाता सूची अपडेट करने का निर्देश दिया गया.

समीक्षा के क्रम में जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने बीएलओ सुपरवाइजर समेत अन्य संबंधित द्वारा फॉर्म लंबित रखने एवं संतोषजनक कार्य नही करने को लेकर नाराजगी व्यक्त करते हुए अगले 1 सप्ताह के अंदर सभी फॉर्म का निष्पादन का निर्देश दिया गया. साथ ही पदाधिकारी ने वैसे बीएलओ सुपरवाइजर या अन्य संबंधित जो अपने प्रतिनियुक्त कार्यालय या स्थान पर अनुपस्थित रहते हैं उन पर अनुशासनात्मक कार्रवाई का निर्देश दिया.

डीवीसी के विस्थापितों और प्रभावित ग्रामीणों का बना मोर्चा

संवाददाता। मैथन

मैथन क्षेत्र के आमकुड़ा पंचायत भवन के समीप सोमवार को डीवीसी के विस्थापित एवं प्रभावित ग्रामीणों ने उत्पल चक्रवर्ती की अध्यक्षता में संयुक्त रूप से बैठक की. बैठक में डीवीसी के आवास लीज नीति एवं अवैध रूप से दुकान आवंटन में मनमानी को लेकर विरोध जताया गया. डीवीसी के तानाशाही रवैया, अपनी मांगों को रखने एवं मांगों को लेकर आंदोलन करने के लिए सर्वसम्मति एक मोर्चा का गठन किया गया. जिसका नाम 'झारखंडी विस्थापित एवं स्थानीय ग्रामीण मोर्चा' रखा गया. बैठक में उपस्थित विस्थापितों व ग्रामीणों ने सर्वसम्मति से मोर्चा के पदाधिकारी एवं सदस्यों का भी चयन किया. जिसमें अध्यक्ष संजय रजक, उपाध्यक्ष शीतल राय, सचिव अमरनाथ साहू, उपसचिव संतोष मरांडी, कोषाध्यक्ष श्यामल बाउरी मौजूद थे.

ब्रीफ खबरें

1 लाख रु मुआवजा देने का दिया निर्देश

रांची। नक्सल हिंसा में मारे गए व्यक्ति के परिजनों को गृह कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग ने मुआवजा देने का निर्देश दिया है. गृह सचिव ने चाईबासा डीसी को बंदगांव थाना क्षेत्र के केडके गांव के रहने वाला ज्योतिष कंडुलना के परिजनों को एक लाख रुपया मुआवजा देने का निर्देश दिया है. गौरतलब है कि बीते 11 अक्टूबर को 2018 को नक्सली ने ज्योतिष कंडूलना नाम के व्यक्ति की हत्या कर दी थी. इस घटना के पांच साल बाद मृतक के परिजनों को मुआवजा मिलेगा.

गुमटी में लगी आग लाखों का नुकसान

जमशेदपुर। जमशेदपुर के बिष्टुपुर थाना अंतर्गत धातकीडीह स्थित एक गुमटी में रविवार देर रात अचानक आग लग गई. गुमटी से धुंआ निकलता देख स्थानीय लोगों ने इसकी सूचना गुमटी संचालक हैदर को दी. सूचना पाकर हैदर मौके पर पहुंचा. इधर, थोड़ी देर बाद टाटा स्टील का दमकल भी घटनास्थल पर पहुंचा और आग बुझाने के प्रयास में जुट गया. आधे घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया गया. हैदर ने बताया कि वह दुकान बंद कर अपने घर चला गया था.

मेदिनीनगर के युवक को गिरफ्तार किया

पलामू। मेदिनीनगर से दिल्ली पुलिस ने युवक को गिरफ्तार किया है. पुलिस उससे पूछताछ कर रही है. साथ ही उसके बैंक डिटेल व अन्य कागजातों को भी खंगाल रही है. सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार युवक पर दिल्ली के किसी व्यक्ति से धोखाधड़ी कर उसके खाते से एक करोड़ से अधिक रुपये निकाल लेने का आरोप है. गिरफ्तार युवक पलामू जिले के लेस्लीगंज थाना क्षेत्र का रहने वाला बताया जा रहा है. युवक मेदिनीनगर में ही प्राइवेट लिमिटेड कंपनी बनाकर चला रहा था.

काम कर रहा मजदूर ऊंचाई से गिरा, घायल

जमशेदपुर। गोविंदपुर थाना अंतर्गत पेट्रोल पंप के पास मकान निर्माण का कार्य कर रहा अमर कुमार ऊंचाई से गिरकर घायल हो गया. घायल अवस्था में उसे इलाज के लिए तत्काल एमजीएम अस्पताल ले जाया गया जहां उसका इलाज चल रहा है. अमर का कंधा टूट गया है. उसकी स्थिति खतरे से बाहर बताई जा रही है. अमर ने बताया कि वह राज मिस्त्री का काम करता है. पेट्रोल पंप के पास एक मकान में पहले तल्ले में काम करने के दौरान भाड़ा टूटने के कारण वह उंचाई से गिरकर घायल हो गया.

महिला से छिनतई करनेवाले दो गए जेल

जमशेदपुर। बर्मामाइंस थाना अंतर्गत स्टार टॉकिज के पास पैदल जा रही बाबाकुटी निवासी मंजु कुमारी के गले से चेन छिनतई कर भाग रहने बाइक सवार दो युवकों को स्थानीय लोगों ने पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया था. घटना रविवार देर शाम की है. इधर, पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार कर सोमवार को जेल भेज दिया है. पकड़ाए आरोपियों में परसुडीह नामोटोला निवासी बिलेंद्र रजक और उसका साथी गोलपहाड़ी निवासी राहुल सोनी शामिल है.

शव को मजिस्ट्रेट के सामने बाहर निकाला

खूंटी। मुरहू थाना क्षेत्र में एक खेत में दफनाया गये अज्ञात महिला के शव को पुलिस ने बाहर निकाला. पुलिस शव की पहचान कराने का प्रयास कर रही है. एसडीपीओ ने सोमवार को बताया कि ग्रामीणों ने पुलिस को सूचना दी थी कि हेठगोवा मैदान के समीप किसी अज्ञात महिला के शव को गाड़ दिया गया है. इससे काफी दुर्गंध आ रही है. पुलिस ने जांचोपरांत पाया कि खेत में किसी का शव है. उसके बाद पुलिस ने मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में रविवार को शव को खेत से बाहर निकाला.

अधेड़ ने फांसी लगा कर आत्महत्या की

चाईबासा। मुफस्सिल थाना क्षेत्र के अरगुंडी गांव के रहने वाले अधेड़ पुरुष ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली. यह घटना शनिवार को घटित बताई जा रही है. मृतक का नाम बागुन जमुदा बताया जा रहा है. मृतक अपने नए मकान में फांसी लगाकर आत्महत्या की. इस घटना का खुलासा तब हुआ जब इसका लड़का लोदो जामुदा रविवार को जमशेदपुर से अपने घर आया और अपने पिता को खोजने लगा. बाद में देखा तो वह नये मकान में आत्महत्या कर ली.

पुलिस जवान पर हमला करने के पांच आरोपी गिरफ्तार

संवाददाता । लातेहार

पिछले 22 नवंबर को जिले के बरवाडीह प्रखंड के छिपादोहर थाना क्षेत्र में एक पुलिस जवान काशी नाथ कुंहार पर जानलेवा हमला किया गया था. इस हमले वे गंभीर रूप से घायल हो गये थे. अभी भी उनकी हालत गंभीर बनी हुई है. पुलिस ने इस मामले मे पांच आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है. इस आशय की जानकारी छिपादोहर थाना परिसर में आयोजित एक प्रेस वार्ता में एसडीपीओ दिलू लोहार ने दी. उन्होंने बताया कि गिरफ्तार आरोपियों में राहुल सिंह, किशोर खालको, निरंजन खालको, बबलू सिंह व उमेश सिंह (सभी छिपादोहर) का नाम शामिल है.

बाइक में पेट्रोल भराने पंप जा रहा था पुलिस जवान : एसडीपीओ ने बताया कि छिपादोहर थाना के रिजर्व गार्ड पुलिस काशीनाथ कुंहार अपनी बाइक में पेट्रोल भरवाने के लिए भट्टी मुहल्ला के पेट्रोल पंप जा रहा था. इसी दौरान रास्ते में ही कुछ अपराधियों ने अपनी बोलेरो वाहन से पुलिस जवान को रोका. गाली-गलौल करते हुए उससे एक हजार रूपये की मांग की. जवान ने अपना परिचय भी दिया, बावजूद वे नहीं माने. जवान के द्वारा पैसा देने से इंकार करने पर आरोपियों ने वहां पास में रखे एक कुदाल से उसके सिर पर वार कर दिया. इसमें जवान गंभीर रूप से घायल हो गया. इसके बाद बोलेरो में सवार लोग वहां से भाग गये. इस संबंध में छिपादोहर थाना कांड संख्या 40/ 2023 दर्ज किया गया था. पुलिस अधीक्षक अंजनी अंजन के निर्देश पर एसडीपीओ दिलु लोहार के नेतृत्व में छापामारी दल का गठन किया गया. छापेमारी दल ने उक्त आरोपियों को गिरफ्तार किया. आरोपियों के पास से जवान द्वारा छीनी गयी बाइक की चाबी, पुलिस जवान का पहचान पत्र, घटना में प्रयुक्त बोलेरो वाहन, आधा दर्जन मोबाइल फोन व घटना में प्रयुक्त खून से सना हुआ कुदाल बरामद किया गया है.

आपराधिक इतिहास रहा है : एसडीपीओ ने बताया गिरफ्तार आरोपी में राहुल सिंह का आपराधिक रिकार्ड रहा है, उसके विरुद्ध चैनपुर थाना में मामला दर्ज है. वहीं, घायल जवान की स्थिति नाजुक बनी हुई है. इस छापेमारी दल में पुलिस निरीक्षक अनिल उरांव के अलावा अन्य जवान शामिल थे. बता दें कि इसी घटना में घायल जवान को ले जाने के क्रम में 22 नवंबर को पुलिस की बोलेरो वाहन दुर्घटनाग्रस्त हो गयी थी और इसके चपेट में आने से केड़ ग्राम के एक एक ग्रामीण की मौत हो गई थी और तीन घायल हो गए थे.

आओ जानें

राज्य में महिला पुलिस की भागीदारी

आंध्रप्रदेश	21.8%	पंजाब	9.9%
बिहार	29.2%	पश्चिम बंगाल	9.9%
तमिलनाडु	19.1%	सिक्किम	9.0%
महाराष्ट्र	17.8%	कर्नाटक	8.6%
गुजरात	16.3%	तेलंगाना	8.5%
हिमाचल प्रदेश	14.0%	हरियाणा	8.2%
उत्तराखंड	12.08%	केरला	7.8%
उत्तरप्रदेश	10.7%	मध्यप्रदेश	7.4%
अरुणाचल प्रदेश	10.7%	मिजोरम	7.1%
गोवा	10.6%	झारखंड	6.2%
ओडिशा	10.5%	मेघालय	6.0%
राजस्थान	10.4%	त्रिपुरा	5.3%

अमन साहू गैंग के अपराधियों ने 17 जुलाई रात की थी फायरिंग

घायल हुए दारोगा को रामगढ़ एसपी ने कर दिया सस्पेंड

फाइल फोटो

सौरभ सिंह। रांची

मुठभेड़ में अपराधियों की गोली से घायल हुए दारोगा को सोनू कुमार साव को रामगढ़ एसपी पीयूष पांडेय ने तत्काल प्रभाव से सस्पेंड कर दिया. दारोगा सोनू साव को ड्यूटी के दौरान अनुपस्थित रहने के आरोप में सस्पेंड किया गया है. इस कार्रवाई को लेकर चर्चा है कि दारोगा सोनू के द्वारा भुरकुंडा थाना प्रभारी को बताया था, कि गोली लगने की वजह से उनके पैर का जख्म सही से ठीक नहीं हुआ है. जिस वजह से वो ड्यूटी नहीं आ पाएगा. इसके बाद भी थाना प्रभारी ने दरोगा सोनू साव के खिलाफ ओडी ड्यूटी के दौरान अनुपस्थित रहने वाला रिपोर्ट एसपी कर दिया. जिसके बाद एसपी ने दारोगा सोनू साव को सस्पेंड कर दिया.

अपराधियों के मुठभेड़ के दौरान लगी थी गोली : जेल में बंद गैंगस्टर अमन साहु गैंग के अपराधियों ने 17 जुलाई रात 9 बजे एंटी टेररिस्ट स्क्वायड (एटीएस) व रामगढ़ पुलिस की टीम पर ताबड़तोड़ फायरिंग की. वारदात पतरातू थाना क्षेत्र अंतर्गत खैरमांझी द्वार खेलारी रोड में डाड़ीडीह सरना उच्च विद्यालय के समीप हुई थी. इसमें एटीएस के डीएसपी नीरज कुमार को पेट में व रजरप्पा थाना के दारोगा सोनू कुमार साव को दाहिनी जांघ में गोली लगी थी. एक अन्य जवान गिर कर घायल हो गया. घटना के बाद मौके पर पहुंचे तीन जवानों को बाइक सवार ने अपनी चपेट में ले लिया, जिससे वे घायल हो गये. घटनास्थल से ग्रीन कॉरिडोर बनाकर डीएसपी को मेडिका अस्पताल रांची लाया गया. बाद में दारोगा को भी यहीं भर्ती कराया गया था.

मुख्यालय से मिला था कार्रवाई का आदेश : दो-तीन माह से रामगढ़ जिले के पतरातू थाना इलाके में विभिन्न आपराधिक गिरोह की सक्रियता बढ़ गयी थी. लेकिन, रामगढ़ पुलिस अपराधियों के गैंग के खिलाफ कार्रवाई सही ढंग से नहीं कर पा रही थी. मामले में सीआइडी व पुलिस मुख्यालय के आला अधिकारियों ने जिले के एसपी को अपराधी गैंग के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने को कहा था. लेकिन, कुछ गैंग के लोगों के खिलाफ सिर्फ छापामारी कर कार्य की इतिश्री कर ली गयी थी.

बागबेड़ा फायरिंग

शिकायतकर्ता ने खुद ही चलाई थी गोली, पुलिस को किया गुमराह

संवाददाता । जमशेदपुर

जमशेदपुर के बागबेड़ा थाना अंतर्गत लाल बिल्डिंग के पास रविवार देर रात फायरिंग के मामले में पुलिस ने अंजनी पांडेय को हिरासत में लिया है. अंजनी ने ही अपने घर पर दो राउंड फायरिंग की और पुलिस को गुमराह करने के लिए बिट्टू तिवारी पर आरोप लगा दिया. मामले का खुलासा तब हुआ जब पुलिस ने आस-पास लगे सीसीटीवी को खंगाला. सीसीटीवी में दिखाई दे रहा है कि अंजनी पांडेय खुद ही अपने घर पर फायरिंग कर रहा है.

इधर, पुलिस ने जब अंजनी से पूछताछ की तो कई सारे खुलासे हुए. अंजनी ने फायरिंग करने के बाद हथियार अपने भाई को दे दिया था. वहीं, अंजनी की निशानदेही पर पुलिस ने पड़ोसी के पास से एक और हथियार बरामद किया. दोनों हथियार नागालैंड से खरीदे गए थे. दोनों हथियार लाइसेंसी बताए जा रहे हैं. सिटी एसपी मुकेश लुणायत ने बताया कि इस संबंध में बिट्टू तिवारी के बयान पर दर्ज कर पुलिस पूछताछ कर रही है. सीसीटीवी में अंजनी हथियार लहराते दिखाई दे रहा है. फिलहाल सभी से पूछताछ की जा रही है. जल्द ही मामले की खुलासा किया जाएगा.

बिट्टू तिवारी को फंसाने के लिए की फायरिंग : दरअसल, अंजनी तिवारी आर्मी में अपने सेवा दे चुका है. बताया जाता है कि हथियार चुराने के आरोप में आर्मी से बर्खास्त कर दिया गया जिसके बाद वह अपने घर आकर कई अवैध धंधे करने लगा. इसी बीच अंजनी ने बिट्टू के दादा से 50 हजार रुपये उधारी ली थी. बिट्टू के दादा की मौत हो गई. बिट्टू ने कई बार अपने रुपये वापस मांगे पर अंजनी ने रुपये वापस नहीं किए. रविवार देर शाम बिट्टू अपने रुपये मांगने अंजनी के घर पहुंचा पर अंजनी की पत्नी ने उसे भगा दिया. बिट्टू के घर आने की जानकारी मिलने पर अंजनी आग बबुला हो गया और अपने कुछ साथियों के साथ बिट्टू के घर जाकर हथियार चमकाने लगा. स्थानीय लोगों ने उसे हथियार चमकाते देखा और उसकी पिटाई कर दी. बिट्टू को फंसाने के लिए अंजनी ने अपने घर पर हवाई फायरिंग की. फिलहाल पुलिस सभी से थाने में पूछताछ कर रही है.

फैक्ट्री की दीवार गिरने से मजदूर की मौत

परिजनों को 6.95 लाख रुपये मुआवजा देने पर सहमति, चेक सौंपा

संवाददाता । गिरिडीह

गिरिडीह शहर के अंजना मिनरल्स फैक्ट्री में सोमवार को दीवार गिरने से मजदूर तुलो दास (54 वर्ष) की दबकर मौत हो गई. मिली जानकारी के अनुसार, सीहोडीह निवासी तुलो दास फैक्ट्री में सोमवार सुबह काम कर रहा था. इसी दौरान उसके शरीर पर बाउंड्री की दीवार गिर गई. हादसे में वह बुरी तरह घायल हो गया. फैक्ट्री में काम करने वाले प्रवीण कुमार मुखर्जी घायल तुलो दास को लेकर सदर अस्पताल पहुंचे, जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया.

सूचना मिलते ही परिजन अस्पताल पहुंचे. थोड़ी देर में माले नेता राजेश यादव, झामुमो के रामजी यादव, अभय यादव, मुखिया संदीप शर्मा के साथ सदर अस्पताल पहुंचे और कंपनी संचालक पर आश्रितों को मुआवजा देने के लिए दबाव बनाया. वे फैक्ट्री मालिक शशांक गौरीसरिया को बुलाने की जिद पर अड़े थे. बाद में गौरीसरिया सदर अस्पताल पहुंचे और मुआवजा को लेकर दोनों पक्षों में बातचीत होती रही. फैक्ट्री मालिक ने पहले मात्र 3 लाख रुपए मुआवजा देने की बात कही. लेकिन सामाजिक कार्यकर्ताओं के दबाव के बाद 6 लाख 95 हजार 650 रुपए देने पर सहमति बनी.

फैक्ट्री मालिक ने परिजनों को राशि का चेक सौंप दिया. इसके अलावा अंत्येष्टि के लिए 25000 की राशि अलग से दी गई. इसके बाद पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा.

कार ने बाइक में मारी टक्कर, दो की मौत

गोड्डा। गोड्डा जिले में हुए सड़क हादसे में दो युवकों की मौत हो गई है. सड़क हादसा पांडुबथान स्थित नये समाहरणालय के पास सोमवार सुबह हुआ है. इस हादसे में संटू मंडल और प्रदीप कुमार साह नामक दो युवकों की मौत हो गयी. दोनों बाइक पर कार्तिक पूर्णिमा के मौके पर स्नान करने बासुकीनाथ धाम जा रहे थे. घटना को लेकर बताया जा रहा है कि हर साल की तरह इस बार भी दो दोस्त संटू मंडल और प्रदीप कुमार साह मछिया सिमडा लालपुर गांव से कार्तिक पूर्णिमा स्नान और पूजा-अर्चना के लिए बासुकीनाथ दुमका जा रहे थे, लेकिन समाहरणालय गेट के नजदीक धुंध होने की वजह से बाइक सवार को बैरिकेडिंग नहीं दिखी.

कार पर सवार लोग वहां से फरार हो गये : इसी दौरान सामने से एक बारात से लौट रही कार ने बाइक में टक्कर मार दी. बाइक के साथ कार भी क्षतिग्रस्त हो गयी. मौके का फायदा उठा कर कार पर सवार लोग वहां से फरार हो गये. बाइक सवार दोनों व्यक्ति को सदर अस्पताल लाया गया, लेकिन की तब तक दोनों की मौत हो चुकी थी.

बंद घर से चोरों ने लाखों के सामान चुराए, प्राथमिकी दर्ज

संवाददाता । धनबाद

सदर थाना क्षेत्र झारखंड मैदान के पीछे एक मकान में चोरों ने लाखों की संपत्ति पर अपना हाथ साफ कर चलते बने. गृहस्वामी वीरेंद्र कुमार चौरसिया ने बताया कि रविवार की सुबह सह परिवार शादी समारोह में शामिल होने पटना गए हुए थे. सोमवार की शाम में पटना इंटरसिटी से धनबाद स्टेशन उतरे, उसके बाद मनईटांड़ अपने ससुराल चले गए. वहा से भाड़े के मकान में लौटे तो देखा की घर का मेन गेट का ताला टूटा हुआ है और घर का सारा समान बिखरा पड़ा है. उसके बाद सदर थाने की पुलिस को इसकी सूचना दी.

वहीं गृहस्वामी ने बताया की हमलोग भाड़े के मकान में रहते हैं. घर के आगे ही आर्टिफिशियल ज्वेलरी की दुकान भी है. चोरों ने ताला तोड़कर शृंगार दुकान से डीईओ और फेश वास तथा घर में रखे जेवर में सोना का चैन, सोने की अंगूठी, सोना का मांगटीका, सोने की कान की बाली के साथ-साथ 5 हजार नगद चोरी कर लिए. भुक्तभोगी ने इसकी शिकायत थाने में कर दी है.

सड़क दुर्घटना में दो युवक घायल

बलियापुर। सिंगियाटांड़ के पास सोमवार को दो बाइक के बीच टक्कर में सिंगियाटांड़ निवासी हैदर शाह व बाघमारा निवासी रंजीत दास दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए. दुर्घटना के बाद लोगों ने घायल दोनों को इलाज के लिए बलियापुर सीएचसी में लाया. जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद धनबाद रेफर कर दिया.

धोखाधड़ी कर अवैध रूप से ठगी करने का आरोपी गिरफ्तार

संवाददाता । रांची

धोखाधड़ी कर अवैध रूप से ठगी करने के आरोपी को रांची पुलिस ने गिरफ्तार किया है. डीएसपी प्रकाश सोए को गुप्त सूचना मिली थी कि सुखदेवनगर थाना क्षेत्र के वृंदावन नगर पहाड़ टोली का रहने वाला सूरज कुमार लोगों के साथ धोखाधड़ी कर उन्हें ठगी का शिकार बना रहा है. इस सूचना को सही पाकर छापेमारी टीम का गठन किया गया. छापेमारी दल ने सूरज कुमार के घर पर छापा मारा और उसे पुलिस ने गिरफ्तार किया गया. जिसके बाद सूरज के घर की तलाशी ली गयी, जिसमें मोबाइल और जाली कागजात बरामद हुआ. जिसकी जांच में पुलिस ने पाया कि इनके मोबाइल में धोखाधड़ी करने से संबंधित बहुत सारे एप्स और वॉइस रिकॉर्डिंग पाया गया.

युवती की संदेहास्पद मौत पति से रह रही थी अलग

संवाददाता । पलामू

शादी की सालगिरह पर एक महिला की संदेहास्पद मौत हो गयी. महिला अपने पति से पिछले आठ माह से अलग रह रही थी. अचानक महिला को तड़पते देखा गया. उसे इलाज के लिए रविवार की देर शाम एमएमसीएच में भर्ती किया गया, लेकिन कुछ देर इलाज चलने के बाद उसने दम तोड़ दिया. सोमवार दोपहर में शव का पोस्टमार्टम किया गया. यह मामला मेदिनीनगर शहर थाना क्षेत्र के नई मोहल्ला आनंद मार्ग आश्रम के समीप से जुड़ा हुआ है. यहां अपने मायके में पिछले आठ माह से रह रही डिंकी अग्रवाल (24) की मौत हो गयी. चर्चा है कि रविवार को डिंकी अग्रवाल की शादी की सालगिरह थी. महिला सज धज कर तैयार हुई थी. इसी बीच उसे तड़पते देखा गया. चर्चा है कि महिला जहरीला पदार्थ खा लिया था, जिससे उसकी स्थिति गंभीर हो गई. उसे इलाज के लिए एमएमसीएच में भर्ती कराया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई. महिला को करीब आठ महीने पहले पति ने छोड़ दिया था. दोनों के बीच विवाद होने के कारण मामला कोर्ट में चला गया था. दो दिसंबर को मामले में सुनवाई होनी थी. सूचना मिलने के बाद पुलिस मामले की छानबीन में जुट गई है.

बताया जाता है कि डिंकी की शादी वर्ष 2020 में धनबाद के राजगंज थाना क्षेत्र के बोराबंद इलाके में हुई थी. मृतका की मां शोभा देवी का कहना है कि रविवार को डिंकी की शादी की सालगिरह थी. वह तैयार हुई थी. उसे उम्मीद थी कि सोमवार को उसका पति उससे मिलने जरूर आएगा. इंतजार करने के बाद शाम छह बजे उसने अपने पति को फोन लगाया था. इसी.क्रम में अचानक उसे तड़पते हुए देखा गया. उसे इलाज के लिए एमएमसीएच ले जाया गया, यहां कुछ देर इलाज चलने के बाद उसे मृत घोषित कर दिया गया.

सिंफर के रिटायर्ड वैज्ञानिक ने ट्रेन के आगे कूद कर जान दी

धनबाद। सोमवार दोपहर धनबाद स्टेशन से एक किमी दूर बरमसिया फाटक के निकट सिंफर के रिटायर्ड वैज्ञानिक अभिजीत कुमार विश्वास (80) ने ट्रेन के आगे कूदकर जान दे दी. घटनास्थल पर क्षत-विक्षत शव दो टुकड़े में बंटा हुआ था. लगभग एक घंटे बाद धनबाद रेल थाना की पुलिस पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया. दोपहर से शाम तक रेल पुलिस मृतक को अज्ञात बता रही थी. कुछ लोग हीरापुर जेसी मल्लिक रोड से खोजते हुए रेल थाना धनबाद पहुंचे तो पता चला कि रिडायर्ड वैज्ञानिक ने आत्महत्या कर ली है. लोग उसे मुहल्ले में गोरा दा के नाम से जानते थे. गोरा दा जेसी मल्लिक रोड में एक अपार्टमेंट में रहते थे. हालांकि रेल पुलिस ने इस संबंध में यूडी केस दर्ज की है. पुलिस का मानना है कि रिडायर्ड वैज्ञानिक की पत्नी काफी दिनों से बीमार में रहने के कारण वह डिप्रेशन में चल रहे थे. महिला के रिश्तेदार को खबर कर दी गई है.

बुआ से परेशान भतीजे ने थाने में लगाई सुरक्षा की गुहार

- मारपीट कर घर से निकाल दिया था, अब पास आने की दे रही धमकी

संवाददाता । आदित्यपुर

लखनऊ की बुआ से परेशान एक भतीजा के परिवार ने आदित्यपुर थाना में लगाई बुआ से सुरक्षा की गुहार लगाई है. गम्हरिया में रह रहे रणधीर सिंह नामक व्यक्ति की पत्नी और पुत्र ने आदित्यपुर थाना में लिखित आवेदन देकर अपनी बुआ मीना सिंह से जान की सुरक्षा मांगते हुए गुहार लगाई है. भतीजा रणधीर सिंह ने बताया कि उसकी बुआ लखनऊ में रहती है, जो शादी नहीं की है. वह मेरे पिता की संपत्ति भी हड़पी हुई है. हमलोग को 10 साल पूर्व लखनऊ से मारपीट कर घर से निकाल दिया था अब जब पैतृक संपत्ति को त्याग यहां घर बनाकर सपरिवार रह रहे हैं तो यहां आकर जान-माल की क्षति पहुंचाने की धमकी दे रही है और जबरन लखनऊ ले जाना चाहती है. रणधीर सिंह और इनकी पत्नी का कहना है कि अब वो किसी साजिश के तहत मेरे परिवार को धमकी देकर लखनऊ ले जाना चाहती है जबकि वो वहां दोबारा जाना नहीं चाहती है. आदित्यपुर पुलिस मामले को गंभीरता से लेकर मामले की जांच में जुट गई है.

ऑटो वर्कशॉप में रखी कार में लगी आग

चाईबासा। रविवार देर रात शहीद पार्क चौक चाईबासा के पास जगपतिराम विश्वकर्मा ऑटो वर्कशॉप में रखी सुमो कार में अचानक आग लग गई. इससे वहां अफरा-तफरी मच गई. आग की लपटें काफी तेज होने के कारण ऑटो वर्कशॉप में रखे अन्य चार पहिया वाहन में भी आंशिक रूप से आग लग गई. इससे वो वाहन भी क्षतिग्रस्त हो गई.

कार ने बाइक में मारी टक्कर, बाइक सवार की मौके पर मौत

बेंगाबाद (गिरिडीह)। बेंगाबाद-मधुपुर मुख्य मार्ग एनएच-114 ए पर चपुआडीह के पास मुंढेरी मोड़ पर सड़क हादसे में बाइक सवार एक युवक की मौत हो गई. यहां एक तेज रफ्तार कार ने बाइक सवार को जोरदार टक्कर मार दी. मृतक युवक नरेश यादव चपुआडीह पंचायत के बिराजपुर गांव का रहने वाला है. घटना की सूचना मिलते ही चपुआडीह पंचायत के मुखिया मो. शमीम मौके पर पहुंचे. इधर, सूचना मिलते ही बेंगाबाद पुलिस भी मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लिया और पोस्टमार्टम के लिए गिरिडीह भेज दिया. वहीं दुर्घटनाग्रस्त वाहनों को कब्जे में लेकर थाना ले गई.

स्थानीय लोगों ने बताया कि नरेश अपनी बाइक से घर लौट रहा था. इसी दौरान मुंढेरी मोड़ के समीप पहुंचने पर मधुपुर की तरफ जा रही एक कार ने उसकी बाइक में टक्कर मार दी. दुर्घटना में नरेश की मौके पर ही मौत हो गई. घटना से परिजनों में मातम पसर गया है.

झड़प ईएसएल स्टील लिमिटेड के पास ग्रामीणों-रैयतों के प्रदर्शन के दौरान पुलिस से हिंसक झड़प

पथराव, लाठीचार्ज, रैयत सहित पुलिस के कई जवान घायल

- ओपी प्रभारी चोटिल, पथराव में सीओ की गाड़ी भी क्षतिग्रस्त हुई

संवाददाता । बोकारो

बोकारो जिले के चंदनकियारी स्थित वेदांता इलेक्ट्रो स्टील प्लांट का गेट जाम कर रहे ग्रामीणों-रैयतों की पुलिस के साथ हिंसक झड़प हो गई. झड़प में कई रैयत और पुलिस के जवान घायल हुए हैं. बनगड़िया ओपी प्रभारी को भी चोटें आई हैं. पथराव में अंचलाधिकारी की गाड़ी क्षतिग्रस्त हो गयी. घायलों का इलाज बोकारो जनरल हॉस्पिटल में चल रहा है.

जानकारी के अनुसार, नौकरी की मांग को लेकर स्थानीय रैयत व ग्रामीणों ने झारखंडी भाषा खतियान संघर्ष समिति और युवा संग्राम समिति के बैनर तले सोमवार से अनिश्चितकालीन गेट जाम की घोषणा की थी. इसके तहत ग्रामीण व समिति के लोग दोपहर में इलेक्ट्रो स्टील पहुंचे और प्लांट के सभी गेट जाम कर धरना पर बैठ गए. इसी दौरान भीड़ में से कुछ लोगों ने पथराव. इसके बाद रैयत और इलेक्ट्रो स्टील प्लांट के सुरक्षा कर्मी आपस में भिड़ गए. सूचना मिलते ही चंदनकियारी प्रखंड के बनगड़िया ओपी प्रभारी व चंदनकियारी सीओ घटनास्थल पर पहुंचे. अधिकारियों को देखते ही भीड़ उग्र हो गई और पथराव शुरू कर दिया, जिसमें ओपी प्रभारी समेत कई पुलिसकर्मियों को चोटें आई हैं. आंदोलनकारियों ने सीओ की गाड़ी को पूरी तरह क्षतिग्रस्त कर दिया.

रैयतों का आरोप-कंपनी के सुरक्षाकर्मियों ने किया बल प्रयोग

गेट जाम में प्लांट से सटे चंदाहा, सियालजोरी व भागाबांध के सैकड़ों रैयत शामिल थे. रैयतों का कहना है कि वे शांतिपूर्ण तरीके से गेट के सामने धरना पर बैठे थे. तभी प्लांट के सुरक्षाकर्मियों ने उन्हें हटाने के लिए बल प्रयोग किया. इसके बाद दोनों तरफ से हिंसक झड़प हो गई, जिसमें दर्जनों रैयत भी चोटिल हुए हैं. आंदोलनकारियों का कहना है कि अपनी मांगों को लेकर अनिश्चितकालीन गेट जाम जारी रहेगा.

खास बातें

- झड़प में बनगड़िया ओपी प्रभारी को भी चोटें आई हैं
- पथराव में अंचलाधिकारी की गाड़ी भी हुई क्षतिग्रस्त

प्रतिबिंब ऐप से गिरिडीह पुलिस ने दो साइबर ठगों को पकड़ा

संवाददाता । रांची

झारखंड सीआईडी द्वारा तैयार किया गया प्रतिबिंब ऐप तेजी से कामयाबी की ओर बढ़ रहा है. इसी प्रतिबिंब ऐप के माध्यम से गिरिडीह पुलिस ने दो साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया है. प्रतिबिंब एप के माध्यम से प्राप्त नंबरों के आधार पर गिरिडीह पुलिस के द्वारा एक टीम गठित कर सरिया क्षेत्र में डीएसपी साइबर संदीप सुमन के नेतृत्व में छापेमारी कराई गई. जहां से 2 साइबर अपराधियों को गिरफ्तारी किया गया. जिसमें एक महिला भी शामिल है. ठगों के पास से 5 मोबाइल और छह सिम बरामद किए गए. यह दोनों आरोपी आम लोगों से व्हाट्सएप चैट एवं न्यूड वीडियो कॉलिंग के माध्यम से स्क्रीनशॉट लेकर उसके पिक्चर को मॉर्फिंग कर एवं स्क्रीन रिकॉर्डिंग कर ब्लैकमेल करते हुए पैसा की ठगी करते थे.

राशिफल

आचार्य प्रणव मिश्रा

मेष वृष राशि मे चंद्रमा उच्च के हैं. अप्रत्याशित लाभ हो सकता है. किसी बड़ी बाधा के दूर होने से प्रसन्नता रहेगी. भाग्य का साथ मिलेगा. पुराना रोग उभर सकता है. विवाद से क्लेश संभव है. कोई बड़ा कार्य संपन्न होगा.

वृषभ दिखावा या गलत जगह खर्च होगा. नेत्र संबंधी रोग से बचें. दूसरों से अपेक्षा पूर्ण नहीं होने से खिन्नता रहेगी. कार्य में विलंब होगा. मौसमी बीमारियों से बचें, स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा. पारिवारिक चिंता बनी रहेगी.

मिथुन दिखावा में ज्यादा खर्च हो सकता है. विदेश से शुभ समाचार मिलेगा. लाभ के अवसर हाथ आएंगे. भाग्य का साथ रहेगा. व्यापार में वृद्धि के योग हैं. निवेश शुभ रहेगा. आपके कार्य प्रभाव से आय होगी.

कर्क आय के लिए किया गया प्रयास सफल होगा. नई योजना बनेगी. कारोबार में वृद्धि होगी. जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे. नए व्यापारिक अनुबंध होंगे. धनार्जन होगा. लंबे समय से रुके कार्यों में गति आएगी.

सिंह पिता के कार्य से लाभ होगा. उनकी आज्ञा से कार्य करें. लाभ के अवसर हाथ आएंगे. परिवार के साथ समय अच्छा व्यतीत होगा. आर्थिक उन्नति के प्रयास सफल रहेंगे. कारोबार अच्छा चलेगा. नौकरी में उच्चाधिकारी प्रसन्नता रहेंगे. सूर्य को जल दे.

कन्या धर्म मे मन लगेगा, पर वाणी में हल्के शब्दों के प्रयोग से बचें. किसी व्यक्ति से बेवजह विवाद हो सकता है. लेन-देन में जल्दबाजी न करें. धनलाभ के अवसर प्राप्त होंगे. आय में निश्चितता होगी. ऐश्वर्य पर व्यय होगा.

तुला समय सामान्य है. आपके कृत के कारण कोई अज्ञात भय सताएगा. पुराना रोग उभर सकता है. भागदौड़ रहेगी. विद्यार्थी वर्ग सफलता हासिल करेगा. किसी आनंदोत्सव में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा.

वृश्चिक पार्टनर से कोई मतभेद हो सकता है. कोई अच्छा समाचार मिल सकता है. किसी व्यक्ति से बेवजह संबंधित बाधा से बचे. विरोधी सक्रिय रहेंगे. मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा. व्यापार-व्यवसाय लाभदायक रहेगा. नौकरी में चैन रहेगा.

धनु खून संबंधित कोई रोग हो सकता है. सावधानी आवश्यक है. आर्थिक उन्नति के लिए योजना बनेगी. कार्यप्रणाली में सुधार होगा. रुके कार्य पूर्ण होंगे. मित्रों तथा रिश्तेदारों में सुधार होगा. रुके कार्य पूर्ण होंगे.

मकर शिक्षा में सफलता का योग है. संतान की देखभाल करें. भूमि व भवन संबंधी योजना बनेगी. कोई बड़ा लाभ हो सकता है. रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे. भाग्य बेहद अनुकूल है, लाभ लें. चोट व रोग से बचें. प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी.

कुंभ मानसिक उलझनवाला दिन है. कोई बड़ा कार्य या बोलने से पहले विचार आवश्यक है. किसी बड़े काम को करने में रुझान रहेगा. कारोबार में वृद्धि होगी. नौकरी में प्रशंसा प्राप्त होगी. शेयर मार्केट व म्युचुअल फंड से लाभ होगा.

मीन समय उपयुक्त फल देगा. भाई-बहन से मतभेद हो सकता है. जुबान पर कंट्रोल आवश्यक है. पराक्रम का गलत तरीके से प्रयोग नहीं करें. कारोबार में वृद्धि होगी. निवेशादि शुभ रहेंगे. नौकरी में सहकर्मी साथ देंगे.

दामोदर नदी में जुटे श्रद्धालु, प्रार्थना की

महुदा । कार्तिक पूर्णिमा के उपलक्ष पर सोमवार की सुबह हजारों की संख्या में महिला पुरुष तेलमोचो स्थित दामोदर नदी तट में पहुंचकर डुबकी लगायी.सुबह पांच बजे से ही भक्तगणों की भीड़ नदी घाट में लगनी शुरू हो गई थी.जिसमें महिलाओं की संख्या अधिक थी. वहीं नदी में पानी कम होने के कारण सैकड़ों लोग नदी के उस पार भी जाकर डुबकी लगा रहे थे. स्नान करने के बाद तेलमोचो स्थित पहाड़ी शिव मंदिर में लोगों ने भक्ति भाव से पूजा अर्चना भी की. इस दौरान तेलमच्चो स्थित खेलाय चंडी शिव मंदिर के पास भव्य मेला का आयोजन किया गया था. जिसमें सैकड़ों दुकान भी सजी थी. मंदिर कमेटी के लोग श्रद्धालुओं के सहयोग में लगे थे.

मैथन व बराकर स्नान करने उमड़ी भीड़

मैथन । कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर सोमवार सुबह 'कार्तिक स्नान' करने के लिए मैथन डैम, चिरकुंडा बराकर नदी में हजारों की संख्या में महिलाएं एवं पुरुष श्रद्धालु पहुंचे तथा स्नान किया. श्रद्धालुओं ने भगवान विष्णु को फूल,धूप के साथ पूजा अर्चना की और दीया जलाया. साथ ही श्रद्धालुओं ने कार्तिक पूर्णिमा पर उपवास रखा.'सत्यनारायण कथा'सुना.बराकर नदी में डुबकी लगाने पहुंचे श्रद्धालुओं में स्थानीय प्रशासन के विरुद्ध नाराजगी देखी गयी. सैकड़ों की संख्या में नदी में डुबकी लगाने श्रद्धालु यहां पहुंचते है और सड़क पर ट्रैफिक व्यवस्था को सुचारू रूप से परिचालन कराने को लेकर प्रशासन का एक अदना सा आदमी भी नहीं दिखा.

झारखंड धाम में श्रद्धालुओं की भीड़

धनवार/गिरिडीह। कार्तिक पूर्णिमा पर सोमवार को धनवार व आसपास के बड़ी संख्या में श्रद्धालु प्रसिद्ध झारखंड धाम पहुंचे और पूजा-अर्चना की. धाम में दर्शन-पूजन के लिए सुबह से ही श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा.इनमें महिलाओं की संख्या अधिक थी. लोग निजी व किराए के वाहन से झारखंड धाम पहुंचे. भीड़ की वजह से धाम जाने-आने का रास्ता जाम रहा. धाम से थाना तक सड़क के दोनों ओर वाहनों की लंबी कतार लगी रही. इससे लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा.पुलिस को जाम हटाने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ रही थी.

मुख्यमंत्री ने पीपी कंपाउंड में गुरु नानक स्कूल परिसर में गुरुग्रंथ साहिब के समक्ष मत्था टेका

सबकी सुख, समृद्धि व खुशहाली की कामना की

विशेष संवाददाता। रांची

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन सोमवार को पीपी कंपाउंड स्थित गुरु नानक स्कूल परिसर पहुंचे, वहां आयोजित "554वें प्रकाश उत्सव" कार्यक्रम में शामिल हुए. इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने गुरुग्रंथ साहिब के समक्ष मत्था टेका. साथ ही राज्यवासियों के सुख, समृद्धि और खुशहाली की कामना की. मौके पर मुख्यमंत्री ने समस्त सिख समुदाय व देशवासियों को गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व और कार्तिक पूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाएं दीं. इस अवसर पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि आज का दिन पवित्र दिन है. आज के दिन को गुरु पूर्णिमा के रूप में भी मनाया जाता है. सीएम ने कहा, मुझे कई मौकों पर इस परिसर में आने का मौका मिला है. परंतु आज का दिन हमसभी के लिए काफी विशेष दिन है, क्योंकि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी गुरुग्रंथ साहिब की स्थापना स्थल पर मुझे मत्था टेकने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है. मुख्यमंत्री ने कहा कि आज बहुत कुछ बोलने का नहीं बल्कि सुनने का दिन है. इस परिसर में आज बड़ी संख्या में सिख समुदाय के लोग उपस्थित हुए हैं. यहां उपस्थित सभी श्रद्धालुओं को मैं अपनी ओर से प्रकाश उत्सव की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूं.

कडरू-हिंदपीढ़ी पुल निर्माण का हुआ शिलान्यास

इस मौके पर सीएम हेमंत सोरेन ने वार्ड संख्या-23/24 के अंतर्गत कडरू व हिंदपीढ़ी मुख्य पथ के बीच सेतु निर्माण का शिलान्यास किया. इस अवसर पर सांसद संजय सेठ, राज्यसभा सांसद महुआ माजी, उपाध्यक्ष झारखंड राज्य अल्पसंख्यक आयोग ज्योति सिंह मथारू, गुरुद्वारा गुरु सिंह सभा के अध्यक्ष गुरमीत सिंह, महासचिव गगनदीप सिंह सेठी, वित्त प्रधान त्रिलोचन सिंह, गुरु नानक स्कूल के सचिव परमजीत सिंह सहित रणजीत सिंह हैप्पी, परमजीत सिंह टिंकू, बटर सिंह, अमरजीत सिंह, जयदीप चड्ढा, ऋषि छाबड़ा के अलावा कई गणमान्य लोग बड़ी संख्या में उपस्थित थे.

अखंड कीर्तन में शामिल हुईं विधायक की पत्नी तारा देवी

संवाददाता। बलियापुर

तिसरा क्षेत्र के अलकडीहा शिव मंदिर कार्तिक पूर्णिमा में 24 घंटे का अखंड हरिकीर्तन पूजा पाठ के बाद शुरू हुआ.आचार्य मंटू मिश्रा,विकास मुखजी, संदीप के द्वारा विधि विधान व वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ पूजा पाठ कराया गया. इस दौरान सिंदरी विधायक इन्द्रजीत महतो की पत्नी सह भाजपा नेत्री श्रीमती तारा देवी भी अखंड हरिकीर्तन कार्यक्रम में सम्मिलित हो कर पूजा की. लोगों के सुख समृद्धि तथा विधायक के जल्द स्वस्थ होने की कामना की.कहा कि धर्म कर्म से मानसिक तनाव दूर होता है. हरे राम हरे कृष्ण , हर हर महादेव, जय श्रीराम के उदघोष से पूरा अलकडीहा क्षेत्र गूंज उठा. अलकडीहा से आये भजन मंडली की टीम ने हरे राम, हरे राम,राम राम हरे हरे, हरे की धुन ऐसा छेड़ा कि

उपस्थित भक्तजन मंत्रमुग्ध हो गए. इस भक्तिमयी कार्यक्रम को सफल बनाने में मंदिर कमेटी के जयंती सिंह,चंडी चरण मोदक, हीरालाल मोदक, विधायक प्रतिनिधि कुमार महतो, बलियापुर पश्चिम मंडल अध्यक्ष मंटू रवानी, मिटू साव, नेपाल महतो, सुबल मोदक, अजीत मोदक, सुनील मोदक, कृष्णा रवानी एवं मंदिर के सभी भक्तों उपस्थित थे.

कार्तिक पूर्णिमा पर कोयलांचल के सभी नदियों के घाटों पर उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

आस्थावानों ने लगाई डुबकी, किए दान पुण्य

संवाददाता। झरिया

कार्तिक पूर्णिमा पर सोमवार को धनबाद कोयलांचल के नदी घाटों व सरोवरों में लोगों ने स्नान कर मंदिरों में पूजा-अर्चना की. झरिया के मोहलबनी मुक्ति धाम के समीप दामोदर नदी घाट पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ जुटी.लोगों ने नदी में स्नान के बाद पूजा कर दान-पुण्य किया.सुबह से ही घाट पर लोगों की भीड़ जुटनी शुरू हो गई थी.ऐसी मान्यता है कि इस दिन स्नान के बाद दीपदान करने से सांसारिक पाप और ताप का शमन होता है.कार्तिक पूर्णिमा को देव दिवाली के रूप में मनाया जाता है.सनातन परंपरा के अनुसार, इस दिन दान-पुण्य करना ज्यादा शुभकारी माना गया है.इस दिन किये जाने वाले अन्न,धन व वस्त्रदान का बहुत महत्व है. मोहलबनी दामोदर नदी घाट पर श्रद्धालुओं की भीड़ को देखते हुए सुरक्षा के मद्देनजर पुलिस मुस्तैद दिखी.

गोमो में जमुनिया नदी घाट पर जुटी श्रद्धालुओं की भीड़ : कार्तिक पूर्णिमा पर गोमो स्थित जमुनिया नदी के घाट पर श्रद्धालुओं की भीड़ रही.लोगों ने ब्रह्म मुहूर्त में नदी में स्नान कर दान-पुण्य किया. श्रद्धालुओं ने जमुनिया नदी की कलकल धारा में स्नान कर भगवान विष्णु की आराधना की और दीप, धूप व फल का दान कर भगवान सूर्य व माता गंगा की पूजा-अर्चना की.लौटते समय जीतपुर गांव स्थित देवस्थान पहुंचकर भगवान शिव,माता दुर्गा व रामभक्त हनुमान को जलार्पण कर पूजा-अर्चना की.आरपीएफ शिव मंदिर के पुजारी अवधेश मिश्रा,काली मंदिर के पुजारी कौशल कांत झा व गुड्डू पंडित ने बताया कि कार्तिक पूर्णिमा के दिन भगवान विष्णु की पूजा-अर्चना का विशेष महत्व है.

दामोदर नदी के मोहलबनी घाट पर स्नान करते श्रद्धालु

कतरास के विभिन्न नदियों में उमड़ी भक्तों की भीड़

कतरास। कार्तिक पूर्णिमा की स्नान के लिए कतरास के कतरी नदी तट सहित विभिन्न घाटों पर लोगों की भारी भीड़ देखी गई. पचगढ़ी बाजार,कतरास केवट टोला ,कतरास रवानी टोला,शाखाटांड़,झीझीपहाडी पुल तथा लिलोरी मन्दिर स्थित कतरी घाट में सोमवार को हजारों लोगों ने कार्तिक पूर्णिमा स्नान किया .कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर लिलोरी मंदिर स्थित शिव मन्दिर प्रांगण में पुष्कर बाबा आश्रम की ओर से लिलोरी मन्दिर परिसर में 24 घंटे का अखंड हरि कीर्तन एवं भक्तों के लिए खिचड़ी महाप्रसाद का आयोजन किया गया था. खिचड़ी वितरण आकाश महतो एवं उनके साथियों के द्वारा किया जा रहा था.पूर्णिमा स्नान के लिए सुबह 4 बजे से ही दूर दराज के लोग आने लगे थे.मंदिर परिसर की सभी दुकानें सुबह सूरज निकलने से पहले ही खुल गयी थी.

श्रद्धालुओं ने आराध्यदेव की आराधना की

चांडिल । पवित्र कार्तिक मास की पूर्णिमा पर सोमवार को पवित्र नदियों ओर जलाशयों में स्नान दान करने और मंदिरों में अपने आराध्यदेव की दर्शन-पूजन करने के लिए श्रद्धालुओं की अपार भीड़ उमड़ पड़ी. इस अवसर पर जयदा स्थित ऐतिहासिक बुढ़ाबाबा शिव मंदिर में सुबह से ही श्रद्धालुओं की भारी भीड़ जुटी है. लंबी कतारों में लग कर श्रद्धालु पवित्र शिवलिंग की पूजा-अर्चना और जलाभिषेक कर अपने व परिवार की कुशलता के लिए भगवान से आशीर्वाद मांग रहे हैं. ऐसी मान्यता है कि कार्तिक पूर्णिमा के दिन स्नान दान कर भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक करने से सभी मनोकामनाएं पूरी होती है. अनुमंडल क्षेत्र के गांवों में सोमवार को कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर सुबह से ही भगवान सत्यनारायण की पूजा कर कथा सुनाया जा रहा है.

स्नान दान का है विशेष महत्व

कार्तिक पूर्णिमा के दिन गंगा स्नान का बड़ा महत्व है. जो श्रद्धालु गंगा स्नान करने नहीं जा पाते हैं वे पवित्र नदियों और जलाशयों में डुबकी लगा कर स्नान दान करते हैं. इसके साथ ही कार्तिक पूर्णिमा के पावन अवसर पर गरीब या जरूरतमंदो के बीच दान करने की परंपरा रही है. मान्यता है कि कार्तिक पूर्णिमा पर स्नान करने के बाद दान करने से कई पाप नष्ट होते हैं और पुण्य प्राप्ति होती है. सनातन धर्म में कार्तिक पूर्णिमा पर प्रातः काल नदी-सरोवर में स्नान का विशेष महत्व है. इसी वजह से नदी में स्नान करने वालों की भीड़ तड़के ही जुट गई थी. वहीं कई लोगों ने चांडिल व पालना डैम, करकरी नदी के ईचागढ़ व पातकुम घाट समेत कई पवित्र जलाशयों में पवित्र स्नान कर दान-पुण्य किया.

सोनारी दोमुहानी व मानगो स्वर्णरेखा नदी घाट पर भी लोगों ने डुबकी लगायी

जमशेदपुर । सोनारी दोमुहानी और मानगो स्वर्णरेखा नदी घाट पर सोमवार को हजारों श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगाई .पुरुष व महिला श्रद्धालुओं ने नदी में स्नान कर मंदिर में पूजा-पाठ कर अपने व परिवार की कुशलता के लिए भगवान से आशीर्वाद मांगा. इसके बाद लोगों ने नदी किनारे कतार में बैठे भिक्षुकों को अन्न, वस्त्र और रुपये-पैसे का दान भी किया .नदी और घाटों में भीड़ के मद्देनजर सुरक्षा की व्यवस्था थी .मंदिरों में पूजा करने वालों का भी तांता लगा रहा .हिंदू समाज में कार्तिक पूर्णिमा पर प्रातःकाल नदी-सरोवर में स्नान का विशेष महत्व है.

कार्तिक पूर्णिमा पर प्रसाद का वितरण

लातेहार। कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर शहर के बीचों बीच ठाकुरबाड़ी मंदिर में महाप्रसाद का वितरण किया गया.इससे पहले पूजा अर्चना की गयी.मौके पर मुख्य यजमान के रूप में राजेश कुमार अग्रवाल सप्नीक मौजूद थे. श्री अग्रवाल ने कहा कि प्रति वर्ष मंदिर में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर खिचड़ी का प्रसाद वितरित किया जाता है. उन्होंने कहा कि हिंदुओं कार्तिक पूर्णिमा का विशेष महत्व होता है.इस दिन गंगा स्नान व दान पुण्य का विशेष महत्व है.मौके पर क्षेत्र हजारों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया.मौके पर निर्मल कुमार महलका, विजय प्रसाद, रविनाथ गुप्ता व गजेंद्र प्रसाद समेंत कई लोग मौजूद थे.इससे पहले कार्तिक पूर्णिमा के मौके पर श्रद्धालुओं ने औरंगा नदी समेंत विभिन्न जल स्त्रोतों मे स्नान किया.

हर्षोल्लास के साथ पंचेक पूर्णिमा पर्व मनाया गया

बहरागोड़ा । बहरागोड़ा प्रखंड क्षेत्र के स्वर्णरेखा नदी पर पंचेक पूर्णिमा के समापन दिन सोमवार सुबह सूरज उगने से पहले गांव के दर्जनों महिलाओं ने पंचेक पूजा किया.महिलाओं ने पंचेक पूजा के बारे में बताया कि पिछले तीन दिनों से सुबह को उपबास रख कर घर के तुलसी मंच पर घी से बनाया हुआ भोग लगाते हैं तथा उसी भोग को घर के सभी सदस्य ग्रहण करते हैं.तीन दिनों तक चलने के पश्चात कार्तिक पूर्णिमा के दिन सुबह सूरज उगने से पहले कागज से एक नाव बनाया जाता है फिर उसी नाव में छोटा प्रदीप जला कर उसको जल स्रोतों पर प्रवाहित किया जाता है. इस मौके पर मंजू गिरि, स्वीटी गिरी, मधाबी धड़ा, कुनकी जेना, अलमनी गिरि, कल्पना दास, गीता रानी धड़ा, भानु मति गिरि, डीजेन धड़ा, लोकेश धड़ा, रिंकी धड़ा, आदि उपस्थित थे.

रासमंच मंदिर में 9 दिवसीय रास उत्सव शुरू

संवाददाता। चाकुलिया

चाकुलिया नगर पंचायत के पुराना बाजार के नामोपाड़ा स्थित रासमंच मंदिर परिसर में सोमवार को रास पूर्णिमा के अवसर पर राधा कृष्ण की पूजा करने के लिए भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी.पुजारी दुलाल चन्द्र दास और गिरीधारी दास ने पूजा अर्चना संपन्न कराई.पूजा करने के लिए सुबह से ही मंदिर में भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी.पूजा के पश्चात भक्तों के बीच प्रसाद का वितरण किया गया.पूजा के पूर्व वैष्णव समाज के लोगों द्वारा सुबह कीर्तन मंडलियों के साथ प्रभात कीर्तन किया गया.महोत्सव को लेकर मंदिर कमेटी द्वारा मंदिर परिसर की भव्य सजावट की गई है.पूजा को सफल बनाने में कमेटी के अध्यक्ष पतित पावन दास,पंकज दास, सचिव दिलीप दास,उत्पल पंडा, रंजीत दास,अरूण दास, देवाशीष दास,निमाई दास,पशुपति बेरा,लखी नारायण दास,सोमनाथ दास,दिलीप दास,बिमल दास समेत अन्य ने अहम भूमिका निभाई.रास महोत्सव के अवसर पर हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी मंदिर कमेटी द्वारा भागवत कथा का आयोजन किया गया है.कथा व्यास भोपाल की कविता राजगुरु द्वारा भागवत कथा होगी. कथा के आयोजन को लेकर कमेटी द्वारा सारी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं.

रसिक जीवन मंदिर में पांच दिवसीय रास महोत्सव शुरू

बहरागोड़ा। रास पूर्णिमा पर बहरागोड़ा प्रखंड क्षेत्र के वेंदा गांव स्थित रसिक जीवन मंदिर में सोमवार को श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी .रास पूर्णिमा पर आसपास के ग्रामीणों ने सुबह से ही सुवर्णरेखा नदी में स्नान कर मंदिर में श्री रसिक जीवन तथा कुंज बिहारी जी की पूजा अर्चना की . सभी धार्मिक अनुष्ठान पुजारी काली दत्त पांडा ने वैदिक रीति रिवाज के साथ संपन्न कराया .वहीं हर एक दिन रात्रि पर भजन कीर्तन व बांग्ला जात्रा का आयोजन होगा.

आस्था

किरीबुरू में उड़िया समाज के लोगों ने बोइता वंदना हर्षोल्लास के साथ मनाया

जाजपुर व स्थानीय कलाकारों ने प्रस्तुति से बांधा समां

संवाददाता। किरीबुरु

उत्कल प्रदेश की पौराणिक परंपरा के तहत उड़िया समाज ने बोइता वंदना समारोह समिति के बैनर तले कार्तिक पूर्णिमा पर बोइता वंदना एवं भजन संध्या का आयोजन किया.

26 नवंबर की रात्रि लोकेश्वर मंदिर प्रांगण में गायत्री भजन संध्या, जाजपुर एवं स्थानीय कलाकारों द्वारा भक्ति भजन संध्या का आयोजन किया गया.

भजन संध्या का शुभारंभ किरीबुरु के सीजीएम कमलेश राय ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया. किरीबुरु-मेघाहातुबुरु के सैकड़ों महिला व पुरुषों ने देर रात तक भजन का आनंद लिया.महिलाओं के लिये क्विज का भी आयोजन किया गया. इसके विजेताओं को पुरस्कृत किया गया. रात में समिति ने भक्तों के लिए भोज की व्यवस्था की थी.

तालाब में नाव छोड़ते उड़िया समाज के लोग।

लोकेश्वर मंदिर तालाब में नाव प्रवाहित किया

27 नवम्बर की अहले सुबह ओड़िया समाज के लोगों ने मंदिर में विधिवत पूजा-अर्चना करने के बाद लोकेश्वर मंदिर तालाब में बोइता वंदना परम्परा के तहत नाव प्रवाहित किया .कमेटी के लोगों ने बताया कि हमारी परंपरा है कि आज ही के दिन उत्कल प्रदेश के हमारे पूर्वज समुद्री मार्गों से इंडोनेशिया, जावा, सुमात्रा, बाली जैसे बंगाल की खाड़ी के सीमाओं को साझा करने वाले दूर के द्वीप राष्ट्रों के साथ व्यापार करने के लिये नाव से गये थे .उनके सुरक्षित वापस आने हेतु बोइता वंदना पूजा की जाती है .इसी दिन ओड़िया समाज के लोग अपने क्षेत्र के नदी, समुद्र, जलाशयों, तालाब आदि में नाव छोड़ते हैं . कार्यक्रम में सीजीएम कमलेश राय, सीजीएम एस एस साहा, महाप्रबंधक ए के पटनायक, महाप्रबंधक सुकरा हो, महाप्रबंधक एस आर स्वायं, रमेश प्रधान, दिलीप राउत राय, हेमंत बेहुरा, के पी बेहरा, हिरण्य महाराणा, मनोरंजन राणा आदि सैकड़ों उपस्थित थे.

खालसा क्लब ने की संगत की सेवा

संवाददाता । जमशेदपुर

बिष्टुपुर खालसा क्लब की ओर से नगर कीर्तन में शामिल स्कूली बच्चों के बीच बिस्किट एवं पेयजल की सेवा की गई.क्लब की ओर से श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की महाराज की सवारी को रुमाला अंग वस्त्र एवं मिष्ठान प्रसाद ट्रस्टी सरदार संता सिंह, प्रधान भगवंत सिंह रूबी, महासचिव नरेन्द्र सिंह, सचिव कुलविंदर सिंह द्वारा भेंट किए गए.ट्रस्टी संता सिंह ने सीजीपीसी प्रधान भगवान सिंह एवमअन्य पदधारियों तथा संगत को श्री गुरु नानक देव जी के 554 वें प्रकाश पर्व की बधाई दी. इस मौके उपाध्यक्ष जतिंदर सिंह बब्बू,ऑडिटर गुरमीत सिंह लाडी, सुरिंदर सिंह, सरबजीत सिंह लाली, मनजीत सिंह, निहाल सिंह, सरबजीत सिंह,भगवंत सिंह, एचएस बेदी, सतवरण सिंह, दलजीत सिंह आदि ने सेवाएं दीं.

गुरु चरण कमल साहब कमेटी ने गुरु नानक जयंती मनाई

बहरागोड़ा। हरागोड़ा प्रखंड क्षेत्र के मटिहाना स्थित गुरुद्वारा में सिखों की प्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव के 554वें प्रकाश वर्ष के पावन अवसर पर सोमवार को गुरु चरण कमल साहब कमेटी द्वारा गुरु नानक जयंती मनायी गई .जिसमें बाबा जी शिवदयाल सिंह नेअरदास किया . इसके बाद लंगर का भी आयोजन किया गया .लंगर में सभी वर्ग के सैकड़ो लोगों ने लंगर ग्रहण किया .इस मौके पर शिवदयाल सिंह,जीत सिंह,रुवल सिंह, लाडी सिंह, कुलवंत सिंह,अमरजीत सिंह, गोविंद सिंह,लाली सिंह,दीपु सिंह आदि उपस्थित थे.

कीर्तन, दरबार और कथा में शामिल हुए श्रद्धालु शर्बत और अटूट लंगर का भी हुआ आयोजन

सतनाम वाहे गुरु के गूंजते रहे जयकारे आयोजन में कई गणमान्य हुए शामिल

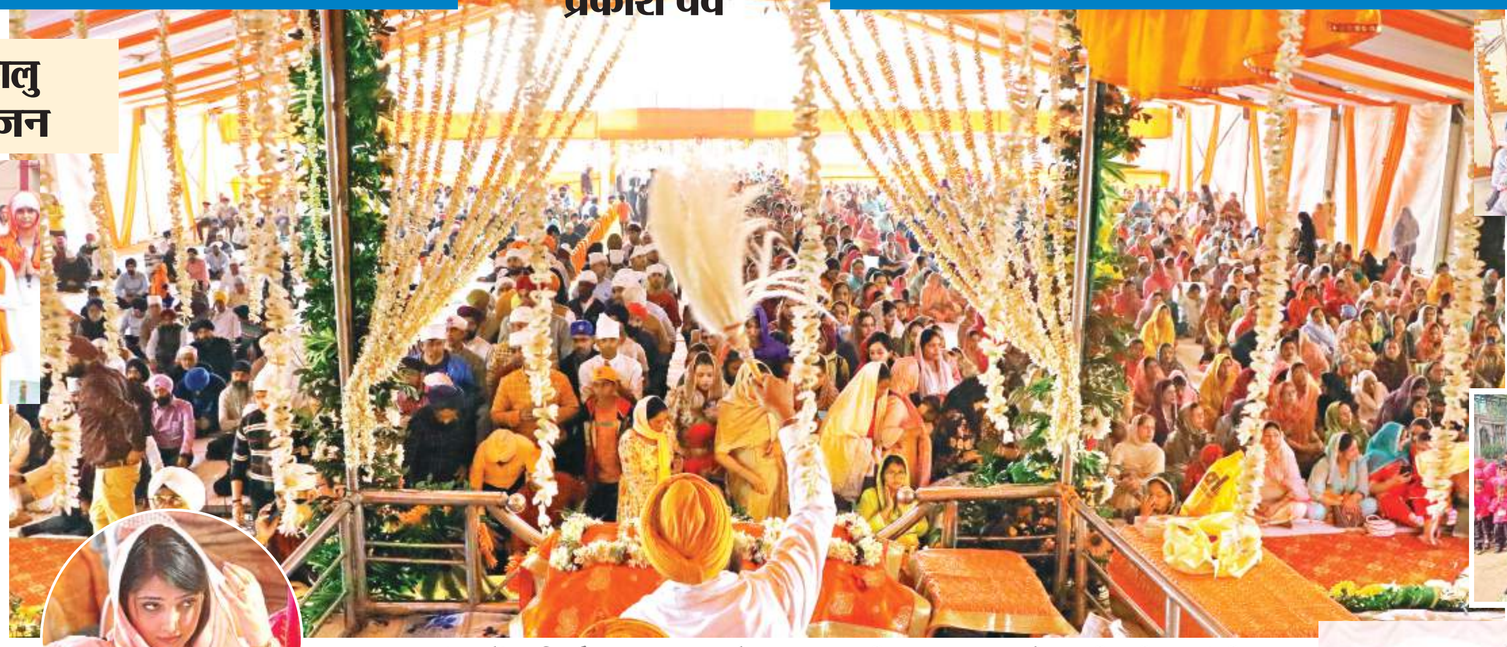

झारखंड में गुरुनानक जयंती धूमधाम से मनाई गई. गुरुद्वारों पर माथा टेकने के लिए सुबह से ही सिख श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा. सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव जी की जयंती को प्रकाश उत्सव या गुरु पर्व के रूप में भी जाना जाता है, यह सिख समुदाय के लिए सबसे महत्वपूर्ण अवसरों में से एक है. इस मौके पर राज्य के गुरुद्वारों को विशेष रुप से सजाया संवारा गया था. सभी गुरुद्वारे रोशनी से जगमग कर रहे थे. राजधानी रांची, जमशेदपुर, हजारीबाग, धनबाद सहित राज्य के अन्य जिलों में गुरु पर्व को लेकर विशेष उत्साह देखा गया. इस मौके पर गुरुद्वारों में कीर्तन, दरबार, कथा तथा अटूट लंगर का आयोजन किया गया. जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए. इस पल को ऐतिहासिक बनाने के लिए बच्चे, बड़े, महिलाएं हजारों की संख्या में नगर कीर्तन और समारोहों में शामिल हुए. नगर कीर्तन में सतनाम वाहे गुरु के जयकारे गूंजते रहे. गुरुनानक जयंती पर सभी जगह ट्रैफिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस बल की तैनाती की गई थी. शुभम संदेश की टीम ने राज्य के विभिन्न जिलों में गुरुनानक जयंती पर आयोजित कार्यक्रमों को कवर किया है. पेश है रिपोर्ट.

रांची

श्री गुरुनानक देव जी का 554 वां प्रकाश पर्व सोमवार को श्रद्धापूर्वक धूमधाम से मनाया गया. वैसे तो शहर के सभी गुरुद्वाराओं में प्रकाश पर्व पर विशेष कार्यक्रम हुए. लेकिन गुरुद्वारा श्रीगुरु सिंह सभा की ओर से गुरुनानक स्कूल, पीपी कंपाउंड में आयोजित मुख्य समारोह की बात कुछ और रही. यहां विशेष दीवान सजाया गया. जिसमें भागीदारी निभाने को हजारों श्रद्धालुओं संग सीएम हेमंत सोरेन, राज्यसभा सांसद महुआ मांजी, आदित्य साहू, सांसद संजय सेठ, विधायक सीपी सिंह, हटिया विधायक नवीन जायसवाल, भाजपा के प्रदेश महासचिव प्रदीप वर्मा, भजपा नेता रमेश सिंह, हरबिंदर सिंह बेदी, कांग्रेस प्रदेश महासचिव अजयनाथ शाहदेव, कांग्रेस नेता शमशेर आलम आदि भी भक्ति की डोर से बंध खिंचे चले आए. दीवान में मत्था टेक श्रद्धा अर्पित किया. प्रकाश पर्व की सब को लख-लख बधाइयां दी. सीएम ने राज्य के सुख-समृद्धि की कामना भी की. दिन के साढ़े दस से तीन बजे तक सजे दीवान में हजूरी रागी भाई भरपूर सिंह ने गुरुनानक जी द्वारा रचित वाणी का गायन किया. श्री दरबार साहिब अमृतसर से पधारे हजूरी रागी भाई ओंकार सिंह ने अपनी मीठी आवाज में जाहर पीर जगत गुरु बाबा ... और प्रगट भई सगले जुगांतर गुरु नानक की वडआई ... प्रस्तुत कर संगत को गुरवाणी से जोड़ा. गुरुनानक स्कूल के बच्चों ने भी कीर्तन गायन कर सब का मन मोहा. दोपर साढ़े 12 बजे से अटूट लंगर बरता. बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने गुरु का प्रसाद पाया.

मेदिनीनगर

गुरु नानक देव जी की जयंती के अवसर पर श्री गुरु सिंह सभा पलामू के द्वारा मेदिनीनगर के बेलवाटिकट स्थित गुरुद्वारा से भव्य शोभा यात्रा निकाली गई. इस अवसर पर हजूरी रागी तख्त केसगढ़ साहिब के भाई कुलविंदर सिंह जी अपने जत्था के साथ उपस्थित रहे और लोगों को गुरु नानक देव जी महाराज की वाणी से अवगत कराया. साथ ही स्थानीय राजी जत्था ज्ञानी सुंदर सिंह के द्वारा मेदिनीनगर वासियों को गुरु नानक देव जी महाराज के वाणी से परिचित कराया.शोभा यात्रा श्री गुरु सिंह सभा के प्रधान सतबीर सिंह राजा के नेतृत्व में निकाली गई.शोभा यात्रा के दौरान पंच प्यारे का दो जत्था आगे आगे चल रहा था. पहले जत्था में 7 से 10 वर्ष के 5 बच्चे एवं दूसरी जत्था में 5 नौजवान सिक्ख चल रहे थे. बाल पंच प्यारे के रूप में फतेह सिंह, कुंवर सिंह, पुनीत सिंह, मन्नत सिंह, राजपाल सिंह एवं युवा पांच प्यार के रूप में मनजीत सिंह, गुरदेव सिंह, हरप्रीत सिंह, उपेंद्र सिंह, उत्तम सिंह शामिल थे.शोभा यात्रा का मुख्य आकर्षण लुधियाना से आए गदका पार्टी के द्वारा युद्ध कला की प्रस्तुतियां थी. इस गदका पार्टी की प्रस्तुतियां शहर के विभिन्न चौक चौराहों पर की गई. तमाम प्रस्तुतियां गदका जत्था के प्रधान मनिंदर सिंह के नेतृत्व में किया गया.

हजारीबाग

सिखों के प्रथम गुरु गुरुनानक जी की 554 वां प्रकाश पर्व श्रद्धा एवं भक्ति भाव के साथ धूमधाम से मनाया गया. इस अवसर पर गुरुद्वारों में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी. गुरुद्वारों को फूलों और रंग-बिरंगी झालरों से सजाया गया था. सुबह से ही श्रद्धालु माथा टेकने ने लिए गुरुद्वरा पहुंच रहे थे. इस अवसर पर 48 घंटे से चल रहे अखंड पाठ का समापन हो गया. पंजाब भटिंडा से आए हजूरी रागी दस्ता भाई गुरु भेज सिंह अपने कीर्तन से संगत को निहाल किया .मौके पर कीर्तन दरबार में गुरु के संदेश और जीवन पर प्रकाश डाला गया. प्रकाश पर्व पर सोमवार को आयोजित दीवान में जिला प्रशासन के अधिकारियों के साथ शहर के गणमान्य और राजनीतिक दलों के लोग भी शामिल हुए .मौके पर सिख समुदाय की ओर से कई गणमान्य लोगों को सरोपा देकर सम्मानित किया गया . इस दौरान गुरुद्वारा में भारी संख्या में महिलाओं की भी उपस्थित देखने को मिली. विभिन्न समुदाय के लोगों ने शीष झुका कर आशीर्वाद लिया.इस दौरान अटूट लंगर की भी व्यवस्था की गई थी जिसका लोगों ने लुत्फ उठाया.

लातेहार

लातेहार प्रखंड कार्यालय परिसर में सीआरपीएफ की 11 वीं बटालियन के मुख्यालय में सिख समुदाय के द्वारा गुरूनानक जयंती मनाई गई. मौके पर अखंड पाठ और अरदास किया गया. इसके बाद लंगर का आयोजन किया गया. इसमें काफी संख्या में लोगों ने भाग लिया. अरदास करते हुए ग्रंथी सुरजीत सिंह ने कहा कि कार्तिक पूर्णिमा के दिन ही सिख धर्म के संस्थापक और पहले गुरु गुरुनानक देव का जन्म हुआ था. गुरु नानक देव ने आपासी भाईचारा, एकता और जातिवाद को मिटाने का संदेश दिया. गुरु नानक जी ने अपने मन के अंदर की बुराइयों को त्यागने का संदेश दिया और कहा कि इससे आपके मन का अहंकार भाग जायेगा. प्रधान गुरमीत सिंह ने कहा कि गुरु नानक जी ने कहा था कि जैसे नाव पर बैठकर नदी पार किया जाता है, सही ज्ञान और भक्ति से इस संसार में ईश्वर के निकट जाया जा सकता है. ईश्वर को पाना आसान नहीं है. ईश्वर को पाने के लिए अपने अंदर का मोह, लोभ व अंहकार त्यागना पड़ता है. मौके पर सीआरपीएफ 11 बटालियन के द्वितीय कमांडेंट प्रणव आनंद झा, डॉ. अमूल्य कुजूर, जयवीर सिंह, राजा सिंह तोमर, सूबेदार सिंह, विनोद प्रकाश मल्लान, शिव कुमार भास्कर, बाबू भास्कर, गुलशन भास्कर, माखन सिंह, बिट्टू सिंह, हरजिंदर सिंह, अरमिंदर सिंह व गौरव मल्लान समेत कई लोग लोग मौजूद थे.

सिंदरी

सिखों के पहले गुरु गुरुनानक देव जी की जयंती यहां धूम धाम से संपन्न हो गई. सिंदरी गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा इस मौके पर समारोह का आयोजन किया गया. दिन में कीर्तन का आयोजन किया गया. वहीं देर शाम आतिशबाजी के साथ समारोह संपन्न हुआ. इस मौके पर कई अतिथियों को अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया गया. सिंदरी गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान डॉ. स्मृति नागी ने बताया कि गुरुनानक जयंती को लेकर कई दिनों से चल रही गुरु ग्रंथ साहिब के पाठ की समाप्ति सोमवार को हुई. सरदार लखजीत सिंह ने निशान साहिब की सेवा की. पटना से आए रागी जत्था जगत सिंह की टीम व स्थानीय जत्थों द्वारा शब्द कीर्तन किया. इसके बाद सिंदरी गुरुद्वारा के ग्रंथी सरदार बलबीर सिंह ने गुरु ग्रंथ साहिब के सामने पूरे विश्व की भलाई के लिए अरदास लगाई और संगत के बीच गुरु का अटूट लंगर लोगों ने छका. इस मौके पर सिख समुदाय सहित अन्य लोगों ने भी मत्था टेका और लंगर का लुत्फ उठाया.

झारखंड में हर्ष और उल्लास के साथ मनी गुरुनानक देव जी की जयंती

सुणी पुकारि दातार प्रभु गुरु नानक जग माहि पठाइआ

रोशनी से जगमग कर रहे थे गुरुद्वारे

कलि तारण गुरु नानक आइआ

धनबाद

सिखों के प्रथम गुरु गुरुनानक देव का प्रकाशोत्सव सोमवार को निरसा और मैथन क्षेत्र में श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया. इस विशेष मौके पर गुरु सिंह सभा की ओर से निरसा गुरुद्वारा में विशेष दीवान सजाया गया और गुरु के सम्मान में भजन-कीर्तन प्रस्तुत किया गया. गुरुद्वारा को फूल, लाइट व बैलून से आकर्षेक ढंग से सजाया गया है. समाज के लोगों ने सुबह में गुरुद्वारा पहुंचकर गुरु के चरणों में मत्था टेका और अरदास की. पूर्व विधायक अरूप चटर्जी ने भी गुरुद्वारा में मत्था टेका और भजन-कीर्तन में भाग लिया.

प्रभात फेरी में बड़ी संख्या में शामिल हुए श्रद्धालु : इससे पूर्व सुबह में प्रभातफेरी निकली गयी, जिसमें बड़ी संख्या में समाज के लोग शामिल हुए. गुरुद्वारा कमेटी के सदस्य मंजीत सिंह ने बताया कि पहले गुरु गुरुनानक देव ने दुनिया में ओंकार का संदेश दिया. गुरुनानक देव जी ने हमेशा जात-पात का विरोध किया और लोगों को मिलकर चलने का संदेश दिया था. उन्होंने अपने समय में लंगर की शुरुआत की थी, जिसका मकसद था छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब सब एक साथ बैठकर भोजन कर सकें. किसी के मन में किसी भी व्यक्ति के लिए भेदभाव न हो. मौके पर काफी संख्या में सिख समेत अन्य समाज के कई गणमान्य लोग मौजूद थे.

जमशेदपुर

सिखों के प्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव जी के 554वें प्रकाश पर्व के पावन अवसर पर सोमवार सुबह बिष्टुपुर जी टाउन गुरुद्वारा से नगर कीर्तन के रूप में भव्य शोभायात्रा निकाली गई. नगर कीर्तन पूर्व निर्धारित मार्ग से होते हुए साकची गुरुद्वारा में शाम साढ़े चार बजे पहुंच कर संपन्न हुई. जहां आतिशबाजी के साथ पालकी साहिब का स्वागत किया गया. नगर कीर्तन के दर्शनीय आयोजन और सफलता के लिए सेंट्रल गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (सीजीपीसी) पूरी तरह से तत्पर रही. इस दौरान सभी गुरुद्वारा के प्रतिनिधि भी सक्रिय थे. बिष्टुपुर गुरुद्वारा से गुरु महाराज की पालकी साहिब की रवानगी अरदास के बाद हुई. यहां मौजूद गुरुप्रेमी साध-संगत ने गुरु महाराज की शान में पुष्प वर्षा की.

गणमान्य लोगों ने भरी हाजरी : पालकी साहिब के स्वागत के लिए नगर कीर्तन वाले मार्ग में 35 से अधिक सजावटी तोरण द्वार व 50 से ज्यादा शिविर लगाये गए थे. इन शिविरों में बिस्कुट, फल, चाकलेट, पानी सहित अन्य खाद्य पदार्थ का वितरण किया गया था. नगर कीर्तन में सांसद विद्युत वरण महतो, मंत्री बन्ना गुप्ता, विधायक सरयू राय, संजीव सरदार, मंगल कालिंदी, भाजपा नेता नीरज सिंह समेत विभिन्न राजनीतिक व समाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने अपनी हाजिरी भरी. नगर कीर्तन के दौरान ट्रैफिक की जिम्मेदारी सेंट्रल सिंह नौजवान सभा ने संभाल रखी थी.

मार्ग रहा व्यस्त: इस दौरान शहर के सभी गुरुद्वारों में शब्द-कीर्तन का विशेष आयोजन किया गया था. साथ ही इस अवसर पर गुरुद्वारों में अटूट लंगर की व्यवस्था थी. प्रकाश पर्व को लेकर शहर के सभी गुरुद्वारों को भव्य तरीके से सजाया गया था. इस पल को ऐतिहासिक बनाने के लिए बच्चे, बड़े, महिलाएं हज़ारों की संख्या में नगर कीर्तन में शामिल हुए. नगर कीर्तन में सतनाम वाहे गुरु के जयकारे गूंजते रहे. इधर, नगर कीर्तन को लेकर शहर में ट्रैफिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए जगह-जगह पुलिस बल की तैनाती की गई थी.

चाकुलिया

चाकुलिया के नया बाजार स्थित आनंद मार्ग स्कूल में सोमवार को सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव जी की 554 वीं जयंती बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया. इस अवसर पर स्कूल के प्रधानाध्यापक सुनील कुमार महतो, सुमन साव, नवीन कुमार महतो, प्रसेनजीत महतो, रामकृष्ण दास, शंभू नाथ महतो, सुशांत महतो, सतीश चंद्र मुर्मू, मलय महतो, हरप्रीत सिंह, अमरप्रीत सिंह ने गुरु नानक देव के चित्र पर पुष्प अर्पित कर नमन किया. इस अवसर पर विद्यालय के विद्यार्थी उपस्थित रहे. प्रधानाध्यापक सुनील कुमार महतो ने गुरु नानक देव की जीवनी से प्रेरणा लेने की बात कही.

साहिबगंज

गुरुनानक जी की जयंती यानी प्रकाश उत्सव हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया. इस अवसर पर गुरुद्वारा के ग्रंथी भाई आनंद सिंह के नेतृत्व में सिख समुदाय के लोग उपस्थित हुए. जहां गिरजा सिंह, रघुवीर सिंह ,जगजीत सिंह ,रवि सिंह, मनप्रीत सिंह चरणजीत कौर, गुरदयाल कौर ,बलजीत कौर ,जिया सिंह, हरपाल सिंह सहित ऐसे अनेक सिख समुदाय के श्रदधालुओं ने गुरुद्वारा में जाकर माथा ठेका. इस दौरान गुरुद्वारे में का लंगर का भी आयोजन किया गया था. इस मौके पर न्यू रोड स्थित गुरुद्वारे में तीन दिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया.

नोवामुंडी

गुरुनानक देव जी का 557 वां प्रकाशोत्सव गुवा के गुरुद्वारा में सोमवार को धूमधाम से मनाया. इस अवसर पर गुरुद्वारा को फूलों, लाइट व बैलून से सजाया गया था. प्रकाशोत्सव गुरुनानक देव जी की जयंती पर गुरुद्वारा के ग्रंथी दिलबाग सिंह ने गुरु ग्रंथ साहब का पाठ पढ़ा. इस अवसर पर गुरुद्वारा में आयोजित कार्यक्रम में आसपास के सिख समुदाय सहित अन्य धर्मावलंबी तथा गुवा सेल के पदाधिकारीगण भी शरीक हुए. इस दौरान गुरुद्वारा में लंगर की भी व्यवस्था की गई. जिसमें सभी को बैठाकर भोजन कराया गया. गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्यों ने बताया कि गुरुनानक देव जी की जयंती के मौके गुरुद्वारा में कीर्तन, दरबार तथा कथा का आयोजन किया गया.इस मौके पर दिलबाग सिंह, प्रेमजीत सिंह, कलविंदर सिंह, जसपाल सिंह, इंद्रपाल सिंह, कमलजीत सिंह, पुनीत सिंह, सुमित सिंह के अलावे गुवा सेल के मुख्य महाप्रबंधक कमल भास्कर, श्रीमंत पंडा, एनके झा, दीपक प्रकाश सहित काफी संख्या में सिख समुदाय के लोग मौजूद थे.

चक्रधरपुर

चक्रधरपुर में सोमवार को हर्षोल्लास के साथ गुरुनानक देव जी का प्रकोशोत्सव मनाया गया.इस अवसर पर चक्रधरपुर के गुरुद्वारा में पिछले तीन दिनों से चल रहे अखंड पाठ का समापन हुआ. इसके बाद भजन कीर्तन प्रारंभ किया गया, जो दोपहर तक चला.इस मौके पर सिख समुदाय के सैकड़ों महिला-पुरूष व बच्चे शामिल हुए.वहीं चक्रधरपुर के विधायक सुखराम उरांव,पूर्व जिलाउपाध्यक्ष सह समाजसेवी श्याम सुंदर महतो के अलावे शहर के विभिन्न सामाजिक संगठनों से जुड़े लोगों ने भी गुरुद्वारा पहुंचकर गुरुसभा की पालकी के समक्ष माथा टेका. इस अवसर पर गुरूद्वारा के भीतर गुरू साहब की पालकी को आकर्षक तरीके से सजाया गया था. साथ ही गुरूद्वारा के बाहर भी साज सज्जा की गई थी.दोपहर में भजन कीर्तन के बाद लोगों ने लंगर चखा.जहां बड़ी संख्या में लोग उपस्थित हुये. इस मौक पर चक्रधरपुर गुरूद्वारा कमेटी के सभी सदस्यों के अलावे बड़ी संख्या में महिला-पुरूष मौजूद थे.

चाईबासा

चाईबासा के गुरुद्वारा में सोमवार को सिख समुदाय की ओर से श्री गुरू नानक देव का प्रकाश उत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया. गुरूद्वारा नानक दरबार चाईबासा में श्रद्धा एवं हर्षोल्लास भक्तों ने माथा टेका. इस बार श्री गुरु नानक देव का प्रकाश उत्सव को ऐतिहासिक बनाने का प्रयास सिख समुदाय की ओर से किया गया. गुरू पर्व में जमशेदपुर से विशेष तौर से जसपाल सिंह छाबड़ा शामिल हुए. उन्होंने गुरुद्वारा में दोपहर को कीर्तन किया. मौके पर गुरु नानक सिख समुदाय के अध्यक्ष गुरप्रीत सिंह खोखर ने कहा कि प्रत्येक साल की तरह इस साल भी धूमधाम से कार्यक्रम का आयोजन किया गया. पिछले कई दिनों से शोभायात्रा निकाली जा रही थी. सोमवार को भी सुबह-सुबह यात्रा निकाला गया. साथ ही दिन भर गुरुद्वारे में पूजा अर्चना व कीर्तन किया गया. लंगर भी लगाया गया. इस दौरान कई प्रमुख लोग गुरुद्वारा पहुंचकर गुरु नानक की तस्वीर पर माथा टेका. मालूम हो कि चाईबासा में लगभग 40 से अधिक परिवार निवास करते हैं. गुरुद्वारा में पिछले कई दिनों से सिख समुदाय का आना-जाना लगा रहा. सिख समुदाय के बुद्धिजीवियों ने कहा कि अरदास के उपरांत प्रसाद एवं लंगर दिया गया.

गिरिडीह

27 नवंबर को_शहर के स्टेशन रोड स्थित गुरुद्वारा में सिख समुदाय द्वारा गुरुनानक देव की 554 वीं जयंती समारोह पूर्वक मनाया गया . मौके पर गुरुद्वारा स्थित गुरु सिंह सभा में स्थानीय रागी जत्था द्वारा शबद कीर्तन प्रस्तुत किया गया . शबद कीर्तन के उपरांत लंगर का आयोजन किया गया . इस दौरान जेएमएम विधायक सुदिव्य कुमार सोनू भी मौजूद रहे . मौके पर उन्होंने कहा कि गुरुनानक देव जी के बताए रास्ते पर चलने की जरूरत है . उन्होंने सभी सिख समुदाय के लोगों को गुरुनानक देव के प्रकाश पर्व की बधाई दी . उन्होंने कहा कि वे हमेशा सिख समुदाय के लिए खड़े रहेंगे . मौके पर डीसी नमन प्रियेश लकड़ा,गुणवंत सिंह मोंगिया,अमरजीत सिंह सलूजा, हरप्रीत सिंह,चरणजीत सिंह सलूजा, नरेंद्र सिंह सलूजा, तरनजीत सिंह सहित कई अन्य लोग मौजूद रहे . गुरुद्वारा को बहुत ही आकर्षक तरीके से सजाया गया था .

ब्रीफ खबरें

प्रतियोगिता में 600 प्रतिभागी लेंगे भाग

बाघमारा। विद्या विकास समिति झारखंड के तत्वावधान में सरस्वती शिशु विद्या मंदिर बाघमारा में मंगलवार से 28 से 30 नवंबर तक 34वां प्रांतीय खेलकूद समारोह का आयोजन किया जायेगा. इस प्रतियोगिता में विद्या विकास समिति झारखण्ड द्वारा संचालित झारखंड प्रांत के विभिन्न विद्यालयों के शिशु वर्ग के कक्षा पांच तक के करीब 600 प्रतिभागी छात्र-छात्राएं भाग लेंगे. समारोह का उद्घाटन 28 नवंबर के दिन अपराह्न 3 बजे किया जायेगा. समारोह के मुख्य अतिथि अशोक कुमार श्रीवास्तव, सह संघचालक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, झारखण्ड प्रांत तथा अध्यक्ष विद्या विकास समिति झारखण्ड, विशिष्ट अतिथि किरण रानी नायक के साथ कई गणमान्य लोग उपस्थित रहेंगे.

गो तस्करी पर नियंत्रण जरूरी : राजीव रंजन

गिरिडीह। राज्य गो सेवा आयोग के अध्यक्ष सह कांग्रेस नेता राजीव रंजन प्रसाद सोमवार को गिरिडीह पहुंचे. कांग्रेस कार्यालय में कार्यकर्ताओं ने उनका जोरदार स्वागत किया. इसके बाद वह पचम्बा गोपाल गोशाला मेला पहुंचे और गोशाला प्रबंधन समिति के राज्य भर से आए प्रतिनिधियों के साथ बैठक की. दो सत्र में चली बैठक के बाद पत्रकारों से बातचीत में राजीव रंजन ने राज्य में गो हत्या व गो तस्करी की घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि सभी जिलों के डीसी व एसपी को इस पर रोक लगाने की दिशा में काम करना चाहिए. उन्होंने कहा कि गोशाला के संचालन में आ रहे परेशानियों को देखते हुए तेजी से होम वर्क किया जा रहा है.

रायवल को हरा कर मेघाहातुबुरू फाइनल में

चाईबासा। पश्चिमी सिंहभूम जिला क्रिकेट संघ के तत्वावधान में चल रहे अंतर एसआर रूंगटा बी-डिविजन लीग के अंतर्गत सोमवार को खेले गए दूसरे सेमीफाइनल मैच में मेघाहातुबुरू क्रिकेट क्लब की टीम ने रायवल क्लब गुवा को 46 रनों से पराजित कर फाइनल में अपना स्थान पक्का कर लिया. अब फाइनल में मेघाहातुबुरू क्रिकेट क्लब का मुकाबला स्टूडेंट क्लब चाईबासा से बुधवार 29 नबंबर को होगा. स्थानीय बिरसा मुंडा क्रिकेट स्टेडियम मैदान पर खेले गए सेमीफाईनल मैच में टॉस रायवल क्लब के कप्तान ने जीता तथा विपक्षी टीम को पहले बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किया. उनका यह निर्णय सही साबित नहीं हुआ और मेघाहातुबुरू की टीम ने निर्धारित तीस ओवर में 260 रन ठोक डाले.

सीआरपीएफ जवान ने खुद को मारी गोली, मौत

गुमला। जिले के सिलम स्थित 218 सीआरपीएफ कैंप में एक जवान ने खुद को गोली मार ली.यह घटना सोमवार की देर शाम हुई.घटना के बाद उसकी मौत हो गई है.मृत जवान हिमाचल प्रदेश का रहने वाला था और उसका नाम संजय कुमार है.घटना के बाद गुमला के एसपी हरविंदर सिंह, एसडीपीओ मनीष चंद्र लाल, थाना प्रभारी विनोद कुमार सहित अन्य पदाधिकारी सीआरपीएफ कैंप पहुंचे. हालांकि घटना की वजह अबतक सामने नहीं आयी है.जवान ने बीते 20 नवंबर को ही 15 दिन की छुट्टी के बाद ड्यूटी ज्वाइन किया था.उसकी मां की तबीयत खराब रहती है, जिसे लेकर वह छुट्टी पर था और छुट्टी समाप्त कर वापस ड्यूटी पर आया था.

स्वतंत्रता सेनानी रमणी मोहन झा का निधन

गोड्डा। जिले के स्वतंत्रता सेनानी रामणी मोहन झा का सोमवार को 111 वर्ष की उम्र में निधन हो गया. वह कुछ दिनों से बीमार चल रहे थे. मूलतः बिहार के सहरसा निवासी रमनी मोहन झा गोड्डा के सैदापुर में अपनी नानी के घर बस गए थे.निधन की सूचना मिलते ही उपायुक्त जिशान कमर, पुलिस अधीक्षक नाथू सिंह मीणा, सदर एसडीओ, सहित कई अधिकारी और गणमान्य लोगों ने उनके गोड्डा स्थित आवास पहुंचकर श्रद्धांजलि दी. उनका अंतिम संस्कार दिन के करीब तीन बजे सदर प्रखंड के सैदापुर ग्राम के समीप रमणी कुटिया में राजकीय सम्मान के साथ किया गया.उनके पुत्र जगधात्रि झा ने बताया कि स्वतंत्रता आंदोलन में पिता का कार्य क्षेत्र गोड्डा ही था.उस दौरान उनके घर को अंग्रेजों ने गिरा दिया था.

नालसा और झालसा रांची के निर्देश पर जिला विधिक सेवा सशक्तीकरण शिविर का आयोजन

जानकारी के अभाव में लोग न्याय से वंचित हो जाते हैं : डीसी

संवाददाता । पाकुड़

नालसा नई दिल्ली एवं झालसा रांची के निर्देश पर जिला विधिक सेवा प्राधिकार पाकुड़ के तत्वाधान में आज सोमवार को प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार पाकुड़ बाल कृष्ण तिवारी की अध्यक्षता में पाकुड़ समाहरणालय सभागार में विधिक सेवाएं सशक्तिकरण शिविर का आयोजन की गई. इस कार्यक्रम की शुरुआत प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश (पीडीजे) सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार पाकुड़ बाल कृष्ण तिवारी, उपायुक्त मृत्युंजय कुमार बरनावाल, प्रधान न्यायाधीश कुटुंब न्यायालय राधा कृष्ण, बार एसोसिएशन के अध्यक्ष मो मोहिउद्दीन, उप विकास आयुक्त शाहिद अख्तर, सचिव शिल्पा मुर्मू ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित की. पीडीजी ने कहा कि विधिक सेवाएं के अंतर्गत सभी वर्गों के लोगों यथा महिला, विधवा, बच्चे, बुजुर्ग, दिव्यांग, अनुसूचित जाति /अनुसूचित जनजाति पीड़ितों व असहाय एवं किन्नरों इत्यादि को सशक्त बनाने एवं लाभ प्रदान करने के लिए विधिक सेवाएं सशक्तिकरण शिविर कार्यक्रम आयोजित की गई है.

खास बातें

- पीड़ितों को लाभ प्रदान करने के लिए कार्यक्रम आयोजित
- हर मगंलवार व शुक्रवार को लगाया जाता है जनता दरबार

पीडीजे ने कहा कि गरीब अशिक्षा या कोई अन्य कारणों से कानूनी लाभ से वंचित न हो इसके लिए लीगल एड डिफेंस काउंसिल सिस्टम में अधिवक्ता द्वारा निःशुल्क सभी संबंधित मामलों के सारे प्रक्रिया एवं सुलहनीय वादों का निष्पादन किया जाता है. डीसी ने बताया कि कानूनी जानकारी के अभाव में लोग न्याय से वंचित हो जाते हैं. विधिक सेवाएं सशक्तिकरण कार्यक्रम आयोजित होने से लोगों को कानून के जानकारी मिलने के साथ कनूनी तौर पर सशक्त हो सके. उन्होंने बताया की लोगों की समस्या का समाधान हेतु प्रत्येक मगंलवार और शुक्रवार को जनता दरबार लगाई जाती है. डीडीसी डॉ शाहिद अख्तर ने कहा कि सरकार के सभी योजनाओं का लाभ लोगों को मिल सके. साथ ही निशुल्क विधिक सहायता प्रदान करने में कोई भी परेशानी हो तो पीएलवी सभी प्रखंड में मौजूद है, जो विधिक सहायता प्रदान करने में सहयोग करता है.

कोल किंग सुरेश सिंह हत्याकांड के मुख्य आरोपी शशि की फरारी के 12 साल

12 साल से फरार शशि के बाद प्रिंस खान भी इनामी

संवाददाता। धनबाद

कोयला किंग सुरेश सिंह हत्याकांड के मुख्य आरोपी शशि सिंह की फरारी के 12 साल होनेवाले हैं. इसी दिसंबर माह की सात तारीख को शशि सिंह की फरारी को 12 साल पूरे हो जाएंगे. शशि सिंह धनबाद के मोस्ट वांटेड इनामी की सूची में शामिल है. हालांकि, धनबाद में फरार शातिरों की सूची में प्रिंस खान ने सबसे लंबी उड़ान के साथ पहले पायदान पर कब्जा किया है.

शशि के लिए पचास हजार का इनाम है जबकि, प्रिंस खान पर 30 लाख का इनाम है. इन दोनों के अलावा गोपी खान, नक्सली अजय महतो और दुर्योधन महतो भी लाखों के इनामी हैं जबिक मोस्टवांटेड फरारी में राजेश उर्फ छोटू पांडेय, संजय वर्णवाल, दौलत साव, आशीष रंजन उर्फ छोटू प्रमुख हैं. ऐसे बड़े अपराधियों को दबोचने में धनबाद पुलिस अक्सर गच्चा खा जाती है.

सुरेश सिंह हत्याकांड से फरार है शशि : 07 दिसंबर 2011 को एक शादी समारोह में सुरेश सिंह को गोलियों से छलनी कर दिया गया था. इस मामले में शशि सिंह को मुख्यारोपी बनाया गया. तभी से शशि सिंह फरार है. शशि की गिरफ्तारी के लिए कई बार टीमें बनीं, धनबाद से लेकर बलिया तक पुलिस ने छाक खानने की बात कही हालांकि फरारी में ही उसकी शादी हुई. शशि सिंह की पत्नी आसनी सिंह ने इस दौरान बलिया के दोआबा विधानसभा से चुनाव भी लड़ा, इस चुनाव कैंपिंग में शशि सिंह के मौजूद होने की बात कोयलांचल में आम रही. बावजूद इसके आज भी शशि धनबाद पुलिस की फरारी सूची की शोभा बने हुए हैं. अब बात गैंगस्टर प्रिंस खान की करते हैं, शशि सिंह जो संभवतः देश के अंदर ही हो सकता है, इसका बाद भी पुलिस की निगाह से गायब है, ऐसे में दुबई में शरण ले चुके गैंगस्टर प्रिंस खान की गिरफ्तारी का इंतजार कितना लंबा हो सकता है ये तो भविष्य के गर्भ में है.

डॉन ब्रजेश को रिमांड पर नहीं ले पाई धनबाद पुलिस

डॉन ब्रजेश सिंह के भतीजे सह कोल कारोबारी प्रमोद सिंह की हत्या के बाद से झरिया सिंह मैंशन के युवराज माने जाने वाले राजीव रंजन सिंह लापता हो गए. कई सालों बाद दिल्ली एटीएस ने डॉन ब्रजेश सिंह को दबोचा था. उस वक्त पुलिस पूछताछ में पहली बार ये बात सामने आई थी कि राजीव रंजन सिंह की हत्या हो चुकी है. इधर धनबाद में उसके लापता के बाद तत्कालीन विधायक कुंती देवी केबयान उसके अपहरण होने का मुकदमा दर्ज था. जब राजीव रंजन की हत्या की बात सामने आई तो धनबाद पुलिस ने डॉन ब्रजेश सिंह को रिमांड पर लेकर राजीव रंजन कांड में खुलासा करने का दावा किया था, लेकिन ऐसा कभी नहीं हो पाया. अंत में कोर्ट ने तय मियाद पूरा होने के बाद राजीव रंजन को मृत घोषित कर दिया.

खास बातें

- डॉन ब्रजेश सिंह को रिमांड पर नहीं ले पाई पुलिस
- धनबाद के मोस्ट वांटेड इनामी की सूची में शशि सिंह

बाहुबली अनंत सिंह से पूछताछ भी नहीं

साल 2010 में बीसीसीएल में बिजली के छोटे-मोटे एक ठेकेदार को गोली मार दी गई थी. उक्त ठेकेदार असल में यहां नाम बदलकर धनसार थाना क्षेत्र में रह रहा था. वारदात के बाद उसके परिजनों से ये जानकारी मिली कि मोकामा में तत्कालीन विधायक अनंत सिंह से पारिवारिक दुश्मनी थी. इस कारण वह मोकामा से भागकर यहां रहता था. लेकिन अंत में उसे खोजकर मौत के घाट उतार दिया गया. इस मामले में विधायक अनंत सिंह को नामजद आरोपी बनाया गया था. दशक बीत गए लेकिन अनंत सिंह समेत कांड के अन्य आरोपियों को पुलिस नहीं पकड़ पाई.

आदिवासी कला की रक्षा के लिए क्लब कृत संकल्प है : रामदास

संवाददाता। घाटशिला

घाटशिला प्रखंड के दामपाड़ा क्षेत्र में पंडित रघुनाथ मुर्मू मेमोरियल क्लब पुखुरिया के सौजन्य से सोमवार को सोहराय पर्व का आयोजन किया गया. समारोह में उपस्थित मुख्य अतिथि विधायक रामदास सोरेन ने कहा कि बहुत ही गौरव की बात है आदिवासी कला संस्कृति सभ्यता परंपरा भाषा की रक्षा के लिए क्लब कृत संकल्प है. उन्होंने समारोह के आयोजकों की प्रशंसा की. समारोह में विभिन्न क्षेत्र से 35 नृत्य संगीत दल सम्मिलित हुए थे.

मुख्य अतिथि ने कहा आज हेमंत सोरेन के नेतृत्व में राज्य सरकार के माध्यम से सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, सिंचाई रोजगार के क्षेत्र में तत्परता के साथ कार्य किया जा रहा है. आदिवासियों के लिए आदिवासी कला संस्कृति विकास भवन, ग्राम प्रधानों को मोटरसाइकिल, धूम कुड़िया भवन, उच्च शिक्षा के लिए विदेश में पढ़ाई, धर्मस्थल की चहारदीवारी का निर्माण मुख्य रूप से कार्य किया जा रहा हैं. उन्होंने कहा वर्तमान में अबुआ आवास राज्य सरकार के जनहित योजना का एक ज्वलंत उदाहरण है. कार्यक्रम में प्रखंड प्रमुख सुशीला टुडू, माझी बाबा बंकिम चंद्र टुडू, कानू सामंत, प्रधान सोरेन, जगदीश भकत, सोनाराम सोरेन, मुखिया फागु सोरेन दसमत सोरेन, क्लब के अध्यक्ष गुरचरण हांसदा मुख्य रूप से उपस्थित थे. विजेता उपविजेता एवं अन्य दल को मुख्य अतिथि एवं अतिथियों के द्वारा पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया.

सरकार को दृढ़ संकल्पित होना होगा: मरांडी

संवाददाता। गोड्डा

राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री सह विपक्षी विधायक दल के नेता बाबूलाल मरांडी ने सोमवार को गोड्डा जिला के सुंदरपहाड़ी प्रखंड अंतर्गत बड़ा सिंदरी जोलो पहाड़ सहित अन्य मलेरिया प्रभावित गांवों का दौरा किया. मरांडी ने ग्रामीणों से मुलाकात कर उनके हाल जाना और चल रहे ईलाज की भी जानकारी ली. इस अवसर पर मरांडी ने कहा कि सूबे के मुख्यमंत्री दो दिन पूर्व इसी क्षेत्र के बगल में आए मगर, इन प्रभावित गांवों में आकर पीड़ित परिवार से मिलना आवश्यक नहीं समझा. यह बात समझ से परे है, आखिर पहाड़िया आदिवासी जनजाति के लोगों को यूं ही मरने क्यों छोड़ दिया गया है. मैं भी मुख्यमंत्री था. एक सीएम को सब पावर होता है. सीएम अधिकारियों को साथ लेकर आते और एक ही आदेश पर बिजली, सड़क, पानी सब की व्यवस्था हो जाती मगर शायद उन्हें यह मंजूर नहीं है. मरांडी ने कहा कि चिकित्सा कैंप में डॉक्टर को प्रतिनियुक्ति किया जाना चाहिए ताकि, डॉक्टर की निगरानी में इलाज किया जा सके. उन्होंने कहा कि सरकार अगर चाहेगी तो पहाड़िया आदिवासी क्षेत्रों में समय पर स्कूल खुलेंगे और सड़कें भी बनेगी तथा सभी योजनाओं का लाभ जरूरतमंद तक पहुंचेगी. मगर, इसके लिए सरकार को दृढ़ संकल्पित होना होगा. इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष राजीव मेहता, महामंत्री कृष्ण मुरारी चौबे, जिला उपाध्यक्ष संजीव मिश्रा, लक्ष्मी चक्रवती, कोषाध्यक्ष अनिल साह, मीडिया प्रभारी बिमंत साह, पूर्व जिला परिषद सदस्य फूलकुमारी,जिला परिषद सदस्य राघवेंद्र सिंह, एसटी मोर्चा के जिला अध्यक्ष प्रबोध सोरेन, सिमोन मालती, रविंद्र टुडू, महिला नेत्री परिणीता झा आदि उपस्थित थे.

लेटलतीफी धनबाद से गुजरने वाली 81 ट्रेनों में 365 दिन विलंब से चलती है शक्तिपुंज और जम्मूतवी

रोजाना विलंब से चल रहीं 100 में 42 फीसदी ट्रेनें

संवाददाता। धनबाद

ट्रेनों की लेट लतीफी कोई नई बात नहीं, लेकिन एक-दो ट्रेन अगर सालों भर विलंब से चले तो इसमें रेलवे के परिचालन विभाग के अधिकारियों की लापरवाही उजागर होना लाजिमी है. सूत्रों के अनुसार, रोजाना धनबाद से गुजरनेवाली 81 एक्सप्रेस-पैसेंजर ट्रेनों में 365 दिन जबलपुर से हावड़ा जानेवाली शक्तिपुंज एक्सप्रेस और जम्मू से कोलताता जानेवाली जम्मूतवी एक्सप्रेस विलंब से चल रही है. गत दिनों रेलवे बोर्ड की टीम ने पंक्चुएलिटी टेस्ट के बाद खुलासा किया है.

बोर्ड की टीम ने रिपोर्ट में लिखा है कि रोजाना 100 में 42 फीसदी ट्रेनें विलंब से चल रही है. यात्रियों और परिचालन विभाग के अधिकारियों व कर्मियों से फिडबैक लेने के बाद पता चला कि कभी रेल पटरियों पर मेनटेनेंस, तो कभी रूट रिले इंटरलॉकिंग, तो कभी जहां-तहां मालगाड़ियों के रूकी रहने की वजह से ट्रेनें विलंब हो जाती है. इसके अलावा ठंड के मौसम में दिसंबर से फरवरी तक ट्रेनें विलंब से चलती है. धनबाद रेल मंडल के भी परिचालन विभाग के अधिकारी बताते हैं कि वे लोग चाहते हैं कि कोई भी ट्रेन विलंब से ही 2 से 5 या 10 घंटे विलंब से चल रही है तो वे कुछ नहीं कह सकते हैं. यात्री कहते हैं कि शक्तिपुंज और जम्मूतवी रोजाना कभी 2 तो कभी 5 से 8-10 विलंब से धनबाद पहुंचती है. जरूरी काम से जाने वाले और बीमार यात्रियों को काफी परेशानी होती है. इन दो ट्रेनों के अलावा और भी कई ट्रेनें हैं, जो अक्सर विलंब से चलती है से न चले, लेकिन तकनीकी कारण या मालगाड़ी के जहां-तहां इजन फेल होने की वजह से कोई-कोई ट्रेन विलंब हो जाती है.

खास बातें

- रेलवे बोर्ड की टीम ने पंक्चुएलिटी टेस्ट के बाद किया खुलासा
- जहां-तहां मालगाड़ियों के रूकने से ट्रेनें विलंब हो जाती हैं

धनबाद रेल मंडल से होकर गुजरते समय विलंब नहीं होती है ट्रेनें

रेलवे के अधिकारी कहते हैं कि जबलपुर से हावड़ा जानेवाली शक्तिपुंज हो या फिर जम्मू से कोलकाता जानेवाली जम्मूतवी एक्सप्रेस या फिर कोई अन्य ट्रेन. धनबाद रेल मंडल के क्षेत्र में आने के बाद ट्रेनें तय ठहराव के बाद समय पर खुलती है और निर्धारित समय के भीतर दूरी तय करती है. दूसरे रेल मंडल के स्टेशनों से खुलने व गुजरने वाली ट्रेनें पहले

फील्ड अपडेट

उड़िया समाज पत्रिका की 104वीं वर्षगांठ मनाई गई

बहरागोड़ा। बहरागोड़ा प्रखंड क्षेत्र के खंडामौदा गांव में अवस्थित तारापद षाड़ंगी पाठागार प्रांगण में सोमवार को उड़िया समाज पत्रिका के 104 वां वर्ष पूर्ण होने पर समाज ओडिया पाठक मंच के द्वारा एक बैठक की गई. पूर्व शिक्षक राम रंजन बेरा के अध्यक्षता में उक्त बैठक संम्पन हुआ. जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व स्वास्थ्य मंत्री डॉक्टर दिनेश कुमार षाड़ंगी उपस्थित हुए.मुख्य अतिथि डॉक्टर षाड़ंगी द्वारा समाज पत्रिका वर्ष 1919 में उत्कल मणि पंडित गोपबंधु दास द्वारा कैसे सुरु किया गया उसके बारे में विस्तार पूर्वक वर्णन किया .साथ ही उसी समय से खंडामौदा पंचायत क्षेत्र में पाठक मंच तैयार हुआ था जो आज तक चल रहा है. इस मौके पर मुख्य रूप से मुखिया पंचानन मुंडा, मनोरंजन गिरी, विद्याधर बेरा, मृत्युंजय माइती, हरिपद पाल, भूतनाथ बेरा, इंद्रजीत दास, रामचंद्र बेज, अर्नव मिश्रा, विजय कुमार रथ, बंकिम चंद्र पाइकिराय, श्याम सुंदर बारीक, मोतीलाल महापात्र, सुधांशु महापात्र, शक्तिपद दास, रतिकांत सीट, निर्मल मंडल, आकुल बाग, हरिपद गिरि, प्रदीप बेसरा, जवाहरलाल पैड़ा आदि उपस्थित थे.

देव दीपावली पर गायत्री परिवार ने मनाया दीपोत्सव

मैथन। मैथन रांची कॉलोनी स्थित गायत्री मंदिर प्रांगण में सोमवार के शाम गायत्री परिवार एवं भारतीय संस्कृति मंच के तत्वाधान में दीप उत्सव मनाया गया, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने गायत्री मंदिर प्रांगण पहुंचकर पूजा अर्चना की और दीप उत्सव कार्यक्रम में भाग लिया. मौके पर क्षेत्र के जाने-माने नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉक्टर आर द्विवेदी ने हवन पूजन किया एवं लोगों को देव दीपावली व गुरु पूर्णिमा की बधाई दिया तथा भारतीय धार्मिक एवं संस्कृति से जुड़ने के लिए प्रेरित किया. मौके पर रुद्र प्रताप सिंह, सुदेश सिंह, पुरुषोत्तम पांडे सहित अन्य लोग मौजूद रहे.

मरीज के मौत पर परिजनों ने किया हंगामा

धनबाद। असर्फी अस्पताल में सोमवार की देर शाम मरीज की मौत होने पर परिजनों ने जमकर हंगामा किया. मरीज की उम्र करीब 90 वर्ष थी. भागलपुर के रहने वाले 90 वर्षीय राम कृष्ण धरमानी को पेट में दर्द और अन्य शिकायत पर 21 नवम्बर को भर्ती कराया गया था. परिजनों का आरोप था की इलाज में लापरवाही बरती गई है. हालांकि अस्पताल प्रबंधन नें इससे साफ इनकार किया. अस्पताल प्रबंधन नें बताया की मरीज के लीवर में पहले से समस्या थी. डॉक्टर नें पूरी जानकारी पहले ही परिजनों को दे दी. थी. परिजन शांत थे लेकिन अचानक ही बाहर से करीब 15 लोग अस्पताल में दाखिल हुए और हंगामा करने लगे. हालांकि मामला शांत होते ही इलाज में खर्च रकम को जमा कर परिजन शव लेकर लौट गए.

अब जापान सोतोकान कराटे एसोसिएशन बड़ाजामदा में

नोवामुंडी। वेल्डन फ्यूचर एकेडमी जापान सोतोकान कराटे एसोसिएशन (जेएसकेए) के तहत कराटे प्रशिक्षण चला रही है. ट्रैनर सेन्सेई अनिल कुमार सिंह चौथे डैन और अंतर्राष्ट्रीय ब्लैक बेल्ट हैं. रविवार दोपहर सेंसेई संदीप गुप्ता थर्ड डैन ब्लैक बेल्ट ने 17 कराटेका का टेस्ट लिया. अविश्री बोस, युबराज साहू, अनुश्री कुमारी और सुरियांशु प्रसाद ने अच्छा प्रदर्शन किया. पलक सिंह और नायला आनम ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया. केवल एक वर्ष के प्रशिक्षण के बाद उनमें से अधिकांश को आगामी राष्ट्रीय कराटे टूर्नामेंट के लिए शॉर्टलिस्ट किया गया है.जो दिसंबर के दूसरे सप्ताह में रांची खेलगांव स्टेडियम में आयोजित किया जाएगा. झारखंड कराटे डू फेडरेशन के सचिव राहुल गोप और ऑल इंडियन कराटे डू फेडरेशन के सचिव नंदजी प्रसाद ने आगामी राष्ट्रीय टूर्नामेंट के लिए चुने गए सभी कराटे का खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दीं.वेल्डन फ्यूचर एकेडमी के प्राचार्य मुकेश सिन्हा ने छात्रों की सफलता पर गर्व महसूस करते हुए कहा कि प्रत्येक छात्र, विशेषकर लड़कियों को सेल्फ डिफेंस से जुड़ना चाहिए.

एसएनटीआई में एआईएसआईटी 2023 का किया उद्घाटन

जमशेदपुर। द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) द्वारा टाटा स्टील के सहयोग से सोमवार को बिष्टुपुर स्थित एसएनटीआई में एआईएसआईटी 2023 का उद्घाटन किया गया. दो दिनों तक चलने वाले इस सेमिनार के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रुप में इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स के फेलो अवनीश गुप्ता मौजूद रहे वहीं सम्मानित अतिथि के रूप में एनआईटी नागालैंड के निदेशक डॉ. एस वेणुगोपाल ने मौजूद थे.

अतिथियों ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की. इस सेमिनार का उद्देश्य एक साझा मंच के माध्यम से शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों, इंडस्ट्रियल प्रैक्टिसिंग इंजीनियरों, छात्रों और ओईएम को एक साथ लाना है ताकि नए प्रौद्योगिकियों के बारे में अपने ज्ञान का आदान-प्रदान और उन्हें एक दूसरे के साथ साझा किया जा सके और उत्पादकता में सुधार और विकास के लिए नए शोध निष्कर्ष प्रस्तुत किए जा सकें.

झामुमो कार्यकर्ता कोयला चोरी में शामिल नहीं: लखी सोरेन

धनबाद। झारखंड मुक्ति मोर्चा का एक भी पदाधिकारी या कार्यकर्ता कोयला चोरी में शामिल नहीं है. कोयला और बालू चोरी भाजपा नेताओं का काम है. उक्त बातें झामुमो जिला कार्यालय में आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान जिलाध्यक्ष लखी सोरेन ने कही. जिलाध्यक्ष ने कहा कि कोयला चोरी में तबतक भाजपा के विधायक आवाज नहीं उठाते जब तक उनका और उनके लोगों की चोरी जारी रहती है . वहीं जैसे ही कोयला चोरी पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस द्वारा कार्रवाई की जाती है तो भाजपा विधायक सरकार और प्रशासन पर आरोप लगाने लगते हैं. उन्होंने कहा कि बाघमारा और धनबाद के विधायक कोयला चोरी को संरक्षण देते हैं. लखी सोरेन ने धनबाद विधायक राज सिन्हा पर हमला करते हुए कहा कि उनका बयान उनके दिमागी दिवालियापन की निशानी है. जब भाजपा ईडी द्वारा सरकार को अस्थिर करने में सफल नहीं हो पाया तो स्थानीय विधायकों द्वारा बेबुनियाद बयानबाजी कर झामुमो को अस्थिर करने की साजिश कर रहे हैं. कहा कि जिला प्रशासन द्वारा कोयला चोरी के खिलाफ लगातार कार्रवाई की जा रही है. उन्होंने बिगड़ी विधि व्यवस्था के सवाल पर कहा कि प्रिंस खान के गुर्गों को पुलिस लगातार पकड़ कर जेल में डाल रही है. इस सरकार में व्यवसायी वर्ग को किसी प्रकार का कोई खतरा नहीं है और वह बेखौफ होकर अपना व्यवसाय करते रहे, पुलिस उनकी पूरी सुरक्षा के लिए तत्पर है. वहीं कोयला चोरी पर झामुमो जिला सचिव मन्नु आलम ने कहा कि कोयला चोरी भाजपा के लोगों द्वारा बीसीसीएल, ईसीएलऔर सीआईएसएफ की मिलीभगत से किया जा रहा है. गोविंदपुर में लगातार हो रहे सड़क दुर्घटनाओं पर मन्नु आलम ने कहा कि सड़क दुर्घटना में होने वाली मौतों के लिए भाजपा के सांसद और केंद्र सरकार दोषी है.

पेज 1 का शेष...

सीबीआई जांच में खुलासा : संथाल में पोस्टेड पुलिस अफसर ने खूब की कमाई...

सीबीआई टीम को पता चला कि अवैध खनन मामले में किन-किन राजनेताओं की भूमिका रही है और इससे हुई अवैध कमाई को कैसे कहां-कहां इन्वेस्ट किया है. अवैध खनन के जरिए मनी लॉन्ड्रिंग मामले सीबीआई जांच कर रही है. जांच के दौरान यह बाते सामने आयी कि संथाल में तैनात दो पुलिस अधिकारियों की अवैध कमाई का हिस्सा कैसे राजनेताओं तक पहुंच रहा है. जांच के दौरान सीबीआई टीम को जानकारी मिली कि संथाल के एक बड़े पुलिस अधिकारी ने अवैध खनन से हुई कमाई का बड़ा हिस्सा अचल संपत्ति की खरीदारी में निवेश किया है. उस पुलिस अधिकारी ने अपने परिजनों व सगे-संबंधियों के नाम से भागलपुर जिले के पीरपैंती में काफी जमीन की खरीदारी की है. साथ ही अवैध कमाई की मोटी रकम से आसनसोल, सिलीगुड़ी और तारापीठ में आलीशान होटल खरीदा है. इस पुलिस अधिकारी ने अवैध कमाई का बड़ा हिस्सा बंगाल और बिहार में खपाया है. इस अधिकारी ने चालाकी यह की है कि अवैध कमाई से झारखंड में कोई संपत्ति नहीं खरीदी है.

ब्रीफ खबरें

कनपट्टी में सटाकर मारी गोली, मौत

बक्सर । जिले के धनसोई थाना क्षेत्र के चपटही गांव में रविवार की रात एक 65 वर्षीय बुजुर्ग की बदमाशों ने हत्या कर दी. दिव्यांग बुजुर्ग की कनपट्टी में सटाकर गोली मारी गई थी जिससे मौके पर ही मौत हो गई. मृतक की पहचान महेंद्र राम के रूप में की गई है. घटना को अंजाम देने के बाद बदमाश फरार हो गए. हत्या की इस वारदात के बाद परिजनों में कोहराम मच गया है. घटना की सूचना मिलने के बाद धनसोई थानाध्यक्ष ज्ञान प्रकाश सिंह दलबल के साथ पहुंचे. इस घटना की सूचना पर सदर डीएसपी धीरज कुमार भी मौके पर पहुंचे.

समस्तीपुर में युवक की हत्या, मचा हड़कंप

समस्तीपुर । समस्तीपुर में एक युवक की हत्या कर दी गई. यह हत्या किसी और ने नहीं बल्कि युवक के सौतेले भाइयों ने की. जमीन बंटवारे को लेकर युवक का उसके सौतेले भाइयों से विवाद चल रहा था. रविवार की मध्य रात्रि विवाद खूनी खेल में बदल गया. आरोपियों ने युवक की गोली मारकर हत्या कर दी. घटना दलसिंहसराय थाना क्षेत्र के मुखियारपुर मेनका वार्ड एक मोहल्ला की है. मृत युवक की पहचान धनेश्वर प्रसाद सिंह के पुत्र सोनू कुमार (22) के रूप में हुई. सोनू की हत्या के बाद इलाके में हड़कंप मच गया.

जमीन विवाद में मारपीट, छह घायल

गोपालगंज । गोपालगंज के कटेया थाना क्षेत्र के सबेया गांव में दो पक्षों में जमकर मारपीट हुई. इस मारपीट महिला समेत पांच लोग जख्मी हो गए. जिन्हें तत्काल इलाज के लिए गोपालगंज सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां डॉक्टर की देख-रेख में सभी घायलों का इलाज चल रहा है. बताया जाता है कि घटना जमीन विवाद के कारण हुई है. बताया जाता है कि अनिल ठाकुर और उसके पाटिदारों के बीच करीब चार कट्ठा जमीन को लेकर पूर्व से विवाद चल रहा था. मामला कोर्ट में पहुंचने के बाद आरोपियों को डिग्री मिल गई, लेकिन घायलों ने मामले को अपील में डाल दिया.

गंगा स्नान के लिए सिमरिया धाम में उमड़ा जनसैलाब

बेगूसराय । बिहार के पावन गंगा तट सिमरिया में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर स्नान करने के लिए सोमवार को बिहार ही नहीं, देश के विभिन्न राज्यों और विदेशी श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा. जिसके कारण अहले सुबह से ही बरौनी जीरोमाइल से लेकर सिमरिया पुल तक एनएच-31 पर काफी भीड़ रही. पूर्णिमा के मौके गंगा स्नान मोक्ष की कामना के साथ गंगा स्नान करने के लिए रात से बिहार, बंगाल, असम, झारखंड, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के साथ नेपाल से भी बड़ी संख्या में साधु-संत और श्रद्धालु पहुंच गए थे. जिसके बाद रविवार रात तीन बजे से ही हर-हर गंगे के जयकारा के बीच नमामि गंगे घाट से रामघाट तक शुरू स्नान का सिलसिला लगातार जारी रहा.

कार्तिक पूर्णिमा

आओ जानें

लघु सिंचाई योजनाओं की वर्षवार उपलब्धि

वर्ष	उथले नलकूप	गहरे नलकूप	कुल
2001-02	983	211	1194
2002-03	47001	330	47331
2003-04	155537	632	156169
2004-05	172596	265	172861
2005-06	109119	970	110089
2006-07	67265	207	67472
2007-08	0	50	50
2008-09	0	52	52
2009-10	15951	9	15960
2010-11	17549	35	17584
2011-12	24012	15	24027
2012-13	38451	1062	39513
2013-14	0	3160	3160
2014-15	0	3512	3512

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का बड़ा बयान

बहुत जल्द शुरू होगा दरभंगा में एम्स का काम, मिलेगी सुविधा

संवाददाता । दरभंगा

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव एक दिवसीय दौरे पर दरभंगा पहुंचे. यहां उन्होंने डीएमसीएच में भवनों का उद्घाटन और शिलान्यास किया. जिसके बाद उन्होंने नवनिर्मित सर्जिकल भवन का निरीक्षण भी किया. निरीक्षण कार्यक्रम के बाद उन्होंने दरभंगा एम्स को लेकर बड़ी बात कही. निरीक्षण के बाद मुख्यमंत्री ने दरभंगा एम्स के मुद्दे पर पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि एम्स बन जाने के बाद इस शहर का ज्यादा विस्तार हो जाएगा.

सीएम ने कहा कि अभी केंद्र की तरफ से निर्देश आया है कि प्रस्तावित स्थल को ऊंचा किया जाए, जिसे हमलोग करवा रहे हैं. शोभन बाईपास को फोर लेन बनवा रहे हैं. हर जगह से लोग यहां इलाज कराने आएंगे. लोगों को यहां बहुत सुविधा मिलेगा. सारा काम चल रहा है. वहीं उन्होंने तेजस्वी यादव की तरफ देखते हुए कहा कि वह लोग एग्री कर गए हैं, जिस पर तेजस्वी ने भी सिर हिलाकर हामी भरी. सीएम ने कहा कि सारा प्रोसेस होने पर निर्माण कार्य भी शुरू हो जाएगा. मुख्यमंत्री ने 2100 बेड के अस्पताल भवन और 250 नामांकन के शैक्षणिक भवन की योजना का शिलान्यास और 194 करोड़ से अधिक की लागत से 400 बेड के सर्जिकल ब्लॉक सहित विभिन्न परियोजनाओं का उद्घाटन किया. दरभंगा में बनने वाले एम्स के विवाद के बाद बिहार सरकार ने दरभंगा मेडिकल कॉलेज अस्पताल को विकसित करने का कैबिनेट में बड़ा फैसला लिया था.

बता दें कि बिहार सरकार की ओर से दरभंगा एम्स के निर्माण के लिए जो जमीन उपलब्ध कराई गई है, उसे केंद्र सरकार ने अस्वीकृत कर दिया है और इस पर खूब सियासत भी हो रही है लेकिन इसी बीच दरभंगा मेडिकल कॉलेज के विस्तार का काम शुरू हो रहा है और इसे आधुनिक बनाया जा रहा है. इस कार्यक्रम में डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव के अलावे मंत्री संजय कुमार झा, मंत्री मदन सहनी, मंत्री ललित कुमार यादव और स्थानीय सांसद विधायक सहित सभी जनप्रतिनिधि भी मौजूद रह सकते हैं.

मिलेगा फायदा

- डीएमसीएच में भवनों का उद्घाटन व शिलान्यास किया
- 400 बेड के सर्जिकल ब्लॉक का किया उद्घाटन

6 लोगों को काटकर शवों को गंगा में बहाने का आरोप

इनामी अपराधी राजेश यादव गिरफ्तार

संवाददाता । कटिहार

कटिहार पुलिस को बड़ी कामयाबी हाथ लगी है. पुलिस ने दियारा नरसंहार मामले का आरोपी राजेश यादव को गिरफ्तार कर लिया है. पुलिस ने आबकिया सुखाय से ऑपरेशन चलाकर गिरफ्तार किया है. इस मामले में जानकारी देते हुए कटिहार पुलिस अधीक्षक जितेंद्र कुमार ने बताया कि बीते वर्ष भवानीपुर दियारा में हुए दो गिरोहों के बीच हुए गैंगवार में छह लोगों की हत्या मामले में आरोपी है. एसपी ने बताया कि कटिहार पुलिस दियारा इलाके में अपने रूटीन गश्ती पर थी कि इसी दौरान आरोपी राजेश यादव के बकिया सुखाय में होने की गुप्त सूचना मिली थी. जिसके बाद पुलिस टीम ऑपरेशन में जुट गयी और आरोपी राजेश यादव को गिरफ्तार कर लिया गया. बताया गया कि बीते वर्ष जिले के सेमापुर ओपी थाना क्षेत्र के भवानीपुर में मोहना ठाकुर और सुनील यादव दो अपराधी गिरोहों के बीच हुए गैंगवार में छह लोगों की हत्या मामले में राजेश यादव भी आरोपी था. घटना के बाद से ही सभी की तलाश की जा रही थी. मोहना ठाकुर की गिरफ्तारी हो चुकी थी, लेकिन ये फरार चल रहा था. फिलहाल, पुलिस पूरे मामले की तफ्तीश में जुट गयी है.

चार सहेलियों ने खाया जहर, एक की मौत

औरंगाबाद । औरंगाबाद में चार सहेलियों ने एक साथ जहर खा लिया जिसमें एक की मौत हो गई जबकि अन्य तीन की हालत गंभीर है. घटना कुटुम्बा थाना क्षेत्र के संडा बाजार की है. घटना के संबंध में पुलिस का कहना है कि चार लड़कियों ने रविवार की शाम करीब 5 बजे एक साथ सल्फास (जहर) खा लिया. आनन-फानन में चारों को इलाज के लिए औरंगाबाद सदर अस्पताल लाया गया. प्रारंभिक उपचार के बाद उनकी गंभीर हालत को देखते हुए बेहतर इलाज के लिए मगध मेडिकल कॉलेज अस्पताल, गया रेफर कर दिया गया. सहेलियों की पहचान मनोज चौधरी की पुत्री लक्की और रिया, योगेश शर्मा की पुत्री नंदिनी और विनय शर्मा की पुत्री पूनम के रूप में की गई है.

बिहार में 65% आरक्षण को पटना हाईकोर्ट में दी चुनौती

संवाददाता । पटना

बिहार सरकार द्वारा प्रदेश में आरक्षण को पचास प्रतिशत से बढ़ाकर पैंसठ प्रतिशत किए जाने को पटना हाईकोर्ट में चुनौती दी गई है. कोर्ट में सरकार द्वारा पिछड़ा, अति पिछड़ा, अनुसूचित जाति व जनजातियों के लिए आरक्षण पैंसठ प्रतिशत किये जाने के खिलाफ एक जनहित याचिका दायर की गई है. ये जनहित याचिका गौरव कुमार और नमन श्रेष्ठ ने दायर की है. बिहार विधान मंडल ने बिहार आरक्षण (अनुसूचित जाति,अनुसूचित जनजाति व अन्य पिछड़ी जाति) (संशोधन) अधिनियम, 2023 और बिहार

(शिक्षण संस्थानों में प्रवेश) आरक्षण (संशोधन) अधिनियम, 2023 पारित किया है. इस जनहित याचिका में इन संशोधनों पर रोक लगाने की मांग की गई है. बिहार विधान मंडल ने 10 नवंबर, 2023 को ये संशोधन बिल पास किया और राज्यपाल ने इन कानूनों पर 18 नवंबर, 2023 को मंजूरी दी.

कारोबार

बायजू ने जिनी थाटिल को किया नियुक्त

नयी दिल्ली । शिक्षा प्रौद्योगिकी से जुड़ी कंपनी बायजू ने इंजीनियरिंग के वरिष्ठ उपाध्यक्ष जिनी थाटिल को अपना मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी नियुक्त किया है. थाटिल ने अनिल गोयल का स्थान लिया. गोयल तीन वर्ष तक मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी के पद पर सेवा देने के बाद कंपनी छोड़ रहे हैं. बायजू इंडिया के मुख्य कार्यपालक अधिकारी अर्जुन मोहन ने कहा, हमें बायजू के सीटीओ के रूप में जिनी थाटिल को पदोन्नत करते हुए खुशी हो रही है. उनका व्यापक अनुभव व नेतृत्व कौशल उन्हें इस महत्वपूर्ण भूमिका के लिए आदर्श उम्मीदवार बनाता है.

ब्लू डार्ट ने खुदरा दुकानों का किया उद्घाटन

नयी दिल्ली । लॉजिस्टिक सेवा प्रदान करने वाली कंपनी ब्लू डार्ट एक्सप्रेस लिमिटेड ने 40 नई फ्रेंचाइजी और कंपनी के स्वामित्व वाली खुदरा दुकानों के उद्घाटन के साथ देशव्यापी विस्तार की अपनी योजना की सोमवार को घोषणा की. कंपनी ने इस साल 100 से अधिक नए स्टोर के साथ अपनी उपस्थिति बढ़ाई, जिससे ग्राहकों को पूरे भारत में 56,000 से अधिक स्थानों पर माल भेजने में मदद मिलेगी. जारी एक बयान के अनुसार, कोलकाता, दिल्ली और मुंबई जैसे शहरों में यह विस्तार पूरे देश में ब्लू डार्ट की पहुंच को एक महत्वपूर्ण कदम है.

मारुति इंडिया जनवरी में बढ़ाएगी कीमत

नयी दिल्ली । मारुति सुजुकी इंडिया ने समग्र मुद्रास्फीति तथा बढ़ी हुई जिस दरों के कारण लागत दबाव का हवाला देते हुए सोमवार को कहा कि वह जनवरी 2024 में अपने वाहनों की कीमतें बढ़ाने की योजना बना रही है. कंपनी कम कीमत की छोटी कार ऑल्टो से लेकर मल्टी-यूटिलिटी वाहन इनविक्टो तक वाहनों की एक श्रृंखला बेचती है. इनकी कीमत 3.54 लाख रुपये से 28.42 लाख रुपये (एक्स-शोरूम दिल्ली) के बीच है. हालांकि, कंपनी ने अब दाम कितने बढ़ाए जाएंगे इसकी कोई जानकारी नहीं दी. मारुति सुजुकी इंडिया ने शेयर बाजार को दी.

थैंक्सगिविंग डे पर अमेरिका में कुल 5.6 अरब डॉलर की ऑनलाइन सेल हुई

ब्लैक फ्राइडे पर बना ऑनलाइन शॉपिंग का रिकॉर्ड

भाषा । नई दिल्ली

इस बार का ब्लैक फ्राइडे लोगों के साथ ही कारोबारियों के लिए काफी बेहतर रहा. ब्लैक फ्राइडे के अवसर पर ऑनलाइन शॉपिंग का रिकॉर्ड बनाकर मंदी की बातों को अमेरिकियों ने खारिज कर दिया. इस मौके लोगों ने 9.8 अरब डॉलर की ऑनलाइन खरीदारी कर डाली. यह पिछले साल की तुलना में 7.5% अधिक है. ब्लैक फ्राइडे से एक दिन पहले थैंक्सगिविंग डे के मौके पर अमेरिका में कुल 5.6 अरब डॉलर की ऑनलाइन सेल हुई. इस तरह अमेरिका में दो दिन में कुल 15.4 अरब डॉलर की बंपर सेल हुई. पूरी दुनिया में ब्लैक फ्राइडे के मौके पर रेकॉर्ड 70 अरब डॉलर की ऑनलाइन सेल हुई. अमेरिका समेत कई पश्चिमी देशों में थैंक्सगिविंग गुरुवार से लेकर साइबर सोमवार तक खरीदारी को शुभ माना जाता है.

अडोब एनेलीटिक्स के मुताबिक पिछले साल ब्लैक फ्राइडे के मौके पर 9.12 अरब डॉलर की ऑनलाइन सेल हुई थी. सबसे ज्यादा बिक्री इलेक्ट्रॉनिक्स, स्मार्ट होम इक्विपमेंट, खिलौनों और एक्सरसाइज में काम आने वाले इक्विपमेंट्स की हुई थी. इस साल इसमें 5.7 परसेंट तेजी की उम्मीद की जा रही थी. लेकिन यह उम्मीदों से कहीं बेहतर रही. अमेरिका को महंगाई और ज्यादा उधारी की समस्या से जूझना पड़ रहा है. कंज्यूमर सेंटीमेंट्स भी गिरा है. लेकिन इसके बावजूद लोगों ने खरीदारी का नया रिकॉर्ड बना दिया. कनाडा स्थित ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस शॉपिफाई इंक ने कहा कि कपड़ों, पर्सनल केयर और आभूषणों के कारण वैश्विक ब्लैक फ्राइडे की बिक्री में 22% की वृद्धि हुई. वहीं अमेरिकी ऑनलाइन बिक्री में साल-दर-साल 9% की वृद्धि हुई. कपड़े, घर और सौंदर्य पर सबसे ज्यादा ऑफर देखे गए. इसका फायदा लोगों ने जमकर उठाया और जमकर खरीदारी की. बता दें कि ब्लैक फ्राइडे की शुरुआत 1950 की दशक में फिलाडेल्फिया में हुई थी. तब थैंक्सगिविंग डे के बाद आसपास के कस्बों के लोग बड़ी संख्या में खरीदारी के लिए फिलाडेल्फिया आए थे. फिर तो यह एक तरह से रिवाज बन गया.

हर साल इस मौके पर लोग बड़ी संख्या में खरीदारी करने आते थे. दुकानदारों ने भी इस मौके का भरपूर फायदा उठाया और तरह-तरह की छूट देकर अपनी बिक्री बढ़ाई. लेकिन इस दौरान ट्रैफिक पुलिस की शामत आ जाती थी. भीड़ को काबू करने के लिए उन्हें 12-12 घंटे काम करना पड़ता था और छुट्टी नहीं ले सकते थे. इसी कारण इसे ब्लैक फ्राइडे नाम दिया गया. धीरे-धीरे यह अमेरिका के दूसरे शहरों में भी फैल गया. साल 1961 में इसे बिग फ्राइडे के नाम से रिब्रांड करने की कोशिश हुई ताकि इसे पॉजिटिव टच दिया जा सके. लेकिन यह कोशिश काम नहीं आई. इस दिन की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए दुकानदारों ने इसके हिसाब से रणनीति बनाई. हालत यह हो गई कि 2003 में कई दुकानें तो सुबह पांच बजे ही खुलने लगीं. उसी साल यह साल का सबसे प्रॉफिटेबल दिन बन गया. उससे पहले तक अमेरिका में दिसंबर के अंत में सबसे ज्यादा बिक्री होती थी.

2005 में शॉपिंग होलिडे साइबर मंडे शुरू हुआ : साल 2011 में वॉलमार्ट ने इसमें एक और तड़का लगाया. कंपनी ने थैंक्सगिविंग डे की रात दस बजे स्टोर खोले और ब्लैक फ्राइडे को पूरे दिन इन्हें खोले रखा. इंटरनेट के बढ़ते चलन से 2005 में एक और शॉपिंग होलिडे का जन्म हुआ. इसका नाम रखा गया साइबर मंडे.

बंपर सेल

- यूएस में दो दिन में कुल 15 .4 अरब डॉलर की बिक्री
- दुनिया में 70 अरब डॉलर की ऑनलाइन सेल हुई

टाटा स्टील ने अक्षय खुल्लर को कंपनी का उपाध्यक्ष बनाया

नयी दिल्ली । टाटा स्टील ने अक्षय खुल्लर को कंपनी का उपाध्यक्ष (इंजीनियरिंग एवं प्रोजेक्ट) नियुक्त करने की सोमवार को घोषणा की. टाटा स्टील ने पीयूष गुप्ता को कंपनी के समूह की रणनीतिक खरीद व आपूर्ति श्रृंखला टीक्यूएम का फिर से उपाध्यक्ष नियुक्ति किया गया है. कंपनी ने शेयर बाजार को दी जानकारी में कहा, वरिष्ठ प्रबंधन कार्मिक के लिए कंपनी की उत्तराधिकार योजना के संदर्भ में अक्षय खुल्लर को एक दिसंबर 2023 से इंजीनियरिंग व प्रोजेक्ट के उपाध्यक्ष (नामित) के तौर पर और एक फरवरी 2024 से इंजीनियरिंग व प्रोजेक्ट के उपाध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया जा रहा है. टाटा स्टील के अनुसार, पीयूष गुप्ता अपनी वर्तमान जिम्मेदारियों के अलावा संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन (टीक्यूएम) कार्य का नेतृत्व करेंगे. गुप्ता वर्तमान में समूह के रणनीतिक खरीद व आपूर्ति श्रृंखला के उपाध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं. गुप्ता को एक फरवरी 2024 से टीक्यूएम (समूह रणनीतिक खरीद व आपूर्ति श्रृंखला) के उपाध्यक्ष के रूप में फिर से नामित किया जाएगा. टाटा स्टील ने कंपनी के टीक्यूएम के उपाध्यक्ष अवनीश गुप्ता की सेवानिवृत्त होने की भी घोषणा की.

ई-बसों की हिस्सेदारी 11-13% होने की उम्मीद : रिपोर्ट

- योजना के तहत लक्ष्य सार्वजनिक निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल के तहत 169 शहरों में 10,000 ई-बसें उपलब्ध कराना है

एजेंसी । नयी दिल्ली

वित्त वर्ष 2025 तक नई बस बिक्री में इलेक्ट्रिक बसों की हिस्सेदारी 13 प्रतिशत तक होने की उम्मीद है. रेटिंग एजेंसी इक्रा ने सोमवार को यह बात कही. इक्रा के अनुसार, कई राज्य इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) नीतियों में ई-बस अपनाने के लिए विशिष्ट लक्ष्य तथा समयसीमा की घोषणा की है. विद्युतीकरण के लिए एक खाका तैयार किया गया है.

एजेंसी ने कहा कि पारंपरिक डीजल बसों की तुलना में महत्वपूर्ण परिचालन बचत के साथ उसे उम्मीद है कि ई-बसों की मांग में वृद्धि जारी रहेगी. रिपोर्ट में कहा गया, इक्रा को उम्मीद है कि इलेक्ट्रिक बसें भारत के विद्युतीकरण अभियान में सबसे आगे रहेंगी.

इक्रा का अनुमान है कि वित्त वर्ष 2025 तक नई बस बिक्री में ई-बसों की हिस्सेदारी 11-13 प्रतिशत होगी. रिपोर्ट के अनुसार, सरकारी सब्सिडी और विकसित हो रही प्रौद्योगिकियां ई-बसों में शामिल पूंजीगत लागत को और कम करने में भूमिका निभा सकती है. सरकार ने भी हाल ही में पीएम ई-बस सेवा योजना की भी घोषणा की है. योजना के तहत लक्ष्य सार्वजनिक निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल के तहत 169 शहरों में 10,000 ई-बसें उपलब्ध कराना है.

रेटिंग वित्त वर्ष 2024-25 के लिए जीडीपी ग्रोथ रेट को 6.9 फीसदी से घटाया

भारत की जीडीपी ग्रोथ अनुमान को बढ़ा कर 6.4% किया

भाषा । नई दिल्ली

वैश्विक रेटिंग एजेंसी एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स ने भारत की आर्थिक वृद्धि दर का अनुमान बढ़ा दिया है. रेटिंग एजेंसी ने वित्त वर्ष 2023-24 के लिए सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) ग्रोथ के अनुमान को छह फीसदी से बढ़ा कर 6.40 फीसदी कर दिया है. वहीं, वित्त वर्ष 2024-25 के लिए जीडीपी ग्रोथ रेट को 6.9 फीसदी से घटा कर 6.40 फीसदी कर दिया है. एसएंडपी ग्लोबल ने सोमवार को जारी रिपोर्ट में वित्त वर्ष 2023-24 के लिए भारत की आर्थिक वृद्धि दर के अनुमान को 6 फीसदी से बढ़ा कर 6.40 फीसदी कर दिया. रेटिंग एजेंसी ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था में सुधार के आसार दिख रहे हैं. एसएंडपी का कहना है कि घरेलू स्तर पर अर्थव्यवस्था को जोरदार सपोर्ट मिल रहा है. ऐसे में महंगाई और कमजोर एक्सपोर्ट भी अर्थव्यवस्था की विकास दर को कमजोर नहीं कर पाएगा और भारत के जीडीपी में जबरदस्त उछाल आएगा.

एसएंडपी के मुताबिक भारत की जीडीपी ग्रोथ रेट चालू वित्त वर्ष 2023-24 में अनुमान से तेज गति से बढ़ेगी, लेकिन आगामी वित्त वर्ष 2022-4-25 में इसकी रफ्तार थोड़ी सुस्त हो सकती है. एजेंसी ने कहा कि इस वित्त वर्ष में जीडीपी ग्रोथ के अनुमान को 6.9 फीसदी से घटा कर 6.40 फीसदी कर रहे हैं. इससे पहले फिच रेटिंग्स ने हाल ही में वित्त वर्ष 2023-24 के लिए भारत की विकास दर 6.30 फीसदी रहने की उम्मीद जताई थी.

उल्लेखनीय है कि 31 मार्च, 2023 को समाप्त वित्त वर्ष 2022-23 में भारतीय अर्थव्यवस्था 7.2 फीसदी की दर से बढ़ी. वहीं, चालू वित्त वर्ष 2023-24 की दूसरी तिमाही (अप्रैल-जून) में भारत की जीडीपी ग्रोथ 7.8 फीसदी रही थी. रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने मौजूदा वित्त वर्ष के लिए आर्थिक वृद्धि दर 6.50 रहने का अनुमान जताया है.

ऑडी इंडिया जनवरी 2024 से कीमतों में 2% बढ़ोतरी करेगी

भाषा । नयी दिल्ली

जर्मनी की लक्जरी कार निर्माता कंपनी ऑडी ने कच्चे माल की मांग और परिचालन लागत बढ़ने का हवाला देते हुए सोमवार को कहा कि वह अगले साल जनवरी से भारत में अपने वाहनों की कीमतें दो प्रतिशत तक बढ़ाएगी. ऑडी इंडिया की ओर से जारी एक बयान के अनुसार, कीमतों में बढ़ोतरी एक जनवरी 2024 से प्रभावी होगी और सभी मॉडल रेंज में बढ़ोतरी होगी.

ऑडी इंडिया के प्रमुख बलबीर सिंह ढिल्लों ने एक बयान में कहा, आपूर्ति-श्रृंखला-संबंधित कच्चे माल की बढ़ती मांग और परिचालन लागत के कारण हमने ब्रांड की प्रीमियम मूल्य स्थिति को बनाए रखते हुए अपने मॉडल रेंज

में मूल्य सुधार किया है. उन्होंने कहा, मूल्य सुधार का मकसद ऑडी इंडिया और हमारे डीलर भागीदारों की सतत वृद्धि सुनिश्चित करना है. हम यह सुनिश्चित करेंगे कि मूल्य वृद्धि का प्रभाव ग्राहकों जितना हो सके कम से कम पड़े. ऑडी इंडिया ने क्यू3 एसयूवी से लेकर स्पोर्ट्स कार आरएसक्यू8 तक कई वाहन बेचती है, जिनकी कीमत 42.77 लाख रुपये से 2.22 करोड़ रुपये के बीच है.

लोकतंत्र और प्रलोभन

लोकतंत्र की मुख्य ताकतों में एक है चुनाव. आमतौर पर किसी भी लोकतंत्र की परिपक्वता की पहचान वोटरों की वह स्वतंत्रता है, जो प्रभाव, लालच और उकासवे में आए बगैर अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करते है. भारत इस संदर्भ में बेहतर प्रदर्शन करता आया है, लेकिन पिछले कुछ समय से जिस तरह लोकतंत्र का चेहरा बदल रहा है और उसमें ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति के साथ वोटरों को सुविधा देने के नाम पर एक तरह से लालच देने का प्रपंच चल रहा है, उससे अनेक सवाल उठ खड़े होते हैं. पहला सवाल तो यही है कि क्या देश के सत्ता में बैठे राजनीतिक दलों और उसकी प्रतीक्षा कर रहे दलों के पास जनता की समस्याओं के हल का कोई ऐसा एजेंडा है ही नहीं, जो गरीबी, भूख, बेरोजगारी, स्वास्थ्य और शिक्षा की समस्याओं का हल प्रस्तुत करे. ऐसी समग्र नीति का एजेंडा पेश करे, जिसमें कोई प्रलोभन नहीं, बल्कि देश की वास्तविक समस्याओं का हल अंतर्निहित हो. लेकिन देखा यह जा रहा है कि चुनाव दर चुनाव समुदायों के बीच की दूरियां बढ़ायी जा रही हैं और आर्थिक सवालों के मुकम्मल हल के बजाय तात्कालिक राहत के वायदे परोसे जा रहे हैं. चुनावी मैदान में जो गारंटियां तैर रही हैं, उनके अर्थव्यवस्था पर प्रभावों के बारे में शायद ही सोचा जाता हो. यही नहीं, दुनिया के जिन लोकतंत्रों ने अपने लोगों के लिए कानूनी गारंटियां दे रखी हैं, उनसे भी सीख लेने का प्रयास नहीं हो रहा है. देश के हर चुनाव में ऐसे रिकार्ड बनाए जा रहे हैं, जो राजनैतिक मर्यादा को तारतार तो कर ही रहे हैं, साथ ही अर्थव्यवस्था के लिए भी नयी चुनौतियां पेश कर रहे हैं. पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में लोकलुभावने वायदों और गारंटियों का जो कोलाहल सुना जा रहा है, वह कालांतर देश के आर्थिक अनुशासन व योग्य जनप्रतिनिधियों के चयन के लिये एक चुनौती बन सकता है. इसमें दो राय नहीं कि सामाजिक न्याय के लिये समावेशी विकास वक्त की जरूरत है, लेकिन यह जुमलों से परे कमजोर वर्गों के स्थायी कल्याण के लिए होना चाहिए. ऐसा नहीं है कि रेवड़िया बांटने का खेल देश में पहले नहीं होता था, लेकिन आज जिस पैमाने पर हो रहा है, वह हर देशभक्त की चिंता का विषय होना चाहिए. कहीं न कहीं, मुफ्त की गारंटियों का यह खेल जवाबदेह प्रशासन व आर्थिक स्थिरता पर कालांतर गहरी चोट करेगा. वहीं ये गतिविधियां एक जिम्मेदार लोकतंत्र पर सवालिया निशान लगाती हैं. यह विडंबना है कि लोग जनप्रतिनिधि की योग्यता की प्राथमिकता को दरकिनार करके संकीर्ण सोच के लाभों को प्राथमिकता देने लगे हैं. इस दूषित परंपरा से राजनेताओं और जनता का प्रलोभन विस्तार ले रहा है. राज्यों के आर्थिक संसाधन सीमित हैं. ऐसे में बांटा गया धन कालांतर में हमारे बुनियादी ढांचे व विकास परियोजनाओं के लिए निर्धारित धन में कटौती करता है. निश्चित रूप से समाज के कमजोर वर्ग को आर्थिक संबल दिया जाना चाहिए, लेकिन जरूरत ठोस आर्थिक विकास व रोजगार के अवसर सृजन की होनी चाहिए.

> पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में लोकलुभावने वायदों और गारंटियों का जो कोलाहल सुना जा रहा है, वह कालांतर देश के आर्थिक अनुशासन व योग्य जनप्रतिनिधियों के चयन के लिये एक चुनौती बन सकता है.

सुभाषित

यस्य भार्या गृहे नास्ति साध्वी च प्रियवादिनी।
अरण्यं तेन गन्तव्यं यथाऽरण्यं तथा गृहम्॥

जिस घर में गृहिणी साध्वी प्रावृत्ति की न हो तथा मृदु भाषी न हो ऐसे घर के गृहस्त ने घर छोड कर वन में जाना चाहिए क्यों की उसके घर में तथा वन में कोइ अंतर नहीं है ! कारण कि वैसी हालत में घर का वातावरण भी जीने योग्य नहीं रह जाता.

मतदाताओं का काम खत्म, बारी परिणाम की

अमूमन आमलोगों के मन में यही धारण होती है कि भले ही जीतने वालों द्वारा की गई सारी बातें झूठ हों या फिर प्रपंच ही क्यों न हो, लेकिन जिसकी जीत हो गई, वही सिकंदर कहलाएगा. लेकिन, इस जीत से भी क्या होता है, क्योंकि पैर खींचने वाले तो इसी ताक में रहते हैं कि कब दूसरे की कमजोर नस हाथ लग जाए और उसे दबाकर अपनी सरकार बना ली जाए.

• देश-काल

निशिकांत ठाकुर

चार राज्यों की चुनावी परीक्षा खत्म हो गई. केवल तेलंगाना का चुनाव 30 नवंबर को होना है. अब इन परीक्षाओं का रिजल्ट 3 दिसंबर को आएगा. देश को देखना बाकी है कि किस राज्य में कौन सी पार्टी प्रथम स्थान प्राप्त करती है, क्योंकि यहां द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहने का कोई मतलब नहीं होता. इस परीक्षा में केवल प्रथम स्थान पाने वाले को ही सफल माना जाता है. पिछले कुछ महीनों से दिन-रात यही चर्चा का विषय होता था कि इस चुनाव में कौन जीत रहा है. यहां चर्चा केवल जीतने की होती रही है, इसीलिए कहा जाता है कि जो जीता, वही सिकंदर, क्योंकि वही सरकार बनाएगा, वही सत्ता संभालेगा, उसी की आगे चलेगी. ऐसा इसलिए, क्योंकि जीतने वाले को ही सफल माना जाता है. अमूमन आमलोगों के मन में यही धारण होती है कि भले ही जीतने वालों द्वारा की गई सारी बातें झूठ हों या फिर प्रपंच ही क्यों न हो, लेकिन जिसकी जीत हो गई, वही सिकंदर कहलाएगा. लेकिन, इस जीत से भी क्या होता है, क्योंकि पैर खींचने वाले तो इसी ताक में रहते हैं कि कब दूसरे की कमजोर नस हाथ लग जाए और उसे दबाकर अपनी सरकार बना ली जाए. यही तो हुआ था पिछली बार मध्य प्रदेश में, जहां कांग्रेस की सरकार बन गई थी, काम भी कर रही थी, लेकिन दलबदलुओं ने दिखा दिया कि सरकार को कितनी आसानी से गिराया जा सकता है. क्या राजनीतिज्ञों का चरित्र यही होता है? आश्चर्य तो तब और यह होता है कि फिर भी देश की जनता, हमारे मतदाता इस बात को, इस राजनीतिक चाल को समझ नहीं पाते और फिर जब अगले चुनाव में वही नेता मुखौटा बदलकर जनता को गुमराह करने पहुंच जाते हैं, तब भी जनता यह पूछ नहीं पाती कि आपने पिछली बार जो कहा था, जब उसे अब तक पूरा क्यों नहीं किया और अब फिर वोट मांगने किस मुंह से आ गए. मतदाता उनकी चाल को समझ नहीं पाते और फिर पांच साल के लिए वे उन नेताओं द्वारा ठग लिए जाते हैं. दरअसल, अपने देश की जनता भावुक है. उसके अंदर छल-प्रपंच नहीं होता, इसलिए ऐसे मतदाताओं को ठगना आसान होता है. याद कीजिए वर्ष 2014 और 2019 के लोकसभा चुनाव को जब मतदाताओं को कितने प्यार से लोभरूपी जाल में फसाया गया, यह कहकर कि हर व्यक्ति के खाते में पंद्रह लाख रुपये जमा कराए जाएंगे, प्रतिवर्ष दो करोड़ बेरोजगारों को रोजगार मिलेगा, लेकिन चुनाव के बाद उन वादों के लिए क्या कहा गया. शायद आपको याद न हो, लेकिन हमारे वर्तमान और सबसे ताकतवर गृहमंत्री ने उसे चुनावी जुमला कहा था. इसे मतदाताओं के साथ ठगी नहीं, तो और क्या कहा जाएगा? अब मिजोरम, छत्तीसगढ़, राजस्थान और तेलंगाना की बात. मिजोरम में जो सरकार है, वह भाजपा से गठबंधन की सरकार है, लेकिन उस सरकार का अहंकार तो देखिए, उसके मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री के साथ मंच साझा करने से इनकार कर दिया. कहा, वह स्वयं अपने बल पर चुनाव लड़कर सरकार बनाने में सक्षम है. समीक्षकों का कहना है कि वह राज्य पूरी तरह से मणिपुर की घटनाओं से प्रभावित है और प्रधानमंत्री का मणिपुर की घटनाओं पर बिल्कुल चुप बैठ जाना वहां के मतदाताओं को पसंद नहीं, इसलिए प्रधानमंत्री के वहां जाने से माहौल बिगड़ सकता है और कोई भी अनहोनी हो सकती है, इसलिए मिजोरम के मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री को रोककर बदनामी से बचा लिया है. वहां शांतिपूर्वक चुनाव संपन्न हो चुका है. मतगणना और रिजल्ट 3 दिसंबर को आना है. उसी तरह विश्लेषक छत्तीसगढ़ के लिए कहते हैं कि वहां तो कांग्रेस की काट के लिए भाजपा के पास कोई चेहरा ही नहीं है. यह ठीक है कि वर्षों तक छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री रमन सिंह को किस राजनीति के तहत पीछे रखा गया, यह बात भाजपा की समझ से परे है. वैसे कद्दावर नेता रमन सिंह को चेहरे के रूप में न लाकर किस प्रकार का खेल रचा गया है, यह भी समझ से बाहर है. वही हाल राजस्थान का रहा है, जहां वर्षों तक मुख्यमंत्री रहीं वसुंधरा राजे सिंधिया को पीछे रखकर भाजपा द्वारा अपमानित करने का प्रयास किया गया, उससे मतदाताओं का नाराज होना स्वाभाविक है. वसुंधरा राजे सिंधिया जनाधार की नेता मानी जाती हैं, लेकिन किस कारण से उन्हें पीछे रखा गया, यह तो भाजपा के रणनीतिकार ही बता सकते हैं, लेकिन फिर जब भाजपा के शीर्ष नेतृत्व को यह पता चला कि मामला उनके पक्ष में नहीं जा रहा है, फिर वसुंधरा राजे सिंधिया को आगे लाकर अपनी नीति को बदलने को मजबूर होना पड़ा. कहते हैं कांग्रेस वहां मजबूत है और मुख्यमंत्री गहलोत और उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट के बीच खिंचाव का जो माहौल बना दिया गया था, वह अब शांत हो गया है और दोनों साथ मिलकर राहुल गांधी के नेतृत्व में चुनाव प्रचार कर रहे हैं. अब रही तेलांगना की बात, तो वहां भाजपा तो सिफर है और बीआरएस और कांग्रेस में सीधी टक्कर है. वैसे, प्रधानमंत्री वहां का दौरा कर चुके थे, लेकिन कुछ हासिल होने की आशा नगण्य है. इन पांच राज्यों के चुनाव इसलिए महत्वपूर्ण हो गए थे, क्योंकि यह माना जा रहा है कि यह 2024 में देशभर में होने जा रहे लोकसभा चुनाव का ट्रेलर है. यह तो बिल्कुल सच है कि इन पांच राज्यों के रिजल्ट पर अगला लोकसभा चुनाव बहुत हद तक निर्भर करेगा, लेकिन सच में ऐसा नहीं होता. इसके कई उदाहरणों में एक उदाहरण दिल्ली भी है. जहां विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी ने कांग्रेस और भाजपा को सिरे से नकार दिया, वहीं लोकसभा में सातों सीटों पर भाजपा ने रिकॉर्ड मतों से जीतकर लोकसभा में परचम लहराया . इसलिए यह सोचना बेमानी है कि इन पांच राज्यों के चुनाव परिणामों से ही लोकसभा का चुनाव प्रभावित होगा. अब 3 दिसंबर को इन राज्यों का समीकरण क्या बनेगा, इसका सिर्फ अनुमान ही लगाया जा सकता है. इसलिए देखना केवल यह है कि परिणाम किसके पक्ष में आता है और कौन सरकार बनाता है. बस थोड़ा इंतजार कर लीजिए .

• बोधि-वृक्ष | अज्ञात

मानसिक पूजन

वह मंदिर की पूजा में बहुत शानदार सेवा पेश करना चाहता था, लेकिन उसके पास धन नहीं था ! एक दिन की बात है वह एक भागवत पाठ में बैठा हुआ था और उसने सुना कि नारायण मन के भीतर भी पूजे जा सकते हैं ! उसने इस अवसर का लाभ उठाया, क्योंकि वह एक लंबे समय से सोच रहा था कि कैसे बहुत शान से नारायण की पूजा करूं, लेकिन उसके पास धन नहीं था. जब वह यह समझ गया कि मन के भीतर नारायण की पूजा कर सकते हैं, तो गोदावरी नदी में स्नान करने के बाद, वह एक पेड़ के नीचे बैठा हुआ था ! अपने मन के भीतर वह बहुत खूबसूरत सिंहासन का निर्माण कर रहा था, गहनों के साथ लदी और सिंहासन पर भगवान के अर्च विग्रह को रखते हुए, वह अर्च विग्रह का अभिषेक कर रहा था. गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, कावेरी के जल के साथ. फिर बहुत अच्छी तरह से अर्च विग्रह का शृंगार कर रहा था और फूल, माला के साथ पूजा कर रहा था ! वह बहुत अच्छी तरह से भोजन पका रहा था और वह परमात्मा के लिए मीठे चावल पका रहा था। तो वह परखना चाहता था, क्या वह बहुत गर्म था ! क्योंकि खीर ठंडी लिया जाता है। खीर बहुत गर्म नहीं ली जाती है। तो उसने खीर में अपनी उंगली डाली और उसकी उंगली जल गई. तब उसका ध्यान टूटा, क्योंकि वहां कुछ भी नहीं था। केवल अपने मन के भीतर वह सब कुछ कर रहा था ! लेकिन उसने अपनी उंगली जली हुई देखी तो वह चकित रह गया. इस तरह, वैकुन्ठ से नारायण, मुस्कुरा रहे थे. देवी लक्ष्मीजी ने पूछा - आप क्यों मुस्कुरा रहे हैं. भगवान बोले-मेरा एक भक्त अतिप्रभावी मानस पूजन कर रहा है। मेरे अन्य धनिक भक्त सब उच्च साधनों से सामग्रियों से मेरी अर्चना करते हैं , लेकिन मन भटकता रहता है। इस समर्पित भक्त का वास वैकुन्ठ में होना चाहिए. अतः मेरे दूतों को तुरंत भेजो उसे वैकुन्ठ लाने के लिए. भक्ति-योग इतना अच्छा है कि भले ही आपके पास भगवान की भव्य पूजा के लिए साधन न हो, आप मन के भीतर यह कर सकते हो। यह भी संभव है !! क्या फर्क पड़ता है कि किसका नम्बर कब आना है..जाना सबको ही है..हमको अहसास ही नहीं रहता कि हम सफर में ही नहीं..बल्कि एक लाइन में भी हैं. नित्य अच्छे कार्य करें. कौन सा दिन आखिरी है, कोई नही जानता.

खेलों में खनकते पैसे, खेल भावना को हानि

• खेल

अरविन्द मोहन

विश्वकप क्रिकेट में कमेंटरी करने भारत आए पूर्व आस्ट्रेलियाई बल्लेबाज रिकी पोंटिंग की यह टिप्पणी अभी भी सोशल मीडिया पर चर्चा और विवाद का विषय बनी है कि आस्ट्रेलिया की फाइनल की जीत 'क्रिकेट माफिया के खिलाफ न्याय की जीत है.' उनका इशारा ही नहीं, साफ कहना है कि क्रिकेट पर माफिया काबिज है, वही अधिकांश फैसले कराने लगा है और आस्ट्रेलिया ने अपने खेल के दम पर इस क्रम को पलटा है. इस बयान से उन लोगों की बाछें खिल गई हैं जो गृहमंत्री अमित शाह और भारतीय क्रिकेट प्रशासन पर हावी जमात के आलोचक रहे हैं. यह आलोचना अभी से नहीं डालमिया, बिन्द्रा और पवार राज के दिनों से हो रही है और इधर यह शोर बढ़ा है. अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट पर भारतीय क्रिकेट और क्रिकेट प्रशासन का दबदबा बढ़ा है-निश्चित रूप से बढ़ा है, भारत की मर्जी के खिलाफ ज्यादा उल्टा फैसला होना बंद हुआ है. ऐसा भारत में क्रिकेट के बढ़ने, लोकप्रिय होने और क्रिकेट में बाजार की तरफ से भारी पैसा आने की वजह से ज्यादा हुआ है, किसी माफिया के चलते उतना नहीं. स्वयं पोंटिंग से लेकर आस्ट्रेलिया के ही नहीं, दुनिया के सारे बड़े खिलाड़ियों का 'इंडियन प्रीमियर लीग' (आईपीएल) में खेलने को लालायित रहना इसका ही प्रमाण है. जबसे यह बदलाव हुआ है, तबसे भारत का माफिया प्रभावी हुआ हो या नहीं, भारतीय क्रिकेट प्रशासकों का अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से जुड़े फैसलों पर दबदबा बना है या नहीं, लेकिन इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों के क्रिकेट प्रशासकों का दबदबा खत्म जरूर हुआ है. भारत ही नहीं तीसरी दुनिया के कमजोर देशों के क्रिकेट प्रशासकों और खिलाड़ियों को उस दबदबे के चलते क्या-क्या भुगतना पड़ा है इसका किस्सा लिखना शुरू हो तो पूरा पुराण बन जाएगा. अपने अनुकूल पिच बनाने जैसी आलोचना तो बहुत ही हल्की है. अब ऐसा भी नहीं है कि क्रिकेट प्रशासन बहुत लोकतांत्रिक ढंग से चलता हो या वहां सारा कुछ पाक-साफ ही हो. इस बार ही आयोजन स्थल, मैदान, खेल के दिन से लेकर टिकट की ब्लैकमेलिंग और होटल या विमान भाड़ा तक में जो-जो हुआ उसे 'हेल्दी हैबिट' तो कदापि नहीं कहा जा सकता. खिलाड़ियों से ज्यादा क्रिकेट प्रशासकों की अय्याशी की भी चर्चा खेल के लिए स्वस्थ नहीं है. क्रिकेट के प्रसारण राइट्स की कहानी भी गंदली है और दर्शक बढ़ने का ज्यादा लाभ खिलाड़ी और प्रशासन की जगह बाजार उठाता जा रहा है. इसी का प्रमाण है कि भारत के अंदर भी नेट के जरिए मैच देखने/दिखाने का कारोबार सामान्य टीवी प्रसारण से अलग किया गया है. तब भी वहां साढ़े पाँच करोड़ तक दर्शक पहुंचे ही नहीं हैं, ज्यादा समय तक क्रिकेट देखने का रिकार्ड भी दर्ज हो रहा है. दसियों भाषाओं में कमेंटरी हो रही है. दस सेकेंड के विज्ञापन का रेट तीस लाख रुपए तक पहुँचने की चर्चा है. एक फ़ोटो इस्तेमाल करने की कीमत चुकानी पड़ती है. क्रिकेटरों के बल्ले से लेकर वर्दी तक पर कितनी कंपनियों के विज्ञापन का बोझ होता है इसकी गिनती मुश्किल हो गई है. कैमरा कहां फोकस करे इसको लेकर झगड़ा होता है. क्रिकेट दिखाने का सामान्य शिष्टाचार पीछे चला गया है. बाजार और ब्रांड के अलावा पर्सनल खुराक और ट्रेनर भी ब्रांड बनाते जा रहे हैं. कमेंटेटरों तक को मिलने वाले पैसे आँख फाड़ने वाले हैं, उपहार और अन्य सुविधाओं का तो हिसाब ही अलग है. अलबत्ता, क्रिकेट प्रसारकों को भारत के फाइनल में हारने से ही नहीं, धमाकेदार ढंग से लगातार दस मैच जीतकर फाइनल पहुंचने से भी शिकायत रही है. भारतीय गेंदबाज इस बार फाइनल के अलावा लगभग सभी मैचों में सफल रहे और पूरे पचास ओवर की जगह छब्बीस, सत्ताईस ओवर में ही विपक्षी दल को समेट देते थे. विपक्ष के कम स्कोर को धमाकेदार भारतीय बल्लेबाज पचीस-तीस ओवर में ही पूरा कर लेते थे. ऐसा प्रतियोगिता के ज्यादातर मैचों में हुआ और नजदीकी मुकाबले देखने के लिए दर्शक भी तरसे. ऐसे मुकाबलों में बाजार के लोगों को विज्ञापन के लिए कम समय मिलता है. अगर पचास ओवर की पारी चालीस ओवर से पहले निपट जाए तो 7000 से लेकर 7500 सेकेंड के विज्ञापन समय का नुकसान होता है. यह समय 'कीमती'है और यह नुकसान बड़ा. जब विश्वकप और उससे पहले हुए एशिया कप के मुकाबलों (वैसे यह टूर्नामेंट बारिश के चलते बहुत बाधित हुआ) ने श्राद्ध-पक्ष में भी टीवी की रिकार्ड बिक्री से धमाकेदार शुरूआत करा दी थी तो बाजार की उम्मीद काफी होना स्वाभाविक है.

> अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट पर भारतीय क्रिकेट और क्रिकेट प्रशासन का दबदबा बढ़ा है-निश्चित रूप से बढ़ा है, भारत की मर्जी के खिलाफ ज्यादा उल्टा फैसला होना बंद हुआ है. ऐसा भारत में क्रिकेट के बढ़ने, लोकप्रिय होने और क्रिकेट में बाजार की तरफ से भारी पैसा आने की वजह से ज्यादा हुआ है, किसी माफिया के चलते उतना नहीं.

पर्यावरण के लिए जरूरी पक्षियों की अहमियत

• पर्यावरण

बाबा मायाराम

जंगल, पहाड़, नदी, पोखर, झीलों और पेड़-पौधों की हरियाली मनुष्य को अपनी ओर सदैव आकर्षित करती रही है. जब भी कोई तनाव और उदासी होती है, मनुष्य प्रकृति की ओर खिंचा चला जाता है. प्रकृति को निहारना, पक्षियों को देखना, उनकी आवाजें सुनना भी बहुत सुकून देता है. यह बच्चों के साथ बड़ों को भी सिखाता है, संवेदनशील बनाता है." यह कहना है नागपुर के पक्षी प्रेमी डॉ. लोकेश तमगीरे का.लोकेश तमगीरे बतलाते हैं कि कुछ साल पहले जब वे छत्तीसगढ़ में 'जन स्वास्थ्य सहयोग' संस्था में कार्यरत थे, तब से जंगल में घूमना, परिवेश से जुड़ना, पक्षी देखना शुरू हुआ. यह संस्था स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करती है और उसके उपकेन्द्र 'अचानकमार वन्यजीव अभयारण्य' के पास शिवतराई व बम्हनी गांवों में हैं. इन गांवों का रास्ता जंगल के बीच से होकर गुजरता है. बम्हनी जाते समय मनियारी नदी भी कल-कल बहती है. बिलासपुर जिले के 'अचानकमार अभयारण्य' में घना जंगल तो है ही, रंग-बिरंगे पक्षी भी बहुत हैं. वे आगे बतलाते हैं कि इसके बाद महाराष्ट्र के गढ़चिरौली जिले में 'लोक बिरादरी प्रकल्प, हेमलकसा' में काम किया. यह संस्था प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. प्रकाश आमटे व उनकी पत्नी डॉ. मंदाकिनी आमटे की है और स्वास्थ्य के अलावा सामाजिक क्षेत्र के कई काम करती है. तमगीरे बताते हैं कि एक दिन जंगल में साइकिल से घूमते-घामते अचानक पीले रंग का पक्षी देखा. इसे अंग्रेजी में 'गोल्डन ओरिएल' (पीलक) कहते हैं. यह बहुत ही आकर्षक व सुंदर था. इससे उनकी पक्षी देखने में दिलचस्पी बढ़ी. रोज़ सुबह-शाम सैर करना, साइकिल और कैमरा लेकर निकल पड़ना, फोटो खींचना और पक्षियों की पहचान करना–यह सब दिनचर्या का हिस्सा बन गया. लोकेश बतलाते हैं कि 'लोक बिरादरी प्रकल्प' के स्कूल के विद्यार्थियों व संस्था के कार्यकर्ताओं को उन्होंने पक्षियों के बारे में बताना शुरू किया. डॉ. प्रकाश आमटे के साथ भी कई पक्षी देखे और प्रकृति, परिवेश व पर्यावरण के बारे में उनसे चर्चाएं कीं. वे हेमलकसा में करीब दो साल रहे. इस दौरान वहां पक्षियों के बारे में 4-5 वीडियो बनाए, जिसे काफी सराहा गया. वर्ष 2018 से यू-ट्यूब पर वीडियो डालना शुरू किया. इस बीच 94-95 पक्षियों की पहचान कर ली. जंगल में पक्षियों को कोई नुकसान न पहुंचाए, इस बारे में समुदाय के साथ चर्चा होती रहती थी. वहां के आदिवासी समुदाय का प्रकृति प्रेम भी प्रेरणा का स्रोत बना. वर्ष 2019 में सेवाग्राम (वर्धा) आ गए. यह गांधीजी की कर्मस्थली है. गांधी के विचारों से प्रेरणा मिली. इस पहल में प्रकृति, पर्यावरण व जैव-विविधता का संरक्षण भी जुड़ गया. इस बीच कोविड-19 आ गया और देशव्यापी तालाबंदी हो गई. इस दौरान 'भारत के बर्डमैन' विख्यात पक्षी-विज्ञानी सालिम अली की किताबें पढ़ीं. यहां व्यवस्थित तरीके से वीडियो बनाना शुरू किया. सेवाग्राम में मेडिकल कॉलेज के पीछे आरोग्य धाम परिसर, डॉक्टर कालोनी, एमआईडीसी एरिया और आसपास के ग्रामीण क्षेत्र में पक्षियों के फोटो व वीडियो बनाना शुरू किया. इस बीच तकरीबन 97 पक्षी देखे. डॉ. लोकेश तमगीरे वर्ष 2021 में 'नागपुर-एम्स' (ऑल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस) में आ गए और 'सामुदायिक आरोग्य विभाग' के साथ जुड़कर आदिवासी बहुल क्षेत्र में काम करने लगे. 'एम्स' के पास मिहान क्षेत्र, तालाबों के किनारे, सड़क किनारे, अंबाझिरी पार्क, जैव-विविधता उद्यान, दहेगांव तालाब, गोरवाड़ा जैव-विविधता उद्यान, महाराजा बाग, रामटेक के पेंच के जंगल इत्यादि कई स्थानों पर पक्षियों को देखना और उन्हें पहचानना जारी रहा. इस दौरान पक्षियों के व्यवहार, प्राकृतिक पक्षी आवास का अध्ययन किया. वे कैसे रहते हैं, पानी वाले, घास वाले, पलायन वाले, घने जंगलों में रहने वाले, नदी किनारे, शहरी क्षेत्रों में रहने वाले, मौसमी पक्षी इत्यादि का भी अध्ययन किया. जलीय व स्थलीय दोनों तरह के पक्षियों को देखा. इसके साथ, प्रजनन, रंग इत्यादि के बारे में भी जानकारी एकत्र की. पक्षी ज्ञान बेहतर बनाया. यहां करीब 40-50 वीडियो बनाए और अब तक 150 वीडियो बना लिए हैं. 50 पक्षियों की आवाजों के साथ वीडियो बनाए हैं. डॉ. लोकेश तमगीरे वनविभाग द्वारा पक्षियों की गणना में भी शामिल हो चुके हैं. महाराष्ट्र के 'पेंच टाईगर रिजर्व'में दो बार पक्षी गणना, 'मेलघाट टाईगर रिजर्व' में पक्षी गणना, एशियन वाटर बर्ड सर्वे, 'अचानकमार टाईगर रिजर्व,' निसर्गानुभव (बुद्ध पूर्णिमा) इत्यादि में भागीदारी की है.

> इस दौरान 'भारत के बर्डमैन' विख्यात पक्षी-विज्ञानी सालिम अली की किताबें पढ़ीं. यहां व्यवस्थित तरीके से वीडियो बनाना शुरू किया. सेवाग्राम में मेडिकल कॉलेज के पीछे आरोग्य धाम परिसर, डॉक्टर कालोनी, एमआईडीसी एरिया और आसपास के ग्रामीण क्षेत्र में पक्षियों के फोटो व वीडियो बनाना शुरू किया.

मीडिया में अन्यत्र

धुर-दक्षिणपंथ की तरफ झुकाव

नीदरलैंड के संसदीय चुनावों में धुर-दक्षिणपंथी और इस्लाम-विरोधी लोकलुभावन नेता गीर्ट वाइल्डर्स की जीत ने लंबे समय से सामाजिक तौर पर यूरोप के सबसे उदार देशों में गिने जाने वाले इस देश को एक चौराहे पर ला खड़ा किया है. शुरुआती नतीजों के मुताबिक, श्री वाइल्डर्स की पार्टी फॉर फ्रीडम (पीवीवी) 150-सदस्यीय निचले सदन में 37 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है. लेबर-ग्रीन गठबंधन ने 25 सीटें जीतीं, जबकि मौजूदा पीपुल्स पार्टी फॉर फ्रीडम एंड डेमोक्रेसी (वीवीडी) ने 24 सीटें हासिल कीं. भले ही पीवीवी बहुमत के लिए जरूरी 76 सीटों से काफी दूर है, लेकिन इसका जबरदस्त प्रदर्शन (इसने पिछले चुनावों में वीवीडी द्वारा जीती गई कुल सीटों से तीन सीटें ज्यादा हासिल की हैं) श्री वाइल्डर्स को गठबंधन के लिए बातचीत शुरू करने और देश के पहले धुर दक्षिणपंथी प्रधानमंत्री बनने की संभावित राह पर आगे बढ़ने की हैसियत बख्शा है. बीते कुछ सालों में, श्री वाइल्डर्स ने यूरोप के सबसे कट्टरपंथी धुर-दक्षिणपंथी लोकलुभावन नेताओं में से एक के रूप में अपनी छवि बनाई है. उन्होंने नीदरलैंड को "इस्लामीकरण से मुक्त" कराने, मस्जिदों को बंद करने, कुरान पर प्रतिबंध लगाने और मुस्लिम-बहुल देशों के प्रवासियों के लिए सीमाएं बंद करने का आह्वान किया है. उन्होंने चुनाव अभियान के दौरान प्रवासियों की आमद को एक मजबूत राजनीतिक मुद्दा बनाया. ऐसा मालूम होता है कि इस मुद्दे से उन्हें मौजूदा राजनीतिक प्रतिष्ठान को सबसे बड़ा झटका देने में मदद मिली.पीवीवी की जीत न तो हैरतअंगेज है और न ही अहलदा है. वर्ष 1998 से प्रतिनिधि सभा के सदस्य चुने जा रहे श्री वाइल्डर्स ने 2004 में रूढ़िवादी वीवीडी से अलग होकर पीवीवी का गठन किया. तब से, वह डच राजनीति में अपने तरीके के लोकलुभावनवाद को आगे बढ़ा रहे हैं. अतीत में, निवर्तमान प्रधानमंत्री मार्क रुटे की अगुवाई वाले वीवीडी ने पीवीवी के विवादास्पद विचारों की वजह से उसके साथ गठबंधन करने से परहेज किया था. लेकिन सदन में सबसे अधिक सीटें हासिल करके पीवीवी ने अब खुद को डच राजनीति के केंद्र में स्थापित कर लिया है.

(द हिंदू)

शब्द चर्चा

डॉ. विनय कुमार पाण्डेय

आस/आसन/आसान

तुम ऊंचे आसन पर भाई बैठ चुके हो. तुम पर ही सारे लोगों की आस टिकी है. दूर करोगे तुम उनकी सारी दुविधाएं, कर दोगे आसान सभी लोगों का जीवन. ऐसा ही आसार सभी जन देख रहे हैं. इस कविता में लोगों के मन में जो आस जगी है, वह भले ही पूरी न हो, लेकिन अनुचित नहीं है. कहा गया है-आशा ही जीवन है, निराशा ही मौत. वर्धा हिंदी शब्दकोश के अनुसार आस शब्द संस्कृत के आशा शब्द का तद्भव रूप है. यानी संस्कृत के आशा शब्द को हिंदी ने आस के रूप में अंगीकार किया है. इस शब्द के समानार्थी शब्द हैं-आशा, भरोसा, कामना, सहारा. ये वे मुख्य शब्द हैं, जिनमें आस शब्द के भाव हैं. आस शब्द से बहुत सारे मुहावरे भी आम लोगों के बीच प्रयोग में आते हैं. जैसे किसी से बहुत अधिक आस नहीं करनी चाहिए, क्योंकि जब आस टूट जाती है तो बहुत कष्ट होता है. जिसको कोई परवाह ही नहीं है, उसकी आस तकने से क्या फायदा होगा. ऐसी बात सुनने के बाद जब मन में आस-भरोस दम तोड़ने लगता है, तब आस बंधाने के लिए गुरुदेव पहुंच जाते हैं. इन वाक्यों में आस से बने मुहावरे का प्रयोग किया गया है. आसन शब्द से हर कोई परिचित है. यानी मूंज, कुश या ऊन से बनी हुई छोटी चटाई, बैठने की मुद्रा, काम शास्त्र में वर्णित चौरासी मुद्राएं, साधु-संतों के रहने या ठहरने का स्थान, छः प्रकार की परराष्ट्र नीति में से एक 'उपेक्षा की नीति.' इसका मुहावरा देखिए. आसन उखड़ना यानी अपने स्थान से हिल जाना, आसन जमना यानी एक ही स्थान पर देर तक बैठना, आसन जमाना यानी अडिग भाव से जमकर बैठना. आसन देना यानी सत्कार करना. आसन डोलना यानी किसी कारण वश मन का विचलित होना. आसन से मिलता जुलता एक शब्द है आसन्न, जिसका मतलब है निकट या नजदीक आया हुआ, समीपस्थ, उपस्थित. कहना आसान है, करना मुश्किल. आसान यानी सरल, सुगम.

अध्यक्ष महोदय की आत्मकथा

• तीर-तुक्का

रवि प्रकाश

बुढ़ापे में बीमारी केवल यह नहीं है कि आदमी बूढ़ा हो गया है. सबसे बड़ी बीमारी प्रतिष्ठित व्यक्तियों को अध्यक्षता की लग जाती है. अक्सर सोचता हूं कि अध्यक्षता करना छोड़ दूं, चैन से घर में बैठूं. अब आजकल चला-फिरा भी नहीं जाता. घुटनों में दर्द रहता है. हर पाँच मिनट के बाद टांगों की पोजीशन बदलनी पड़ती है. हाथ काम नहीं करते. आंखों से कम दिखता है. गर्दन में दर्द बराबर रहता है. कमर झटका खाती रहती है. दिमाग एक घंटा कहीं बैठो तो सुन्न-जैसा हो जाता है, लेकिन अध्यक्षता का आकर्षण ही ऐसा है कि नहीं छूट रहा. अध्यक्षता बुढ़ापे में ही मिलना शुरू होती है. जवानी में तो लोग सामान्य दर्शक और श्रोता बनकर कार्यक्रमों के मजे लूटते हैं और उछलते-कूदते घर वापस आ जाते हैं. अब जब अध्यक्षता मिलने का दौर शुरू हुआ है तो बुढ़ापे ने अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया. अरे भाई ! जरा सोचो, जिस आयु में अध्यक्षता मिलती है उस आयु में शरीर भी तो अध्यक्षता के लायक होना चाहिए. लेकिन शरीर का बुरा हाल है. उधर अध्यक्षता के मामले में सबसे बड़ी मुसीबत यह है कि ठीक समय पर कार्यक्रम में पहुंचना पड़ता है. कार्यक्रम भले ही एक घंटा लेट हो, लेकिन अध्यक्ष समय से नहीं पहुंचे तो आयोजक उसकी बुराई शुरू कर देते हैं. चार बार मोबाइल पर तकादा शुरू हो जाता है. बंधुवर! आप अभी तक नहीं आए? कार्यक्रम का समय हो रहा है. कई बार तो मन करता है कि साफ-साफ कह दिया जाए कि तुम्हारे निर्धारित कार्यक्रम से हम एक घंटा लेट पहुंचेंगे, क्योंकि तुम्हारा कार्यक्रम ही कौन सा ठीक समय पर शुरू हो रहा है? हमसे दीप प्रज्वलित करा कर कार्यक्रम की शुरुआत कर लेते हो और फिर हमें मंच पर मुस्कुराते हुए बैठना पड़ता है ! पीठ दुख जाती है. लेकिन एक बात तो तय है कि जब मंच पर अध्यक्षीय आसन पर विराजमान होकर गले में फूलों के हार पड़ते हैं तो गला क्या, हृदय और शरीर के साथ-साथ आत्मा भी गद्‌गद हो जाती है. इसी स्वर्ग लोक के सुंदर आनंद के लिए तो हम अध्यक्षता स्वीकार करते हैं. वरना टुच्ची अध्यक्षता में रखा क्या है ! लेकिन सबसे ज्यादा दुखद बात अध्यक्षता में यह रहती है कि हमें तो अंत तक अध्यक्षीय आसन पर विराजमान होना पड़ता है, जबकि बाकी सब लोग जब चाहे चले जाने के लिए स्वतंत्र रहते हैं. हमारी आंखों के सामने लोग हंसते-मुस्कुराते हुए कार्यक्रम के बीच से उठकर चले जाते हैं और हम मन मसोसकर रह जाते हैं कि क्या करें ! अध्यक्ष हैं ! अंत तक बैठना ही पड़ेगा !

होम ट्यूटर का रिप्लेसमेंट साबित हो सकता है

एआई से लैश गूगल का गणित सॉल्वर

जमाना गूगल गुरु जी का

प्रेम आनंद
आईटी एक्सपर्ट

गणित हमेशा से एक कठीन विषय माना गया है, हालांकि वास्तविकता इससे अलग है. गणित में रुचि रखने वालों की राय में गणित एक मजेदार और आसान विषय है. जो लोग गणित में रूचि लेते हैं, वे गणित के सवाल आसानी से बना देते हैं. टेक्नोलॉजी के बढ़ने के साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) भी तेजी से आगे बढ़ रहा है और पहले से तेज हो रहा है.

एआई अब बहुत सारे काम के साथ अब उन बच्चों की भी मदद करेगा जिन्हें गणित से डर लगता है और गणित के सवाल को हल करने में परेशानी होती है. इसके लिए गूगल एआई आधारित एक एप लॉन्च करने जा रही है.

गूगल अपने सर्च इंजन में एआई से लैश एक नया फीचर जोड़ने की तैयारी कर रहा है. यह खास फीचर विद्यार्थियों के लिए होगा. इससे पहले ऐसे फीचर माइक्रोसॉफ्ट ने मैथ साल्व के नाम से लॉन्च कर चुकी है लेकिन गूगल अब उससे एक कदम आगे मैथ के अलावा अब विज्ञान व भौतिकी जैसे विषयों के लिए भी इसे लाने जा रहा है.

गूगल स्टूडेंट्स की जरूरतों को ध्यान में रख कर यह फीचर लांच करने जा रहा है. इसमें स्टूडेंट्स को गणित, भौतिक और ज्यमामिती के सवालों को हल करने में मदद मिलेगी. यानी अब 24 ऑवर आपका डाउट क्लियर करेगा गूगल. गूगल मैथ साल्वर की सबसे बड़ी खासियत है कि यहां स्टूडेंट्स अपनी लोकल भाषा में भी अपने सवालों का जबाब पा सकते हैं.

कैसे काम करता है "गणित सॉल्वर"

गूगल गणित सॉल्वर में स्टूडेंट्स को अपना गणित का समीकरण या अपने सवाल को दर्ज करके या गूगल लेंस के साथ एक तस्वीर लेकर उसे अपलोड करना होगा. इसके बाद गूगल उस सवाल का स्टेप बाय स्टेप समाधान स्क्रीन पर देगा. यह ₹गणित सॉल्वर₹ नाम से अभी सिर्फ डेस्कटॉप के लिए ही उपलब्ध है. इसे अब जल्द ही मोबाइल पर लॉन्च करने की तैयारी कर रहा है गूगल. यहां स्टूडेंट्स त्रिकोणमिति और कैलकुलस जैसे विषयों पर भी सहायता पा सकते हैं.

22 भाषाओं का सपोर्ट

माइक्रोसॉफ्ट ने छात्रों की सहूलियत के लिए इस एप में 22 भाषाओं का सपोर्ट दिया है जिसमें हिंदी, आसामी, बंगाली, गुजराती, मराठी, कन्नड़, पंजाबी और तमिल जैसी भाषाएं शामिल हैं. इस एप में स्पैनिश रशियन भाषाएं भी हैं. इस एप में वीडियो ट्योटोरियल और वर्कशीट भी मिलेगी.

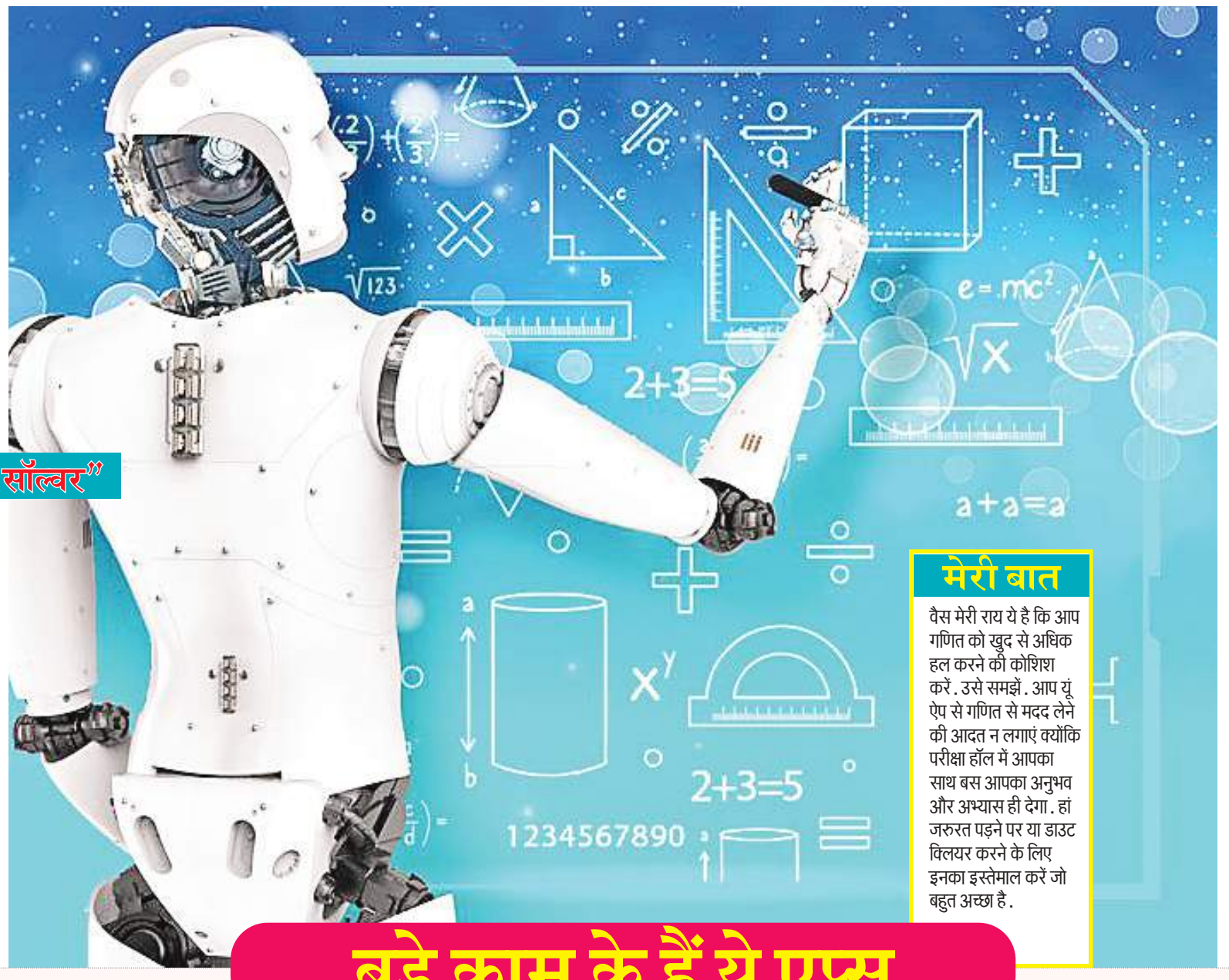

मेरी बात

वैस मेरी राय ये है कि आप गणित को खुद से अधिक हल करने की कोशिश करें. उसे समझें. आप यूं ऐप से गणित से मदद लेने की आदत न लगाएं क्योंकि परीक्षा हॉल में आपका साथ बस आपका अनुभव और अभ्यास ही देगा. हां जरुरत पड़ने पर या डाउट क्लियर करने के लिए इनका इस्तेमाल करें जो बहुत अच्छा है.

फिज़िक्स के लिए एआई

गूगल के पास दुनिया का सबसे बड़ा भाषा मोडेल उपलब्ध है. गूगल एआई की मदद से मैथ सॉल्वर को कई भाषाओ में लॉन्च करने जा रहा है. गूगल का यह एडवांस मॉडल हाई-स्कूल भौतिकी समस्याओं में सहायता प्रदान करेगा. यह सुविधा ज्ञात और अज्ञात मूल्यों की पहचान करने और समस्याओं को हल करने के लिए सही सूत्रों का चयन करने में सहायता करेगी. साथ ही गूगल अब यूजर्स को सर्च बार पर 1,000 से अधिक स्टीम अवधारणाओं को देखने की अनुमति देता है. जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिकी, खगोल विज्ञान और संबंधित विषयों के लिए इंटरएक्टिव आरेख और 3डी मॉडल उपलब्ध हैं.

गूगल ऐसा एप लॉन्च करने वाला पहला नहीं है. इससे पहले माइक्रोसॉफ्ट ने मैथ सॉल्वर नाम से ऐसे ही एप को एंड्रॉयड और आईफोन दोनों यूजर्स के लिए जारी कर दिया है. इस एप में भी एआई का सपोर्ट है. ऐसे में यह इंटरनेट से ही काम करेगा. इसमें गणित के कई सारे कॉन्सेप्ट और सूत्र अपलोडेड हैं. एप में प्राथमिक अंकगणितीय और द्विघात समीकरणों से लेकर अवधारणाओं की एक विस्तृत श्रृंखला दी गई है. माइक्रोसॉफ्ट मैथ सोल्वर एप में ड्रॉ करके भी सवाल का हल प्राप्त कर सकते हैं.

यहां माइक्रोसॉफ्ट ने स्टूडेंट्स के लिए करीब 8 तरह के कैलक्यूलेटर भी दिए हैं जिससे आपको अब अलग से फिज़िकल महंगे कैलक्यूलेटर खरीदने की जरूरत नहीं पड़ती है.

साथ ही इसमें स्कैन करने और टाइपिंग की भी सुविधा है. इस एप को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि छात्रों को किसी सवाल का जवाब स्टेप-बाय-स्टेप में मिलेगा. मैथ सोल्वर एप में वैज्ञानिक कैलकुलेटर भी दिया गया है. इस एप में आप सवाल को हल करने का तरीका भी सीख सकते हैं.

बड़े काम के हैं ये एप्स

एंड्रॉयड और आइओएस पर इससे मिलते जुलते कई अन्य एप्प भी हैं जिनमें से कुछ के इस प्रकार हैं.

PHOTO MATH

फोटो मैथ एक ऐसा मोबाइल एप्प है,जिसके द्वारा आप मैथ के सवालों को स्कैन करके उसका हल पा सकते हैं.

CALC TAPE

क्या आप लॉन्ग मैथेमेटिक्स कैलकुलेशन के समय गलतियां करते हैं. या लम्बे कैलकुलेशन में भूल जाते हैं. तो ये Calc Tape एप्प इसमें आपकी मदद करेगा.

MATHWAY

मैथवे एप्प में मैथमेटिक्स के पहले से डिफाइंड किये हुए सिंपल ऑपरेशन फीड हैं. जैसे बेसिक मैथ, प्री एल्जेब्रा, एल्जेब्रा प्री कैल्कुलस, कैल्कुलसद्ध सटैटिस्टिक्स, बेसिक मैथ, प्री एलजेब्रा, एलजेब्रा, प्री कैलकुलस, कैलकुलस, स्टैटिसटिक्स, केमेस्ट्री, ट्रिगोनोमेट्री आदि. इनके प्रश्नों को सॉल्व किया जा सकता है.

HIPER SCIENTIFIC CALCULATOR

HiPER Scientific Calculator 16 मिलियन से अधिक डाउनलोड और 100 000 फाइव-स्टार रेटिंग वाला एक लोकप्रिय कैलकुलेटर है. इसमें significant के 15 अंक और exponent के 3 अंक हैं. HiPER Calc Pro वर्जन में 100 अंकों के significant और exponent के 9 अंकों की गणना करें. अपने पीसी या डिवाइसेस पर इस ऐप का उपयोग करने के लिए किसी भी इंटरनेट कनेक्शन की आवश्यकता नहीं है. यह दोहराए जाने वाले डेसिमल्स और नंबर्स का पता लगाता है.

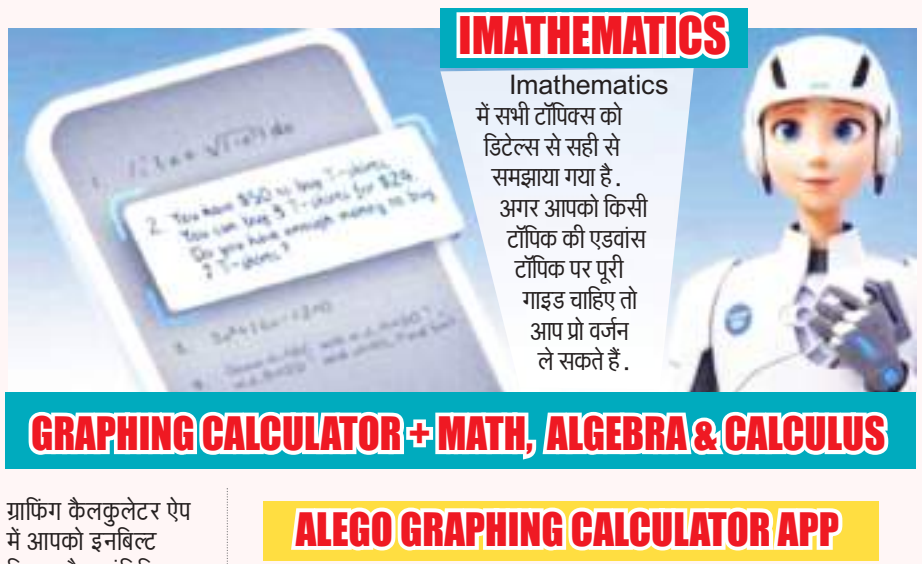

IMATHEMATICS

Imathematics में सभी टॉपिक्स को डिटेल्स से सही से समझाया गया है. अगर आपको किसी टॉपिक की एडवांस टॉपिक पर पूरी गाइड चाहिए तो आप प्रो वर्जन ले सकते हैं.

GRAPHING CALCULATOR + MATH, ALGEBRA & CALCULUS

ग्राफिंग कैलकुलेटर ऐप में आपको इनबिल्ट मिलता है साइंटिफिक कैलकुलेटर, ग्राफिंग कैलकुलेटर, फ्रैक्शन कैलकुलेटर, बीजगणित कैलकुलेटर और मेट्रिक्स कैलकुलेटर के सबसे एडवांस फीचर्स.

ALEGO GRAPHING CALCULATOR APP

सरल गणना और ग्राफ डिजाइन को सपोर्ट करता है. ये एप्लिकेशन symbolic differentiation, Definite integrals, Calculate tailor series और equation आदि को हल करने में मदद करता है. इस एप्लिकेशन की खास बात ये है कि ये Trigonometric Functions, Hyperbolic Functions, Degree और Radiance, Variable के साथ Scientific Notation का भी समर्थन करता है.

MY SCRIPT CALCULATOR

माई स्क्रिप्ट कैलकुलेटर एंड्रॉइड स्टोर पर उपलब्ध कैलकुलेटर में सबसे अच्छे ऐप में से एक है. जैसा कि आप देख सकते हैं, ये ऐप आपके हाथो से ड्रा किए गए लेटर या नंबर्स को डिजिटल लेटर में चेंज कर देता है. इससे आपका टाइप करने का समय बच जाता है.

SOCRATIC BY GOOGLE

Socratic by Google जो गूगल एआई द्वार प्रचलित है, ये आपकी मदद कर सकता है. यह लर्निंग ऐप, जो हाई स्कूल और यूनिवर्सिटी लेवल पर काम करता है, आपको आपके स्कूल वर्क को समझने में मदद करता है. Socratic से सवाल पूछे और ऐप आपके लिए सबसे अच्छे online resources को खोजेगा ताकि आप कॉन्सेप्ट को सीख सकें. Socratic हाई स्कूल के विषयों का समर्थन करता है.

MICROSOFT MATHS SOLVER

माइक्रोसॉफ्ट मैथ्स सॉल्वर ऐप अंकगणित, बीजगणित, त्रिकोणमिति, कैलकुलस, सांख्यिकी और अन्य विषयों सहित विभिन्न प्रकार की समस्याओं में मदद प्रदान करता है जो एक एडवांस्ड एआई पावर्ड मैथ सॉल्वर का उपयोग करते हैं. बस स्क्रीन पर गणित की कोई समस्या लिखें या गणित की तस्वीर खींचने के लिए कैमरे का उपयोग करें. माइक्रोसॉफ्ट मैथ्स प्रॉब्लम सॉल्वर समस्या को तुरंत पहचान लेता है और आपको चरण-दर-चरण स्पष्टीकरण, इंटरेक्टिव ग्राफ़, वेब से इसी तरह की समस्याओं और ऑनलाइन वीडियो व्याख्यान के साथ इसे हल करने में मदद करता है. यह बिल्कुल मुफ़्त है और यहां कोई विज्ञापन नहीं है.

इन गजेट्स से साइक्लिंग होगी मजेदार

साइक्लिंग को मजेदार बनाना हो तो उसमें चार गजेट्स और जोड़ दें. यह जाहिर बात है कि साइक्लिंग अपने आप में एक अच्छी कसरत है. आपको एक्टिव रखती है. पर्यारवरण को शुद्ध रखने में सहायक होती है. अपना कार्बन फुट प्रिंट कम कर सकते हैं. अगर आप अपने साइकिल के अनुभव को और बेहतर बनाना चाहते हैं तो आपको जरूरत होगी कुछ बेहतरीन गजेट्स की.

स्मार्ट साइक्लिंग हेलमेट

साइक्लिंग के दौरान अहम है हेलमेट. कोई ऐसा-वैसा हेलमेट आपके कंफर्ट को खत्म कर सकता है. इसके लिए पॉली-कार्बोनेट हेलमेट का इस्तेमाल करना एक अच्छा विकल्प है. यह वजन में काफी हल्का होता है. साइक्लिंग के दौरान सुविधाजनक तरीके से फिट हो जाते हैं. इसकी खासियत यह है कि हल्के होने के बावजूद इसकी मजबूती में कोई कमी नहीं रहती है. बाजार में आजकल कई तरह के साइक्लिंग हेलमेट मिलते हैं जिनमें कई सेंसर लगे रहते हैं. यह सेंसर कई चीजों की मॉनीटरिंग करते हैं. जैसे आपकी स्पीड को. साइकल राइड के दौरान खपत होने वाली कैलोरीज को. साथ ही दिल की धड़कन जैसी दूसरी बायोमेट्रिक डेटा को भी माप सकते हैं. हेलमेट के साथ यह भी विशेषता जुड़ी हुई है कि आप अपने स्मार्टफोन के साथ ब्लूटूथ सिंक कर सकते हैं. इससे साइकिल चलाते हुए आप किसी का कॉल अटैंड कर सकते हैं. जीपीएस मैप्स का डायरेक्शन पा सकते हैं. कुछ हेलमेट में जीपीएस मैप्स के डायरेक्शन पा सकते हैं. इसमें इनबिल्ट कैमरा भी साथ आते हैं. हेलमेट डेढ़ हजार से लेकर 19 सौ रुपए तक में मिल जाते हैं.

स्मार्ट टेल लाइट्स

स्मार्ट टेल लाइट एक काफी काम का गजेट है. इसी मदद से आप रात में अधिक दूर तक देख सकते हैं. इससे हादसे की आशंका कम हो जाती है. यह आपकी साइकिल को और अधिक फैंसी लुक देता है. स्मार्ट टेल लाइट्स कई रंगों और अलग-अलग आकार प्रकार में आती है. आप इन्हें वायरलेस रिमोट के जरिए भी कंट्रोल कर सकते हैं. स्मार्ट टेल लाइट्स वाटर प्रूफ होती है. इसमें आपको टर्न लाइट्स के साथ साथ 120 डीबी का लाउडस्पीकर भी दिया गया है. इसे आप किसी भी यूएसबी केबल के जरिए आसानी से चार्ज कर सकते हैं और इंस्टाल करना भी बहुत आसान होता है.

स्मार्ट बाइक ट्रेनर

खराब मौसम, बहुत अधिक गर्मी-सर्दी के दौरान साइक्लिंग करना मुश्किल हो जाता है. ऐसे में स्मार्ट बाइक ट्रेनर बहुत काम आता है. इस तरह के डिवाइस से आपकी सामान्य साइकिल किसी इंडोर ट्रेनिंग मशीन में बदल जाती है. इसमें बहुत एडवांस सेंसर लगे होते हैं. यह आपकी स्पीड, पावर, आउटपुट का रियल टाइम देखते रहते हैं. इन डिवाइस से कॉम्पिटैबल एप्स भी आपको मिल जाएंगे. जिसके सहारे आप दुनियाभर के यूजर्स से प्रतिस्पर्धा भी कर सकते हैं. अपना बायोमैट्रिक्स भी माप सकते हैं.

फोन माउंट

फोन माउंट के इस्तेमाल से आप अपने फोन को साइकिल पर आसानी से लगा सकते हैं. यूनिवर्सल फोन माउंट में आप 4.7 इंच से लेकर 7.2 इंच तक के सभी स्मार्ट फोन आप आसानी से माउंट कर सकते हैं. यह वाटरप्रूफ कवरिंग के साथ आता है. लेकिन इसके बावजूद आप अपने फोन की स्क्रीन को बहुत अच्छे से ऑपरेट कर सकते हैं जिससे साइक्लिंग के दौरान किसी तरह की कोई दिक्कत नहीं होती है. ये माउंट बाजार में डेढ़ हजार रुपए तक में आसानी से मिल जाते हैं.

ठंड में जब ऑन करें कार का हीटर

ठंड के मौसम में कार में सफर के दौरान हीटर के उपयोग से कुछ लोग ईंधन की अधिक खपत की शिकायत करते हैं. आइए जाने कि किस तरह से हीटर चलाने पर ईंधन की खपत कम हो सकती है.

कभी भी कार को स्टार्ट करने के तुरंत बाद हीटर को नहीं चलाएं. दरअसल सर्दियों के मौसम में कार स्टार्ट करते हुए इंजन का तापमान काफी कम होता है. ऐसे में तुरंत हीटर चलाने पर केबिन को गर्म करने में अधिक समय लगता है और ईंधन की खपत भी बढ़ जाती है. कुछ किलोमीटर कार चलाने के बाद तापमान सामान्य हो जाए तभी हीटर को चलाना चाहिए. इसके बाद एसी की सेटिंग को हॉट पर करें और सिर्फ फैन को चलाएं. इससे इंजन की गर्मी से कार के केबिन को गर्म रखा जा सकता है.

संयोजन : चेतना झा, डिजाइनिंग - खुशबू कुमारी

ब्रीफ खबरें

त्रिपुरा ने सौराष्ट्र को हराकर किया उलटफेर

बेंगलुरु। अनुभवी भारतीय बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा की मौजूदगी के बाद भी गत चैम्पियन सौराष्ट्र को विजय हजारे ट्रॉफी राष्ट्रीय एकदिवसीय टूर्नामेंट के ग्रुप ए मैच में सोमवार को यहां त्रिपुरा के खिलाफ 148 रन के बड़े अंतर से शिकस्त का सामना करना पड़ा. गणेश सतीश (74 गेंद में 71) सुदीप चटर्जी (93 गेंद में 61 रन) और बिक्रम कुमार दास (76 गेंद में 59 रन) की अर्धशतकीय पारियों से त्रिपुरा ने आठ विकेट पर 258 रन बनाने के बाद जयदीप देव (15 रन पर पांच) की शानदार गेंदबाजी से सौराष्ट्र की पारी को 31.4 ओवर में महज 110 रन पर समेट दिया.

भारतीय सीनियर टीम ने दी शुभकामनाएं

नयी दिल्ली। भारतीय महिला हॉकी टीम ने 29 नवंबर से 10 दिसंबर तक चिली के सैंटियागो में होने वाले एफआईएच महिला जूनियर विश्व कप से पहले सोमवार को अपने जूनियर खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दीं. भारतीय महिला हॉकी टीम की मुख्य कोच यानेके शोपमैन ने एक वीडियो संदेश में कहा कि नमस्कार लड़कियों, सीनियर भारतीय महिला टीम की ओर से हम विश्व कप के लिए आपको शुभकामनाएं देना चाहते हैं. उन्होंने कहा कि हम जानते हैं कि आप तैयार हैं.

केआईआईटी और विखे पाटिल फाइनल में

नयी दिल्ली। पुणे का विखे पाटिल स्कूल और ओडिशा का केआईआईटी की टीम यहां आयोजित सीबीएसई राष्ट्रीय टेनिस चैम्पिनशिप 2023 में क्रमशः लड़कों और लड़कियों के अंडर 17 वर्ग के फाइनल में पहुंच गई . यहां एएसएन सीनियर सेकंडरी स्कूल में आयोजित टूर्नामेंट में लड़कियों के अंडर 17 वर्ग के सेमीफाइनल में केआईआईटी, ओडिशा ने एमएम पब्लिक स्कूल को 2-1 से हराया जबकि बिल्लाबोंग स्कूल ने अनंत इंटरनेशनल को इसी अंतर से मात दी.

श्रीलंका के खेल मंत्री बर्खास्त किए गए

कोलंबो। श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे ने सोमवार को खेल मंत्री रोशन रणसिंघे को पद से हटा दिया. जिन्होंने दावा किया था कि कि देश के क्रिकेट प्रशासन में 'भ्रष्टाचार उजागर' करने के कारण उनके 'जीवन को खतरा' है और अगर उन्हें कुछ होता है तो इसके लिए राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे और उनके स्टाफ प्रमुख जिम्मेदार होंगे. रणसिंघे को कैबिनेट की साप्ताहिक बैठक में भाग लेने के लिये पहुंचते ही बर्खास्तगी पत्र सौंप दिया गया जिस पर विक्रमसिंघे के हस्ताक्षर थे.

ओलंपिक निशानेबाजी ट्रायल तीन मई से

नयी दिल्ली। भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ (एनआरएआई) 2024 पेरिस ओलंपिक के लिये पिस्टल और राइफल चयन ट्रायल तीन और 23 मई को क्रमशः दिल्ली और भोपाल में आयोजित करेगा . एनआरएआई ने यहां जारी बयान में कहा कि पहला ट्रायल तीन मई को कर्णी सिंह रेंज पर होगा जबकि दूसरा 23 मई को भोपाल में आयोजित होगा . दो दो सेट के चार ट्रायल आयोजित किये जायेंगे और अंतिम औसत स्कोर (एफएएस) के लिये सर्वश्रेष्ठ तीन स्कोर गिने जायेंगे.

रीयाल मैड्रिड ने कैडिज को 3-0 से हराया

मैड्रिड। रोड्रिगो के दो गोल की मदद से रीयाल मैड्रिड रविवार को यहां कैडिज को 3-0 से हराकर स्पेनिश फुटबॉल लीग में शीर्ष पर पहुंच गया. रोड्रिगो ने 14वें और 64वें मिनट में गोल दागे. रोड्रिगो ने इसके अलावा ज्यूड बेलिंघम के 74वें मिनट में दागे गए गोल में मदद भी की. इस जीत से मैड्रिड अंक तालिका में शीर्ष पर पहुंच गया है. उसने गिरोना पर एक अंक की बढ़त बना ली है जो सोमवार को एथलेटिक बिलबाओ की मेजबानी करेगा. मैड्रिड तीसरे स्थान पर चल रहे एटलेटिको मैड्रिड से चार अंक आगे है.

खेल गांव में दो दिवसीय खेलो इंडिया वीमेंस किक बॉक्सिंग लीग का समापन

23 स्वर्ण के साथ पहले स्थान पर रही रांची की टीम

खेल संवाददाता। रांची

दो दिवसीय खेलो इंडिया वीमेंस किकबॉक्सिंग लीग का समापन रांची के खेल गांव स्थित बाक्सिंग हॉल में हो गया. इस प्रतियोगिता में रांची जिला की टीम 23 स्वर्ण, 13 कांस्य, 27 रजत पदक के साथ पहले स्थान पर रही. वहीं पू.सिंहभूम 13 स्वर्ण, 5 रजत, 2 कांस्य के साथ दूसरे और 11 स्वर्ण, 5 रजत और 2 कांस्य के साथ गोड्डा की टीम तीसरे स्थान पर रही. प्रतियोगिता में विभिन्न जिलों से आए हुए लगभग 325 खिलाड़ी एवं 75 ऑफियल ने अपना योगदान दिया. समापन समारोह में मुख्य अतिथि कुमार गौरव युवा आयोग के अध्यक्ष ने कहा कि इस तरह की प्रतियोगिता से महिलाओं में आत्मनिर्भरता और

प्रतिस्पर्धा की भावना बढ़ती है.आज के परिवेश में महिलाएं पुरुष से कदम से कदम मिलाकर चल रही है. विशिष्ट अतिथि के रूप में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता विनय सिन्हा दीपू ने कहा कि सभी विजेता खिलाड़ियों को बधाई विशेष रूप से रांची कि खिलाड़ियों ने प्रथम स्थान बनाया. विशिष्ट अतिथि के तौर पर सुबोध कुमार सिंह प्रदेश मंत्री भाजपा, डॉक्टर एम तौसीफ, सदस्य झारखंड राज्य अल्पसंख्यक आयोग अनुपम हजारा, उपाध्यक्ष झारखंड किकबॉक्सिंग एसोसिएशन सुरेंद्र प्रसाद ऑब्जर्वर साईं उपस्थित रहे. इस अवसर पर झारखंड किकबॉक्सिंग एसोसिएशन के सचिव ओवैस अराफात, करण कुमार,रांची जिला किकबॉक्सिंग एसोसिएशन के महासचिव गुलाम जावेद वॉरिय, उपाध्यक्ष विमल आनंद नाग, आलोक श्रीवास्तव ,नौशाद खान, कलीम खान, कोषाध्यक्ष कमल किशोर कच्छप, पूनम सिंह, अधिवक्ता प्रिया कुमारी, ब्लमदीना तिग्गा, इबरार अंसारी, गुलाम गौस कुरैशी, लालचंद लोहार, राहुल सिंह उपस्थित थे.

खास बातें

- 13 स्वर्ण के साथ पूर्वी सिंहभूम की टीम दूसरे स्थान पर
- गोड्डा की टीम ने तीसरा स्थान हासिल किया

आओ जानें

दुनिया का सबसे बड़ा क्रिकेट मैदान

दुनिया का सबसे बड़े क्रिकेट स्टेडियम की बात की जाये तो उनमें पहला नाम भारत के नरेन्द्र मोदी अंतराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम का हैं. नरेन्द्र मोदी स्टेडियम जिसका पूर्व नाम मोटेरा क्रिकेट स्टेडियम था. हाल ही में नवीनीकरण कर नरेन्द्र मोदी स्टेडियम रखा गया हैं. नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में दर्शकों की बैठने की क्षमता 1,32,000 हैं. नरेन्द्र मोदी स्टेडियम को 700 करोड़ रुपये की लागत से बनाया गया हैं, जो कि 63 एकड़ पर फैला एक विशाल मैदान हैं, इस मैदान में 76 कार्पोरेट बॉक्स, 4 ड्रेसिंग रूम के अलावा 3 प्रेक्टिस ग्राउंड भी बनाया गये हैं.

फील्ड अपडेट

अदिति ने सत्र का दूसरा एलईटी खिताब जीता

मारबेला (स्पेन)। भारत की स्टार गोल्फर अदिति अशोक ने अंतिम दौर में बोगी रहित प्रदर्शन करते हुए एंडालूसिया कोस्टा डेल सोल ओपन डि एस्पाना टूर्नामेंट जीता, जो सत्र का उनका दूसरा लेडीज यूरोपीय टूर (एलईटी) खिताब है. अदिति ने अंतिम दौर में 66 के स्कोर से कुल 17 अंडर का स्कोर बनाया. उन्होंने रविवार को नीदरलैंड की एने वान डैम (68) को दो शॉट से हराया. यह अदिति का मौजूदा सत्र का दूसरा और करियर का पांचवां एलईटी खिताब है. तोक्यो ओलंपिक में चौथे स्थान पर रही अदिति ने मौजूदा सत्र में कीनिया में भी खिताब जीता था. भारत की ही दीक्षा डागर (67) 10 अंडर के कुल स्कोर के साथ संयुक्त रूप से सातवें स्थान पर रहीं. मौजूदा सत्र में सिर्फ आठ प्रतियोगिताएं खेलने वाली अदिति रेस टू कोस्टा डेल सोल रैंकिंग में चौथे जबकि दीक्षा तीसरे स्थान पर रहीं. रेस टू कोस्टा डेल सोल रैंकिंग में त्रिचाट चेंग्लाब शीर्ष पर रहीं.

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरा टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैच आज

आज शृंखला जीतने के इरादे से उतरेगा भारत

एजेंसी। गुवाहाटी

भारतीय टीम ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मंगलवार को यहां होने वाले तीसरे टी-20 अंतरराष्ट्रीय में जीत के साथ पांच मैच की श्रृंखला में विजयी बढ़त बनाने के इरादे से उतरेगी, जबकि अंतिम एकादश से बाहर होने की संभावना के बीच युवा बल्लेबाज तिलक वर्मा छाप छोड़ने का प्रयास करेंगे. विश्व कप फाइनल के बाद श्रेयस अय्यर को एक हफ्ते का आराम दिया गया था लेकिन रायपुर और बेंगलुरू में होने वाले अंतिम दो मुकाबलों के लिए वह टीम में वापसी करेंगे और रुतुराज गायकवाड़ की जगह उप कप्तान की भूमिका निभाएंगे. इसका मतलब है कि अय्यर को अंतिम एकादश में जगह मिलेगी और पूरी संभावना है कि वह वर्मा की जगह लेंगे. यह बदलाव हालांकि फॉर्म से अधिक संयोजन के कारण होगा. शुरुआती दो मुकाबलों में बल्लेबाजों के अच्छे प्रदर्शन के बाद युवा खिलाड़ियों की मौजूदगी वाली भारतीय टीम बारसापारा स्टेडियम पर भी अपना दबदबा बनाना चाहेगी जहां की पिच पारंपरिक रूप से बल्लेबाजी की अनुकूल होती है. इस मुकाबले के लिए 40 हजार दर्शकों के स्टेडियम में आने की उम्मीद है और उन्हें भारत के प्रतिभावान बल्लेबाजी क्रम से एक बार फिर दबदबे वाली बल्लेबाजी की उम्मीद होगी.

दो मैच में 36 चौके और 24 छक्के

भारतीय बल्लेबाज शुरुआती दो मैच में 36 चौके और 24 छक्के जड़ चुके हैं. स्टीव स्मिथ, ग्लेन मैक्सवेल, मार्कस स्टोइनिस और एडम जंपा जैसे ऑस्ट्रेलिया के कुछ सीनियर खिलाड़ी नौ हफ्ते से अधिक समय से भारत में हैं और अब उन पर थकान का असर दिखने लगा है. उन्हें अगली श्रृंखला से पहले आराम की जरूरत होगी. ये चारों अगले महीने बिग बैश लीग में खेलेंगे. भारत के शीर्ष क्रम ने शुरुआती दो मैच में अच्छा प्रदर्शन किया है.

अर्धशतक जड़ने में सफल

यशस्वी जायसवाल, रुतुराज गायकवाड़ और कप्तान सूर्यकुमार यादव अर्धशतक जड़ने में सफल रहे हैं. विश्व कप के दौरान लगभग साढ़े पांच हफ्ते बेंच पर बिताने के बावजूद इशान किशन अच्छी लय में दिखे और उन्होंने लगातार दो अर्धशतक जड़े हैं. रिंकू सिंह दोनों मैचों में निचले क्रम में उम्दा पारियां खेलकर इस प्रारूप में फिनिशर की भूमिका पर खरे उतरने की कोशिश कर रहे हैं और उनकी नजरें टी-20 विश्व कप से पहले छठे स्थान पर अपनी जगह पक्की करने पर टिकी हैं.

टीमें इस प्रकार हैं

भारत: सूर्यकुमार यादव (कप्तान), रुतुराज गायकवाड़, इशान किशन, यशस्वी जयसवाल, तिलक वर्मा, रिंकू सिंह, जितेश शर्मा, वाशिंगटन सुंदर, अक्षर पटेल, शिवम दुबे, रवि बिश्नोई, अर्शदीप सिंह, प्रसिद्ध कृष्णा, आवेश खान, मुकेश कुमार.

ऑस्ट्रेलिया: मैथ्यू वेड (कप्तान), आरोन हार्डी, जेसन बेहरेनडोर्फ, सीन एबट, टिम डेविड, नाथन एलिस, ट्रेविस हेड, जोश इंग्लिस, ग्लेन मैक्सवेल, तनवीर संघा, मैट शॉर्ट, स्टीव स्मिथ, मार्कस स्टोइनिस, केन रिचर्डसन, एडम जंपा. समय: मैच शाम सात बजे शुरू होगा.

दूसरे मैच में बेहतर प्रदर्शन किया

तिरुवनंतपुरम में दूसरे टी-20 में रिंकू को उनसे ऊपर बल्लेबाजी के लिए भेजा गया और वर्मा को सिर्फ दो गेंद खेलने को मिली. यह देखना रोचक होगा कि क्या कप्तान सूर्यकुमार रायपुर में अगले मुकाबले के लिए अय्यर के टीम से जुड़ने से पहले खुद बल्लेबाजी क्रम में नीचे आकर वर्मा को अधिक गेंद खेलने का मौका देते हैं या नहीं. भारतीय गेंदबाजों ने पहले मैच में 208 रन खर्च करने के बाद दूसरे मैच में बेहतर प्रदर्शन किया. पहले दो मैच में खाली गेंद की संख्या में अधिक फर्क नहीं था लेकिन दूसरे मैच में ओस के बावजूद भारतीय गेंदबाज बाउंड्री की संख्या में कटौती करने में सफल रहे. भारतीय गेंदबाजों ने पहले मैच में 45 जबकि दूसरे मैच में 44 खाली गेंद फेंकी.

मार्टिनेज के गोल से इंटर मिलान ने यूवेंटस को ड्रॉ पर रोका

मिलान। लॉटेरो मार्टिनेज के गोल की बदौलत इंटर मिलान ने सिरी ए फुटबॉल लीग में दूसरे स्थान पर चल रहे यूवेंटस को रविवार को यहां 1-1 से बराबरी पर रोक दिया. डुआन व्लाहोविच के गोल की मदद से यूवेंटस ने बढ़त बनाई लेकिन मार्टिनेज ने लीग सत्र का 13वां गोल दागते हुए अपनी टीम को हार से बचा लिया. इस ड्रॉ के बावजूद इंटर की टीम शीर्ष पर बनी हुई है. उसने दूसरे स्थान पर चल रहे यूवेंटस पर दो अंक की बढ़त बरकरार रखी है. तीसरे स्थान पर चल रहा एसी मिलान शीर्ष पर चल रहे शहर के अपने प्रतिद्वंद्वी इंटर मिलान से छह अंक पीछे है जबकि गत चैंपियन नेपोली उससे भी दो अंक पीछे चौथे पायदान पर है. अन्य मुकाबलों में रोमा ने उडिनेसे को 3-1 से हराया.

आदित्य और शीतल कुमारी बने चैंपियन

खेल संवाददाता। रांची

मेगा स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में आयोजित झारखंड ओपन स्टेट टेनिस चैंपियनशिप सोमवार को संपन्न हुआ. इस प्रतियोगिता में पुरुष वर्ग में आदित्य सिंह और महिला वर्ग में शीतल कुमारी को चैंपियन बनने का गौरव हासिल हुआ.

प्रतियोगिता के आयोजन में मोहित, प्रवीण, असफाक, विवेक, मनीष, गुंजन, हर्ष, विमल, राणा, शहरयार व राहुल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

विभिन्न वर्गों के विजेता और उपविजेता

अंडर -10 बालक
- विजेता - लक्ष्य राज सिंह (6-4)
- उपविजेता - प्रत्यक्ष खंडेवाल

अंडर-12 बालक
- विजेता - अभिराज
- उपविजेता - अर्श परमार

अंडर-14 बालक
- विजेता - आरुष रॉय
- उपविजेता - अभिराज

अंडर-14 बालिका
- विजेता - मेबल जोलन टोप्पो
- उपविजेता - मिली कुमारी

अंडर-18 बालक
- विजेता - मो सुजैन
- उपविजेता - स्नेहल मुंडा

अंडर-18 बालिका
- विजेता - मेबल जोलन टोप्पो
- उपविजेता - सबीहा मेहर

पुरुष एकल
- विजेता - आदित्य सिंह
- उपविजेता - स्नेहल सिंह मुंडा

महिला एकल
- विजेता - शीतल कुमारी
- उपविजेता - समृद्धि कुमारी

पुरुष युगल
- विजेता - हर्ष प्रीत सिंह/ आदित्य
- उपविजेता-रोहित लाला/अभिजीत सिंह

35 पुरुष युगल
- विजेता - प्रवीण गुप्ता/विवेक गुप्ता
- उपविजेता - मनीष रॉय/अमित आर्या

45 एकल
- विजेता - रोहित लाला
- उपविजेता - कंचन सिंह

45 पुरुष युगल

विजेता - कंचन सिंह/बिनोद कुमार सिंह
उपविजेता-अरविंद/संजीव

इटली को 50 साल में पहला डेविस कप खिताब

मलागा (स्पेन)

यानिक सिनर ने शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए अपना मुकाबला जीता,जिससे इटली ने रविवार को यहां फाइनल में ऑस्ट्रेलिया को हराकर लगभग पांच दशक में पहला डेविस कप टेनिस खिताब अपने नाम किया. सिनर ने एलेक्स डि मिनोर को फाइनल के दूसरे एकल मुकाबले में 6-3, 6-0 से हराकर इटली की 2-0 से जीत सुनिश्चित की.

इटली का 1976 से यह पहला डेविस कप खिताब है. मातियो अर्नाल्डी ने पहले एकल में एलेक्सेई

पोपिरिन को 7-5, 2-6, 6-4 से हराकर इटली को 1-0 की बढ़त दिलाई थी. शनिवार को सर्बिया के खिलाफ सेमीफाइनल में दुनिया के चौथे नंबर के खिलाड़ी सिनर ने दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी नोवोक जोकोविच को एकल और युगल दोनों मुकाबलों में हराया था बाइस साल के सिनर ने इस हफ्ते अपने पाचों मुकाबलों में जीत दर्ज की.

मलागा को अगले साल एक बार फिर डेविस कप फाइनल्स के अंतिम आठ चरण की मेजबानी का मौका मिलेगा. स्पेन को वैलेंसिया में होने वाले ग्रुप चरण के लिए रविवार को वाइल्ड कार्ड दिया गया. इस साल फाइनल में जगह बनाने वाले इटली और ऑस्ट्रेलिया सितंबर में ग्रुप चरण में सीधे जगह बनाएंगे.

क्वार्टर फाइनल में पहुंची भारत की अमिषा केरकेट्टा

खेल संवाददता। रांची

आईबीए वर्ल्ड जूनियर बॉक्सिंग प्रतियोगिता में भारत की अमिषा केरकेट्टा क्वार्टर फाइनल में पहुंची. अमिषा केरकेट्टा झारखंड की बॉक्सर है, जो झारखंड राज्य खेल प्रोत्साहन सोसाइटी (जेएसएसपीएस) की प्रशिक्षु हैं. अमिषा केरकेट्टा ने प्री क्वार्टर फाइनल में मैक्सिको की आरआर देवानी को हराकर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया. ऐसा पहली बार है, जब जेएसएसपीएस की कोई बॉक्सर देश का प्रतिनिधित्व कर रही है. बता दें कि वर्ल्ड जूनियर बॉक्सिंग प्रतियोगिता का आयोजन 21 नवंबर से 5 दिसंबर 2023 तक येरेवन आर्मेनिया में किया गया है.

जू. विश्व मुक्केबाजी चैंपियनशिप के लिए भारतीय टीम

जूनियर बालक : ब्रिजेश (46 किग्रा), सिकंदर (48 किग्रा), दिवाश (50 किग्रा), साहिल (52 किग्रा), जतिन (54 किग्रा), योगेश (57 किग्रा), सारथी सैनी (60 किग्रा), कबीराज सिंह (63 किग्रा), प्रशांत (66 किग्रा), राहुल कुंडू (70 किग्रा), साहिल (75 किग्रा), हार्दिक (80 किग्रा), हेमंत (80 किग्रा)

जूनियर बालिका : नेहा (46 किग्रा), पायल (48 किग्रा), परी (50 किग्रा), निशा (52 किग्रा), अमीषा (54 किग्रा), विनी (57 किग्रा), जॉयश्री देवी (60 किग्रा), सृष्टि (63 किग्रा), निधि ढुल (66 किग्रा), आकांशा (70 किग्रा), कृतिका (75 किग्रा), मेघा (80 किग्रा), प्राची (80 किग्रा).

इस प्रतियोगिता में भारत का 26 सदस्यीय दल भाग ले रहा है. वहीं 58 देशों के 448 युवा प्रतिभागी इसमें भाग ले रहे हैं.

टी-20 ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 25 गेंद में 53 रन की पारी खेलकर सबका ध्यान अपनी ओर खींचा

बेखौफ होकर खेलने का प्रयास कर रहा था: जायसवाल

भाषा। तिरुवनंतपुरम

भारत के प्रतिभाशाली सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल तेजी से बेखौफ होकर खेलने की कोशिश कर रहे हैं.जो यहां दूसरे टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैच में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ उनकी 25 गेंद में 53 रन की पारी से स्पष्ट है. दाएं हाथ के इस 21 वर्षीय बल्लेबाज ने रविवार को अपनी पारी के दौरान नौ चौके और दो छक्के लगाए और भारत को शानदार शुरुआत दी. छठे ओवर में आउट होने से पहले उन्होंने रुतुराज गायकवाड़ (58) के साथ पहले विकेट के लिए 77 रन की साझेदारी की जिससे भारत ने चार विकेट पर 235 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया और फिर ऑस्ट्रेलिया को नौ विकेट पर 191 रन पर रोककर 44 रन से जीत दर्ज की.

यह मेरे लिए विशेष था

रविवार को मैच के बाद जायसवाल ने कहा कि यह मेरे लिए वास्तव में विशेष था. मैं अपने सभी शॉट खेलने की कोशिश कर रहा था, मैं अपने फैसलों को लेकर पूरी तरह आश्वस्त था. उन्होंने कहा कि मुझे कप्तान सूर्या (सूर्यकुमार यादव) और कोच वीवीएस (लक्ष्मण) भाई ने खुलकर खेलने को कहा है. मैं हमेशा सोचता हूं कि अनुभवी खिलाड़ियों की मौजूदगी में खुद को कैसे बेहतर बना सकता हूं. अब भी सीख रहा हूं. मैच के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुने गए जायसवाल ने कहा कि वह अपनी फिटनेस के स्तर के साथ-साथ मानसिक ताकत में सुधार पर काम कर रहे हैं.

यह एक गलती थी

विशाखापत्तनम में पहले टी-20 मैच में उनके साथ गलतफहमी के कारण गायकवाड़ के रन आउट के बारे में पूछे जाने पर जायसवाल ने कहा, यह मेरी गलती थी. मैं उनके पास गया और सॉरी कहा. (मार्कस) स्टोइनिस बीच में खड़े थे. मैं पहले सुनिश्चित था लेकिन बाद में नहीं. मैंने गलत फैसला किया. जायसवाल ने कहा कि मैंने स्वीकार किया कि यह एक गलती थी और ऐसा होता है.

आनंद ले रहा हूं

फिनिशर की भूमिका बखूबी निभा रहे रिंकू सिंह ने कहा कि वह अपनी बल्लेबाजी का आनंद ले रहे हैं. रिंकू ने कहा कि मैं इस नंबर पर काफी बल्लेबाजी करता हूं. इसलिए मैं इस स्थिति में शांत रहता हूं. मैं प्रत्येक गेंद को उसकी लाइन और लेंथ के अनुसार खेलना पसंद करता हूं.

दबाव कम हो रहा है

कप्तान सूर्यकुमार यादव ने कहा कि उनके खिलाड़ी जिम्मेदारी ले रहे हैं और इससे उन पर से दबाव कुछ कम हो रहा है. उन्होंने कहा कि लड़के मुझ पर ज्यादा दबाव नहीं डाल रहे, वे जिम्मेदारी ले रहे हैं. मैंने टॉस से पहले उनसे कहा था कि पहले बल्लेबाजी के लिए तैयार रहें.

भारत 2024 टी- 20 विश्व कप खिताब का बड़ा दावेदार: शास्त्री

भाषा। मुंबई

पूर्व मुख्य कोच रवि शास्त्री ने अगले साल होने वाले टी-20 विश्व कप

खिताब के लिए भारत को बड़ा दावेदार करार देते हुए सोमवार को यहां कहा कि चैम्पियन बनने के लिए इस टीम को आखिरी दो नॉकआउट मैचों में विजेता बनना होगा. भारतीय टीम को एकदिवसीय विश्व कप में शानदार अभियान के बाद फाइनल में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शिकस्त का सामना करना पड़ा था. शास्त्री ने यहां एक कार्यक्रम के इतर कहा, '' कुछ भी आसानी से नहीं मिलता. यहां तक कि महान खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर को भी विश्व कप जीतने के लिए छह विश्व कप का इंतजार करना पड़ा. आप विश्व कप (आसानी से) नहीं जीतते, एक विश्व कप जीतने के लिए आपको बहुत मेहनत करनी पड़ती है. उस बड़े दिन (फाइनल) अच्छा प्रदर्शन करना होता है. उन्होंने कहा कि फाइनल में पहुंचने के बाद यह मायने नहीं रखता कि आपने टूर्नामेंट में पहले क्या किया है. उन्होंने कहा कि जब आप शुरुआती बाधा को पार कर लेते हैं तो सिर्फ शीर्ष चार टीम होती हैं और आपको आखिरी दो मैच में अच्छा करना होता है. उन दो मैचों में अगर आपका प्रदर्शन अच्छा रहा तो आप चैम्पियन बनते हैं. ऑस्ट्रेलिया ने ऐसा ही किया, वे अपने शुरुआती दो मैच हार गये थे लेकिन उन्होंने जब अच्छे प्रदर्शन की जरूरत थी तब अच्छा किया.

गुरुद्वारा बंगला साहिब

पवित्र जल ग्रहण करता श्रद्धालु

सोमवार को नई दिल्ली में गुरु नानक जयंती पर श्रद्धालुओं ने गुरुद्वारा बंगला साहिब में मत्था टेका. हर साल कार्तिक मास की पूर्णिमा तिथि के दिन गुरु नानक जयंती मनाई जाती है. -फोटोः पीटीआई

आओ जानें

किस वर्ष कौन बनी मिस यूनिवर्स

वर्ष	विजेता	देश
2023	आर'बोनी गेब्रियल	यूएसए
2021	हरनाज़ कौर संधू	भारत
2020	एंड्रिया मेजा	मेक्सिको
2019	जोजिबिनी टुन्जी	दक्षिण अफ्रीका
2018	कैटरिओना इलिसा ग्रे	फिलीपींस
2017	डेमी-ले नेल-पीटर्स	दक्षिण अफ्रीका
2016	इरिस मितेनाएरे	फ्रांस
2015	पिया वुट्ज़बाक	फिलीपींस
2014	पोलीना वेगा	कोलम्बिया
2013	गैब्रिएला इसलर	वेनेजुएला
2012	ओलिविया कुलपो	यूएसए
2011	लीला लोपेज	अंगोला
2010	जिमेना नावारेती	मेक्सिको
2009	स्टेफानिया फर्नांडिस	वेनेजुएला
2008	डायना मेंडोजा	वेनेजुएला
2007	रियो मोरी	जापान
2006	जुलेका रिवेरा	प्यूर्टो रिको
2005	नैताली ग्लेबोवा	कनाडा
2004	जेनिफर हॉकिंस	ऑस्ट्रेलिया
2003	एमीलिया वेगा	डोमिनिकन गणराज्य

उत्तराखंड हादसा : 41 श्रमिकों को बाहर निकालने के लिए युद्ध स्तर पर कार्य जारी

सुरंग में होगी मैन्यूल ड्रिलिंग

भाषा। उत्तरकाशी

निर्माणाधीन सिलक्यारा-बड़कोट सुरंग में फंसे 41 श्रमिकों को बाहर निकालने के लिए सुरंग के ऊपर से की जा रही लंबवत ड्रिलिंग 31 मीटर तक पहुंच चुकी है. क्षैतिज ड्रिलिंग कर रही ऑगर मशीन के टूटने के बाद वैकल्पिक रास्ता तैयार करने के लिए रविवार को सुरंग के ऊपर से लंबवत ड्रिलिंग शुरू की गयी थी. सिलक्यारा में बचाव कार्यों की देखरेख कर रहे सीमा सड़क संगठन के पूर्व महानिदेशक हरपाल सिंह ने मंगलवार को बताया कि अब तक 31 मीटर लंबवत ड्रिलिंग की जा चुकी है. इसके तहत 1.2 मीटर व्यास के पाइपों को लंबवत तरीके से सुरंग के शीर्ष से नीचे की ओर डाला जाएगा. अधिकारियों ने रविवार को बताया था कि सुरंग में फंसे श्रमिकों तक पहुंचने के लिए कुल 86 मीटर लंबवत ड्रिलिंग की जाएगी और इसमें चार दिन का समय लगेगा.

हम धीरे-धीरे आगे बढ़ेंगे : सिंह ने बताया कि ड्रिलिंग के दौरान मलबे में फंस गए, अमेरिकी ऑगर मशीन के शेष बचे हिस्से भी सोमवार को तड़के बाहर निकाल लिए गए, जिसके बाद श्रमिकों के लिए पहले से बनाए जा रहे रास्ते को पूरा करने के लिए अब 'मैन्यूल ड्रिलिंग' शुरू की जाएगी. उन्होंने बताया कि इसके लिए तैयारियां चल रही हैं. शुक्रवार को दोपहर में जब 25 टन वजनी ऑगर मशीन टूटी, उस समय तक बचावकर्मी मलबे के अंदर 47 मीटर तक भेद चुके थे और श्रमिकों तक पहुंचने के लिए केवल 10-12 मीटर ड्रिल करना ही शेष रह गया था. इस संबंध में सिंह ने कहा कि 800 मीटर व्यास के पाइपों के फ्रेम तैयार कर लिए गए हैं. हम आधा मीटर से लेकर एक मीटर की दूरी लेते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ेंगे. अगर सब कुछ ठीक रहा और कोई अड़चन नहीं आई तो मलबे का 10 मीटर का हिस्सा 24-36 घंटों में ड्रिल किया जा सकता है.

उत्तरकाशी पहुंचे पीएण मोदी के प्रधान सचिव पीके मिश्रा

उत्तरकाशी के सिलक्यारा में चल रहे रेस्क्यू ऑपरेशन का सोलहवां दिन है. केंद्रीय मंत्री वीके सिंह, प्रधानमंत्री मोदी के प्रधान सचिव पीके मिश्रा और उत्तराखंड के मुख्य सचिव एसएस संधू रेस्क्यू ऑपरेशन का जायजा लेने पहुंचे. पीके मिश्रा ने टनल में फंसे मजदूरों से फोन पर बात की और उनका हालचाल जाना. उन्होंने इंटर्नल कॉम्युनिकेशन सिस्टम मजदूरों से अंदर के हालात की जानकारी ली और सभी के स्वास्थ्य को लेकर भी पूछा. उन्होंने मजदूरों को आश्वस्त किया कि जल्द ही उनको सुरंग से बाहर निकाल लिया जाएगा.

मजदूरों से बात करते हुए प्रधानमंत्री मोदी के प्रधान सचिव पीके मिश्रा.

मलबे से बाहर निकाले गए मशीन के सभी हिस्से

सुरंग के सिलक्यारा छोर से 25 टन वजनी अमेरिकी ऑगर मशीन के जरिए चल रही क्षैतिज ड्रिलिंग में ताजा अवरोध शुक्रवार शाम को आया जब उसके ब्लेड मलबे में फंस गए. बचाव कार्यों के लिए उत्तराखंड की ओर से नियुक्त नोडल अधिकारी नीरज खैरवाल ने रविवार शाम सात बजे तक की स्थिति बताते हुए कहा था कि मलबे में ऑगर मशीन का केवल 8.15 मीटर हिस्सा ही निकाला जाना शेष रह गया है. सोमवार तड़के तक मशीन के सभी हिस्से मलबे से बाहर निकाल लिए गए. मलबे में 'मैन्यूल ड्रिलिंग' कर उसमें पाइप डालने के लिए ऑगर मशीन के सभी हिस्सों को पहले बाहर निकालना जरूरी था. यमुनोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग पर बन रही सिलक्यारा सुरंग का एक हिस्सा 12 नवंबर को ढह गया था जिसमें उसमें काम कर रहे 41 श्रमिक फंस गए थे. उन्हें बाहर निकालने के लिए युद्ध स्तर पर कई एजेंसियों द्वारा बचाव अभियान चलाया जा रहा है.

रैट माइनर की टीम जाएगी अंदर

अब रैट माइनर की टीम अंदर जाएगी और मैन्यूल ड्रिलिंग करेगी. थोडी देर बाद सुरंग के अंदर पाइप के सहारे रैट माइनर्स पहुंचेंगे जो फंसे मजदूरों तक रास्ता बनाने की कोशिश करेंगे. सिलक्यारा में रेस्क्यू में जुटे माइक्रो टनलिंग एक्सपर्ट क्रिस कूपर ने बताया कि मैन्यूल ड्रिलंग इस बात पर निर्भर करेगी की अंदर क्या रुकावट आती है और जमीन कैसे रिएक्ट रती है. अब से थोडी देर बाद सुरंग के अंदर रैट माइनर्स पाइप के सहारे घुसेंगे. उन्हें ऐसे आपदा के समय एक्सपर्ट माना जा रहा है.

रेस्क्यू ऑपरेशन

- पाइपों को लंबवत तरीके से सुरंग के नीचे डाला जाएगा
- 86 मीटर लंबवत ड्रिलिंग में चार दिन का समय लगेगा

श्रमिक सुरक्षित, लगातार भेजी जा रही है खाद्य सामाग्री

दूसरी लाइफ लाइन (150 मिमी व्यास) सर्विस का उपयोग करके श्रमिकों के लिए नियमित अंतराल पर सुरंग के अंदर ताजा पका हुआ भोजन और ताजे फल डाले जा रहे हैं. इस लाइफ लाइन में नियमित अंतराल में संतरा, सेब, केला आदि फलों के साथ-साथ औषधियों एवं लवणों की भी पर्याप्त आपूर्ति की जाती रही है. भविष्य के स्टॉक के लिए अतिरिक्त सूखा भोजन भी पहुंचाया जा रहा है. एसडीआरएफ द्वारा विकसित वायर कनेक्टिविटी युक्त संशोधित संचार प्रणाली का उपयोग संचार हेतु नियमित रूप से किया जा रहा है. अंदर मौजूद लोगों ने बताया है कि वे सुरक्षित हैं. वहीं श्रमिकों को 10 दिनों के लिए पर्याप्त भोजन पैकेट सामग्री भंडारण के लिए भेज दी गई है.

संमदर में इजराइली पोत जब्त करने की कोशिश हुई नाकाम

अमेरिका ने इजराइली पोत को बचाया

भाषा। दुबई

यमन के तट के पास रविवार को इजराइल से जुड़े एक टैंकर को जब्त करने के बाद उसे छोड़ने वाले सशस्त्र हमलावरों को अमेरिकी नौसेना ने पकड़ लिया है. अधिकारियों ने यह जानकारी दी.

हूती-नियंत्रित यमन से दागी गई दो बैलिस्टिक मिसाइल अदन की खाड़ी में टैंकर की सहायता कर रहे एक अमेरिकी युद्धपोत के पास गिरीं. यह हमला ऐसे समय में किया गया, जब इजराइल-हमास युद्ध के बीच पोतों पर हमले जारी हैं. पोत का प्रबंधन करने वाली 'जोडियाक मैरिटाइम' कंपनी ने सोमवार को कहा कि फॉस्फोरिक एसिड ले जा रहे 'सेंट्रल पार्क' पोत को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है और उसके चालक दल के सभी 22 सदस्य सुरक्षित हैं. इनमें बुल्गारिया, जॉर्जिया, भारत, फिलीपीन, रूस, तुर्किये और वियतनाम के नागरिक शामिल हैं. लंदन स्थित 'जोडियाक मैरीटाइम' इजराइली अरबपति ईयाल ओफर के जोडियाक समूह का हिस्सा है. यमन की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त सरकार ने हमले के लिए ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों को दोषी ठहराया, लेकिन देश की राजधानी सना पर नियंत्रण रखने वाले विद्रोहियों ने पोत पर मिसाइल हमले की घटनाओं की जिम्मेदारी फिलहाल नहीं ली है. 'जोडियाक मैरिटाइम', अमेरिकी एवं ब्रितानी सेनाओं और निजी खुफिया फर्म एम्ब्रे ने कहा कि हमलावरों ने अदन की खाड़ी में लाइबेरिया के झंडे वाले 'सेंट्रल पार्क' पोत पर कब्जा कर लिया था.

हूती ने पिछले हफ्ते इजरायली बिजनेसमैन के जहाज का अपहरण किया था.

लोगों की न्याय संबंधी जरूरतों को पूरा करना जरूरी: प्रधान न्यायाधीश

नयी दिल्ली । प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा कि न्याय तक पहुंच केवल जन-समर्थक न्यायशास्त्र तैयार करके हासिल नहीं की जा सकती, बल्कि बुनियादी ढांचे में सुधार और कानूनी सहायता सेवाओं को बढ़ाने जैसे अदालत के प्रशासनिक पक्ष में भी सक्रिय प्रगति की आवश्यकता है. राष्ट्रीय कानूनी सेवा प्राधिकरण द्वारा कानूनी सहायता तक पहुंच पर आयोजित पहले क्षेत्रीय सम्मेलन में न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने कहा कि न्यायाधीशों के लिए चुनौती व्यक्तिगत मामले के तथ्यों में न्याय करना नहीं है, बल्कि प्रक्रियाओं को संस्थागत बनाने की भी है.

आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई खत्म नहीं हुई : पुलिस प्रमुख

भाषा। श्रीनगर

जम्मू-कश्मीर के पुलिस महानिदेशक आर. आर. स्वैन ने सोमवार को यहां कहा कि केंद्र शासित प्रदेश में आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई पूरी तरह से खत्म नहीं हुई है और सुरक्षा बलों को भले ही नुकसान पहुंच रहा हो लेकिन हम पीछे नहीं हटेंगे. उन्होंने कहा कि सुरक्षा बल इस क्षति को कम करने का प्रयास कर रहे हैं. जम्मू-कश्मीर के शीर्ष पुलिस अधिकारी ने कहा कि अगर आगे बढ़ने की इस चुनौती में हमें नुकसान उठाना पड़े...तब भी हम पीछे नहीं हटेंगे. स्वैन ने पत्रकारों से कहा कि यह लड़ाई अभी पूरी तरह से खत्म नहीं हुई है और जहां तक हमारी लड़ाई का संबंध है तो यह हकीकत है कि क्षति होती है लेकिन इस नुकसान को झेलते हुए हमें आगे बढ़ना होता है.

खास बातें

- नुकसान झेलते हुए हमें आगे बढ़ते रहना है
- हम आतंकवाद की लड़ाई से पीछे नहीं हट सकते

ब्रीफ खबरें

पाक में आत्मघाती हमला एक की मौत, 21 घायल

पेशावर। पाकिस्तान के अशांत खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में सुरक्षा बलों के काफिले को निशाना बनाकर किए गए आत्मघाती बम विस्फोट में एक व्यक्ति की मौत हो गई और 13 सुरक्षाकर्मियों सहित 21 लोग घायल हो गए. जानकारी के मुताबिक, प्रतिबंधित तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) के हाफिज गुल बहादुर संगठन ने आत्मघाती बम विस्फोट की जिम्मेदारी ली है.

आयरलैंड के लेखक पॉल लिंच ने जीता बुकर पुरस्कार

लंदन। आयरलैंड के लेखक पॉल लिंच को उनके उपन्यास 'प्रॉफेट सॉन्ग' के लिए लंदन में आयोजित एक कार्यक्रम में बुकर पुरस्कार 2023 से सम्मानित किया गया. लिंच ने लंदन में रहने वाली भारतीय मूल की लेखिका चेतना मारू के पहले उपन्यास 'वेस्टर्न लेन' को पछाड़कर यह पुरस्कार अपने नाम किया. लिंच ने 'प्रॉफेट सॉन्ग' में निरंकुशता की चपेट वाले आयरलैंड की तस्वीर पेश की है.

4 से शुरू होगा संसद का शीतकालीन सत्र

नयी दिल्ली। सरकार ने संसद के शीतकालीन सत्र से पहले दो दिसंबर को सर्वदलीय बैठक बुलाई है. शीतकालीन सत्र 4 दिसंबर से शुरू होकर 22 दिसंबर तक चलेगा. संसदीय कार्य मंत्री प्रह्लाद जोशी ने शीतकालीन सत्र को लेकर 2 दिसंबर को सुबह 11 बजे सर्वदलीय बैठक बुलाई है. हालांकि सर्वदलीय बैठक सत्र शुरू होने से एक दिन पहले बुलाई जाती है, लेकिन 3 दिसंबर को विधानसभा चुनावों के वोटों की गिनती होनी है.

अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थ गाजा में संघर्ष-विराम को बढ़ाने के लिए डाल रहे हैं दबाव

हमास के खात्मे के लिए इजराइल प्रतिबद्ध

भाषा। तेल अवीव

अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थ गाजा में संघर्ष-विराम को बढ़ाने के लिए दबाव डाल रहे हैं जो सोमवार को समाप्त हो जाएगा. इस संघर्ष-विराम ने पिछले कुछ दशकों में सबसे घातक इजराइली-फिलिस्तीनी हिंसा को रोक दिया है. इजराइल द्वारा कैद फिलिस्तीनियों की रिहाई के बदले, हमास चरमपंथियों द्वारा बंधक बनाए गए लोगों को छोड़ने के चौथे चरण के लिए दोनों पक्ष तैयार हैं. इजराइल ने कहा है कि वह हर 10 अतिरिक्त बंधकों के लिए संघर्ष-विराम को एक दिन बढ़ाएगा. हमास ने यह भी कहा कि उसे अमेरिका, कतर और मिस्र की मध्यस्थता में हुई कई सप्ताह की परोक्ष वार्ता के बाद गत शुक्रवार को प्रभाव में आए चार दिन के संघर्ष-विराम के बढ़ने की उम्मीद है. लेकिन इजराइल का कहना है कि वह हमास की सैन्य क्षमताओं को कुचलने और गाजा पर उसके 16 साल के शासन को समाप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है. इसका मतलब तबाह हुए उत्तरी गाजा से लेकर दक्षिण तक जमीनी हमले का विस्तार हो सकता है, जहां सैकड़ों हजारों फिलिस्तीनियों ने संयुक्त राष्ट्र के आश्रयगृहों में शरण ली है और जहां संघर्ष-विराम के तहत सहायता वितरण में तेजी के बावजूद गंभीर स्थितियां बनी हुई हैं. अब तक 62 बंधकों को रिहा किया जा चुका है, एक को इजराइली बलों ने मुक्त कराया, वहीं दो गाजा में मृत मिले हैं.

खास बातें

- दक्षिण तक तक जमीनी हमले का हो सकता है विस्तार
- अब तक 62 बंधकों को रिहा किया जा चुका है

रिहा किए गए फिलिस्तीनी कैदी वेस्ट बैंक पहुंचे

रामल्ला। हमास के साथ युद्ध विराम समझौते के तहत इजराइल द्वारा रिहा किए गए 36 से अधिक फलस्तीनी कैदी वेस्ट बैंक पहुंचे, जहां उनका नायक की तरह स्वागत किया गया. मध्य रामल्लाह में सैकड़ों लोगों ने भूरे रंग की कैदी की पोशाक पहने हुए 39 युवाओं का स्वागत किया. भीड़ ने पुरुषों को अपने कंधों पर उठा लिया. कई लोगों ने विजय चिह्न दिखाए. उन्होंने हमास के हरे झंडे पकड़ रखे थे. हमास द्वारा गाजा पट्टी में बंधक बनाकर रखे गए 17 लोगों को छोड़ने के बाद इजराइल में फिलिस्तीनी कैदियों को रिहा किया. युद्ध विराम समझौते के तहत अदला-बदली के दूसरे दौर के तहत इन बंधकों और कैदियों को रिहा किया गया है.

विदेशी पर्यटकों का लहंगा अवतार

ताज महल में विश्व पर्यटन दिवस पर पारंपरिक भारतीय लहंगे में फोटो खिंचवातीं विदेशी पर्यटक. भारतीय परिधान और भारतीय संस्कृति विदेशी पर्यटकों को सबसे ज्यादा आकर्षित करती है. -फोटोः पीटीआई

आरोप

'रायथु बंधु' योजना की किस्त पर रोक लगाने के लिए बीआरएस जिम्मेदार

बीआरएस ने पाप किया, किसान माफ नहीं करेंगे : कांग्रेस

भाषा। नई दिल्ली

कांग्रेस ने सोमवार को आरोप लगाया कि भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) के गैर-जिम्मेदाराना और संकीर्ण दृष्टिकोण के कारण निर्वाचन आयोग ने 'रायथु बंधु' योजना की किस्तों के वितरण की अनुमति देने से इनकार कर दिया. पार्टी के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने यह आरोप भी लगाया कि बीआरएस ने यह एक और 'पाप' किया है जिसे तेलंगाना के किसान कभी माफ नहीं करेंगे.

निर्वाचन आयोग ने सोमवार को 'रायथु बंधु' योजना के तहत रबी फसलों के लिए किसानों को दी जाने वाली वित्तीय सहायता की किस्त बांटने के लिए तेलंगाना सरकार को दी गयी अनुमति वापस ले ली. आयोग ने राज्य के वित्त मंत्री टी. हरीश राव द्वारा इसे लेकर सार्वजनिक घोषणा करने के बाद यह फैसला किया क्योंकि यह आचार संहिता का उल्लंघन है. वेणुगोपाल ने 'एक्स' पर पोस्ट किया कि बीआरएस और हरीश राव के गैर-जिम्मेदाराना और संकीर्ण स्वार्थी दृष्टिकोण के कारण चुनाव आयोग ने रायथु बंधु किस्तों के वितरण की अनुमति देने से इनकार कर दिया है. यह पैसा किसानों का हक है. उन्होंने साल भर कड़ी मेहनत की है.यह पैसा अक्टूबर और जनवरी के बीच किसी भी समय जारी किया जाना चाहिए था.

बोले वेणुगोपाल

- यह पैसा किसानों के हक का था, उन्होंने मेहनत की थी
- बीआरएस गैर-जिम्मेदाराना और संकीर्ण सोच वाला

'रायथु भरोसा' को पूरा करने के लिए कांग्रेस प्रतिबद्ध

केसी वेणुगोपाल ने कांग्रेस के चुनावी वादों का उल्लेख करते हुए कहा कि कांग्रेस तेलंगाना के किसानों को दी गई अपनी गारंटी 'रायथु भरोसा' को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है. किसानों को 15,000 रुपये प्रति एकड़, बटाईदार किसानों को 15,000 रुपये प्रति एकड़ और कृषि मजदूरों के लिए 12,000 रुपये प्रति वर्ष मिलेगा. इतना ही नहीं, हमने सभी किसानों का 2 लाख रुपये तक का कृषि ऋण माफ करने का वादा किया है. वित्त मंत्री राव ने किस्तों का भुगतान जारी करने के बारे में सार्वजनिक घोषणा की थी. उन्होंने कथित तौर पर कहा था, 'किस्त सोमवार को दी जाएगी. किसानों का चाय-नाश्ता खत्म होने से पहले उनके खाते में राशि जमा हो जाएगी .स तेलंगाना में सभी 119 विधानसभा सीटों के लिए 30 नवंबर को मतदान होगा. मतगणना तीन दिसंबर को होगी.

बंदरगाहों के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की जरूरत: मुर्मू

भाषा। पारादीप (ओडिशा)

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सोमवार को कहा कि देश में बंदरगाहों के बुनियादी ढांचे को और मजबूत करने तथा उनकी दक्षता बढ़ाने की जरूरत है.

मुर्मू ने यहां पारादीप बंदरगाह प्राधिकरण द्वारा आयोजित 'बोइता बंदना' (नाव पूजा) समारोह में यह बात कही. 'बोइता बंदना' ओडिशा में मनाया जाने वाला एक वार्षिक उत्सव है, जो राज्य की प्राचीन समुद्री गौरव गाथा की याद दिलाता है, जिसे पहले 'कलिंग' के नाम से जाना जाता था. मुर्मू ने कहा कि सरकार का सागरमाला कार्यक्रम बंदरगाह गतिविधियों को मजबूत करने के लिए एक सराहनीय कदम है. भारत सरकार 'समृद्धि के लिए बंदरगाह' और 'प्रगति के लिए बंदरगाह' के दृष्टिकोण को साकार करने के लिए काम कर रही है. राष्ट्रपति ने कहा कि समुद्री व्यापार देश के व्यापार और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है.

संताल संस्कृति की प्राचीन तीर्थयात्रा की महान परंपरा

एक पवित्र भूगोल में तब्दील हो गयी लुगुबुरु पहाड़ी

लुगुबुरु पहाड़ी पर किसी भी पशु की बलि पर पूरी तरह रोक

डॉ. सोमनाथ आर्य

अब लुगुबुरु की पहाड़ी विशेष धार्मिक महत्व वाले पहचाने गए स्थानों के साथ समग्र रूप से एक पवित्र भूगोल में तब्दील हो गई है. लुगुबुरु घंटाबाड़ी संथाली आदिवासियों की परंपरा और संस्कृति का आगाज स्थल है. संथाली ऐसा मानते हैं कि लुगु बाबा की अगुवाई में लुगुबुरु घंटाबाड़ी में ही उनके संथाली संविधान और रीति-रिवाजों की रचना हुई. इसमें जन्म से लेकर मृत्य तक के अनुष्ठान और मान्यताएं शामिल हैं. लुगुबुरु घंटाबाड़ी संथालियों के लिए हजारों सालों से आस्था का महान केंद्र है. लेकिन इसे आधुनिक और व्यवस्थित आकार मिला झारखंड गठन के एक साल बाद. यहां महासम्मेलन की शुरुआत हुई. संथाली आदिवासी यहां सात देवी-देवता के प्रति आस्था प्रकट करते हैं. ये देव हैं – मरांग बुरु, लुगुबुरु, लुगु आयो, घांटाबाड़ी गो बाबा, कुड़ीकीन बुरु, कपसा बाबा और बीरा गोसाईं. लुगुबुरु के निवास स्थान के पास पहाड़ी की चोटी के आसपास की गुफाओं की पहचान विशेष रूप से चंपागढ़, बडुलीगढ़, कोइदागढ़ जैसे विभिन्न पौराणिक किलों से की जाती है, जैसा कि संथालों की पवित्र कथाओं में वर्णित है. पानी का बारहमासी स्रोत एक पैलियो-चैनल से होकर गुजरता है जिसे अनुष्ठान के अवसरों पर गाए जाने वाले संताल गीतों में सीतेनाला कहा जाता है. इस कारण इस झरने का पानी उनके लिए बहुत पवित्र है.

2001 में लुगुबुरु घंटाबारी धरमगढ़ की स्थापना हुई

2001 में एक आयोजन समिति - 'लुगुबुरु घंटाबारी धरमगढ़'' की स्थापना की और संगठन को सोसायटी अधिनियम के तहत पंजीकृत कराया. आयोजन समिति में सिर्फ संताल ही सदस्य हैं. समिति में अच्छी संख्या में शिक्षित एवं स्थापित संताल हैं. पहले संथाल लोग इस स्थान पर पहाड़ी देवता की पूजा करने के लिए छिटपुट रूप से आते थे और इसकी प्राचीन प्रकृति से परिचित थे. आरंभिक वर्षों में समारोह के दिन केवल हजारों लोग ही आते थे. सत्रह साल (2017) के बाद, लगभग पाँच लाख संताल इकट्ठे हुए और पैदल ही पहाड़ी पर चढ़े. इस पहाड़ी जैसी छोटी जगह में एक रात के लिए खचाखच भीड़ देखी गई. लुगुबुरु में, प्रदर्शनों को मोटे तौर पर दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है - पवित्र और धर्मनिरपेक्ष. पवित्र या अनुष्ठान प्रदर्शन ज्यादातर देवता की पूजा और कुछ शारीरिक प्रथाओं से संबंधित होते हैं. धर्मनिष्ठ संथाल ओडिशा, पश्चिम बंगाल, बिहार, असम के सुदूर स्थानों और नेपाल और बांग्लादेश से भी आते हैं. वे किराए की बस, ट्रक, कार और पैदल आते हैं. वे पहाड़ी पर या पहाड़ी की तलहटी में बने छोटे से तालाब में स्नान करते हैं और शीर्ष पर लुगुबाबा की गैर-मानवरूपी पत्थर की मूर्ति पर डालने के लिए छोटे घड़े में पानी लेते हैं. जो लोग देवता को प्रसाद चढ़ाना चाहते हैं उन्हें उस दिन उपवास रखना होता है. वे मंदिर में अनुष्ठान से तीन दिन पहले तक कोई भी मांसाहारी भोजन नहीं लेंगे. इस तीर्थयात्रा के दौरान वे किसी भी तरह का शारीरिक संबंध नहीं बनाते हैं. वे अपनी तीर्थयात्रा के दौरान हड़िया जैसे किसी भी नशीले पेय का सेवन नहीं करेंगे . तीर्थ स्थल में किसी भी प्रकार का नशीला पेय पदार्थ लेना सख्त वर्जित है. भक्त पूजा से पहले स्नान करने के बाद नए या धुले हुए कपड़े पहनेंगे.

यहां बहने वाला पानी का स्रोत बना रहता है आकर्षण का केंद्र

चिकोटेनाडोइनाटोवाटोवासा, नोड गेनाडोइना, तवदारे किन जनमलेन अनातेनादोइनाटोवातोवासा. जिसका अर्थ है (झरने का पानी, दूध जैसा कैसा है बड़ी बहना, यहां हमारी मां का जन्म हुआ, तो यह दूध की तरह है.) लुगुबूरु पहाड़ पार जाने से पहले चलना शुरू करने या पूजा करने से पहले संथाल तीर्थयात्री इस चैनल में स्नान करते हैं या इसके पानी को अपने सिर पर छूते हैं. शुद्धिकरण शक्ति वाला पानी का स्रोत या जलाशय तीर्थ स्थल में आकर्षण का बिंदु बना हुआ है. क्रुक ने बताया कि भारत के तीर्थस्थलों में यह एक आम बात है. शारीरिक गंदगी और नैतिक अशुद्धता के बीच एक समानता मौजूद है. माना जाता है कि गुफाओं और जल निकायों के अलावा, इस स्थान पर प्रत्येक पत्थर में पवित्र संपत्ति है. देवता की पूजा करने के लिए लुगुबुरु आने वाले भक्त, मंदिर की पत्थर की दीवार की धूल को पॉलीथीन बैग या किसी अन्य कंटेनर में खुरच कर इकट्ठा करते हैं. उनका मानना है कि पत्थर की धूल में औषधीय गुण होते हैं. वास्तव में, लुगुबुरु पहाड़ी अपने आप में औषधीय पौधों से भरपूर है, जिन्हें उनके बारे में जानकारी रखने वाले भक्तों द्वारा एकत्र भी किया जाता है. रास्ते के किनारे या पहाड़ी के किनारे पर तिरछे खड़े बड़े-बड़े पत्थर अक्सर सिन्दूर से पुते हुए देखे जाते हैं और इन पत्थरों पर चढ़ावे की वस्तुएं रखी रहती हैं. देवता के वास्तविक निवास के मध्य रास्ते में, लुगुबुरु की प्रतिकृति की पूजा उन लोगों द्वारा की जाती है जो शीर्ष पर निवास की कठिन यात्रा करने में सक्षम नहीं थे. इस तरह लुगुबुरु का पवित्र भूगोल संथाल आगंतुकों के मन में अच्छी तरह से रच-बस जाता है, जो अपने पौराणिक अतीत को अपने पवित्र आख्यानों और गीतों में जीवंत करते हैं और इसे लुगुबुरु पहाड़ी के भूगोल से जोड़ते हैं.

संथाल इस स्थान के दृश्य भूगोल को अपने पवित्र आख्यान और मौखिक इतिहास (नागम) से जोड़ते हैं. पहाड़ी की चोटी पर जहां लुगुबुरु को वास्तविक चढ़ावा चढ़ाया जाता है, वहां कई गुफाएं हैं. वे प्रत्येक गुफा की पहचान अपने गीतों में वर्णित प्रत्येक प्राचीन किले से करते हैं. ऐसा ही एक किला है चंपागढ़. संताल क्षेत्र में ऐसे बारह किले हैं. इस प्रकार इतिहास के पुनर्निर्माण के माध्यम से उन्होंने भूमि के पवित्र भूगोल का निर्माण किया. इस प्रकार गुफाएँ, पथरीली चट्टानें, झरने और जलधाराएँ प्रतीकात्मक पहचान से ओत-प्रोत हो जाती हैं जिनके साथ संथाल अपने मिथकों को जोड़ते हैं.

घटना एक निश्चित समय और स्थान के माध्यम से संरचित होती है. इसमें गतिविधि, संगठन, एक स्पष्ट शुरुआत और अंत और अलग-अलग भूमिका निभाने वाले व्यक्तियों का एक निर्धारित सेट होता है. मंडली का दिन सोहराबोंगा (स्थानीय कैलेंडर में कार्तिक का महीना) की पूर्णिमा की रात को तय किया जाता है. इसका स्थान भी भौतिक और प्रतीकात्मक दोनों स्तरों पर अलग-अलग है. लुगुबुरु पहाड़ी की भौतिक अभिव्यक्ति वास्तव में लुभावनी है क्योंकि यह घने जंगल से ढंकी हुई अपनी भव्य विशालता के साथ खड़ी है. इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि यह स्थान निकटवर्ती क्षेत्र से अच्छी तरह से अलग है.

लुगुबुरु आज एक दुर्जेय वोट-बैंक बन गया है

यहां व्यक्तिगत भक्त लुगुबाबा और उनकी पत्नी लुगुआयो का प्रतिनिधित्व करने वाले गैर-मानवरूपी पत्थर के मंदिर पर अपना प्रसाद चढ़ाते हैं और पानी डालते हैं. मंदिर में अनुष्ठानों की देखभाल के लिए समिति द्वारा नायके (पुजारी) को नियुक्त किया जाता है. इनके अलावा बड़ी संख्या में स्वयंसेवक वहां मौजूद रहते हैं. दरअसल मूर्तियां एक गुफा के मुहाने पर एक ऊंचे पत्थर के चबूतरे के ऊपर स्थापित हैं. गुफा गहरी है, हालाँकि अब गुफा में प्रवेश की अनुमति नहीं है. इस गुफा का अगला भाग लगभग किसी पुराने घर के खुले बरामदे जैसा दिखता है. दरअसल, मंदिर के सामने की तरफ छत और खंभों के साथ कंक्रीट का काम किया गया है. इस मंदिर के अन्य हिस्से चट्टानी हैं. गुफा आश्रयों से घिरे मंदिर के सामने खुली जगह पर लंबी सर्पीन कतार इंतजार कर रही है. चूंकि मंदिर पहाड़ी की चपटी चोटी पर है, इसलिए ऊपर आसमान खुला रहता है और नीली छतरी की तरह दिखता है. मंदिर के सामने का यह खुला स्थान ऊपर के झरने से तुरंत नीचे उतरते हुए सीतेनाला की ओर हल्की ढाल में ढलता है. श्रद्धालु इस पवित्र नहर के घुटने भर पानी में स्नान भी कर रहे थे या इसके पवित्र जल को छोटे कंटेनर में एकत्र कर रहे थे.पूजा की सामग्री में बेलपत्र , नारियल, घी, शहद और खैनी (तंबाकू) या गांजा शामिल हैं. कभी-कभी, लोग देशी सिगार (चूटा) भी चढ़ाते हैं. ऐसा कहा जाता है कि लुगुबाबा को मुख्य चढ़ावा तम्बाकू है. देवता का प्रबल पुरुषत्व अर्पण की प्रकृति से स्पष्ट होता है. हालांकि, भक्त मंदिर में लाल बॉर्डर वाली सफेद साड़ी भी चढ़ाते हैं. धूप, सिन्दूर, छड़ी और फूल पूजा में उपयोग की जाने वाली सामग्रियों में आवश्यक हैं. मुख्य निवास के बाहर, कुछ चट्टानी आश्रयों पर स्थानीय संताल पुजारियों पूजा पाठ कराते हैं. कुछ भक्त इन स्थानों पर नाइके के माध्यम से व्यक्तिगत चढ़ावा चढ़ाते हैं .

स्थल के चारों ओर ऐसे पत्थर हैं जिन पर सिंदूर के निशान लगे हुए हैं और वे फूल, केला, धूप, नारियल आदि के प्रसाद से ढंके हुए हैं. भक्त उदारतापूर्वक पूजा के प्रतीक के रूप में देवता को पैसे चढ़ाते हैं. मंदिर की यात्रा और चढ़ावा चढ़ाने के उद्देश्य अलग-अलग हैं. पहले की कथा से यह बिल्कुल स्पष्ट है कि लुगुबाबा लुगु पहाड़ियों के संरक्षक देवता थे. उन्हें संथाल के ऊंचे पर्वत देवता, मारंगबुरु से जोड़ा गया है. लुगुबाबा एक समय संथालों के रक्षक देवता थे जो लुगुबुरु के जंगल में शिकार करते थे. पंथ के पुनरुत्थान के बाद, अब उनके पास एक अधिक प्रभावशाली देवता है जो अच्छे भाग्य और अच्छे स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए उनके पास आने वाले लोगों के सामान्य कल्याण पर अपनी सौम्य शक्ति प्रदान करता है. मेरी मुलाकात एक युवा संथाल इंजीनियर से हुई जो ओडिशा के मयूरभंज से संथालों की पालना भूमि देखने आया था. उनके लिए, सच्चा संताल बनने के लिए जड़ों की ओर जाना उनका कर्तव्य था. समिति के सदस्यों ने कहा कि लुगुबुरु ही वह स्थान है जहां संताल संस्कृति की उत्पत्ति हुई थी. इलाके के लोग बीमारी (जार बुखार) से छुटकारा पाने के लिए उनसे प्रार्थना करते थे. आज लुगुबुरु एक दुर्जेय 'वोट-बैंक' हैं, जिसे कोई भी राजनीतिक दल नजरअंदाज नहीं कर सकता.

लुगुबुरु में होती है भव्य सभा

लुगुबुरु में संथालों की वार्षिक भव्य सभा और तीर्थयात्रा सोहराय (कार्तिक- सितंबर-अक्टूबर के बराबर अंग्रेजी) के महीने में पूर्णिमा के दिन आयोजित की जाती है. नियमित वार्षिक बैठक 2000 में शुरू हुई, जब बुजुर्ग संतालों और स्थानीय गांवों के मुखियाओं का एक समूह इस स्थान की महिमा को संरक्षित रखते हैं.

मुद्रक तथा प्रकाशक लगातार इंफोटेनमेंट प्राईवेट लिमिटेड द्वारा लगातार इंफोटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड के पक्ष में, सिमलिया, रिंग रोड, पीएस-रातू, रांची - 835222 से मुद्रित तथा 304-305 समृद्धि स्क्वायर, किशोरगंज चौक, हरमू रोड, रांची- 834001, झारखंड द्वारा प्रकाशित.
संपादक - **सुरजीत सिंह**, स्थानीय संपादक - **संजय सिंह***. फोन नंबर- 0651-2961734 आर.एन.आई. नंबर - **JHAHIN/2023/84487** (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार.)